भाई कचराभाई पुंजाभाईना स्मरणार्थे.

श्रीमान् राजचंद्रजी प्रणीत

बालावबोध-मोक्षमाळा.

(सिंधु बिंदुरूप)

जेणे आत्माने जाण्यो तेणे सर्व जाण्युं.

—श्री निर्ग्रंथ प्रवचन.

संशोधक, मनसुखलाल रवजीभाई महेता.

प्रकाशक, मनसुखलाल रवजीभाई महेता.

झवेरी बजार, मुंबई.

चतुर्थ आवृत्ति. प्रति २०००

संवत १९७१. सन १९१५.

मूल्य ०-८-०.

अमदावादः
आ पुस्तक प्रकाशक रा. मनसुखलाल रवजीभाई महेताने
अर्थे "डायमंड ज्युबिली" प्रिन्टींग प्रेसमां
देवीदास छगनलाल परीखे छाप्युं.

सुगम लखवो के, जे प्रथम भूमिकाना मनुष्योनी पहेलांनी प्रवेशक भूमिकाना मनुष्योने उपयोगी थाय.

एटले के, मोक्षमाळानी श्रेणिना चार पुस्तको थवा योग्य हता. एक प्रवेशक भूमिका माटे, बीजुं आ 'बालावबोध' छे तेज रुपे, त्रीजुं 'विवेचन भाग' रुपे अने चोथुं 'प्रज्ञावबोध भाग' रुपे. पण दुर्भाग्ये श्रीमान् राजचंद्रनो मात्र बत्रीश वर्षनी तरुण वये देहोत्सर्ग थतां तेवुं कांइ पण न थवा पाम्युं.

छतां दिलासानो विषय एटलो छे के, आ 'बालावबोध' खंड दिनप्रतिदिन लोकप्रिय थतोज जाय छे. जेनुं प्रमाण आ चतुर्थ आवृत्तिनुं प्रकाशन छे.

सामान्य वाचकसृष्टिमां आ पुस्तकनो उपयोग थाय छे एटलुंज नहीं, पण घणी ज्ञानशाळाओना व्यवस्थापकोए विद्यार्थीओने तेनुं नियमित शिक्षण आपवानो प्रबंध कर्यो छे.

आ चतुर्थ आवृत्ति अमदावाद निवासी भाई पुंजाभाइ हीराचंदना द्रव्यव्ययथी प्रकट थाय छे. भाई पुंजाभाईना एकना एक पुत्र भाइ कचराभाइ के जेनी मात्र तेर चउद वर्षनी बालवये स्वर्गवास थतां पुत्र स्मरणार्थे तेओए आ आवृत्ति बहार पाडवा द्रव्यव्यय कर्यो छे. संसारी मनुष्यनी सर्व आशाओरुप एकना एक पुत्रना वियोगे पण मनने केवी दिशामां लइ जवुं एनो अभ्यास भाई पुंजाभाईनी मनप्रवृत्तिपरथी आपणे करी शकीए छीए. जैन सूत्रो तेना मूल–टीका अने तेना भाषांतरो साथे प्रकट करवाने माटे तेओए जे योजना करावी छे, अने जेने अंगे जिनागममां विशेष प्रसिद्ध एवुं 'भगवती सूत्र' तैयार थाय छे ते भाई कचराभाइना देहत्याग पछीनी भाई पुंजाभाईनी मनप्रवृत्तिनुं एक प्रमाण छे.

आशा राखवामां आवे छे के, आ चतुर्थ आवृत्ति पण पूर्वनी त्रण आवृत्तिओनी पेठे लोकरुचि तृप्त करशे.

दावीना बील्डींग्स,
झवेरी बजार,–मुंबई.
ता. ५–४–१९१५.

मनसुखलाल रवजीभाई महेता.



શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર.

વર્ષ ૨૩ મું. સંવત્ ૧૯૪૭. ધ્યાનાવસ્થા.

परिचय.

"The more I consider his life and his writings, the more I consider him to have been the best Indian of his times. Indeed I put him much higher than Tolstoy in religious perception. Both Kavi and Tolstoy have lived as they have preached."

—*Mr. M. K. Gandhi.*

"जेम जेम हुं तेओना जीवननो अने तेओना लखाणोनो विशेष विचार करुं छुं, तेम तेम मारी विशेष प्रतीति थाय छे के तेओ एमना समयना सर्वोत्कृष्ट हिंदी हता. खरेखर, हुं तेओने टॉल्स्टॉय करतां धार्मिक स्वानुभव—आत्मानुभवमां विशेष गणुं छुं. कवि अने टॉल्स्टोय बन्नेए जेवा प्रकारनो तेओए उपदेश आप्यो छे ते प्रमाणेनुंज चारित्र पाळ्युं छे."

—मी. एम. के. गांधी.

काउन्ट टॉल्स्टॉय नामना रश्यन फिलसुफनुं नाम जगत्प्रसिद्ध छे. तेओ एक समर्थ राज्यद्वारी होवा छतां धर्म संबंधीना विषयोमां पण एक तत्त्वज्ञानी तरीकेनी कीर्ति संप्राप्त करी शक्या हता, एवी तेओनी धर्मविचारशोधकबुद्धि हती. तेओना विचारो पश्चिम भणीना संस्कारो करतां पूर्वभणीना संस्कारोने विशेष मळता आवे छे. आ समर्थ रश्यन फिलसुफनी सरखामणी कविना विरुद्‌थी प्रख्यात थयेल स्वर्गीय श्रीमान् राजचंद्रनी साथे हालमां करवामां आवी छे. दक्षिण आफ्रिकामां एश्याटिकोनां हितने माटे अनेक संकटो भोगवी आजे सुधरेली गणाती पृथ्वी उपर श्रीयुत मोहनदास करमचंद गांधी, बॅरीस्टर—ॲट—लॉए पोतानुं नाम अमर कर्युं छे. श्रीयुत गांधीने श्रीमान् राजचंद्रनी साथे जाति समागम हतो. श्रीयुत गांधीए दक्षिण आफ्रिकामां आवेल नॅटाल देशना हिंदीओ प्रत्ये एक पत्र लख्यो छे. आ पत्रमां तेओए उपर्युक्त सरखामणी—श्रीमान् राजचंद्रनी अने काउन्ट टॉल्स्टॉयनी करी छे.

जे रशियन तत्त्वज्ञ आखी सुधरेली दुनियामां पोताना ज्ञानभंडोळ माटे कीर्त्ति संप्राप्त करी शक्या छे तेनी सरखामणीमां धार्मिक स्वानुभवमां श्रीमान् राजचंद्र विशेष आगळ वधी जाय छे एम श्रीयुत गांधीनो अभिप्राय प्रत्येके प्रत्येक हिंदीने एक अत्यंत अभिमान उत्पन्न कर्या विना रहे तेम नथी.

श्रीमान् राजचंद्रनुं नाम जैन समाजमां एटलुं बधुं प्रसिद्ध छे के, तेओने माटे विशेष माहिती आपवानी जरुर नथी; छतां तेओना जीवननो संक्षिप्त ख्याल अन्यत्र आप्यो छे. अलाहबादमां नीकळता जाणीता ॲंग्लो इन्डयन पत्र "पायोनीयरे" श्रीमान् राजचंद्रना देहोत्सर्ग समये एक स्थंभ लेख लखी आजे पण हिंदमां केवा पुरुषो उत्पन्न थाय छे ते बताववाना हेतुए ते लेखने "आजना हिंदीओ" (Indians of To-day) नामनुं मथाळुं आप्युं हतुं.

अमेरिकामां जइ जैन विषयक ज्ञाननो प्रचार करवा माटे जाणीता थयेला स्वर्गस्थ वीरचंद राघवजी गांधीए चिकागो शहेरमां एक व्याख्यान आप्युं हतुं. आ व्याख्यानमां तेओए पूर्वेना समयमां जैनमार्गमां केवी असाधारण शक्तिओना पुरुषोनुं उत्पन्न थवुं थतुं हतुं ते बताववा माटे आचार्य भगवान् श्री हेमचंद्राचार्यनुं उदाहरण आप्युं हतुं; अने हालना समयमां पण जैन मार्ग पोताने विषे तेवा प्रकारनी शक्तिओ धरावनारा पुरुषो उत्पन्न करवानो गर्व लई शके छे एम बताववा माटे श्रीमान् राजचंद्रनी असाधारण शक्तिओनुं विवेचन करी बताव्युं हतुं.

स्वर्गस्थ वीरचंद गांधी जेवा बाहोश पुरुषे अमेरिकामां जइ पोताना मार्गने विषे जे पुरुषनी प्रत्यक्षता बताववा गर्व धर्यो हतो, तेमज श्रीयुत मोहनदास गांधी जेवा समर्थ आत्मभोग आपनार विद्वान् राज्यद्वारीए जे पुरुषनुं अनुकरण करवा माटे आफ्रिकामां बेठां हिंदीओने उपदेश आपवामां पोतानुं कर्त्तव्य विचार्युं छे ते पुरुषनां वचनोनो थोडोक संग्रह प्रकट करवानुं मने उचित लाग्युं छे.

आजनी अने ४५ वर्ष उपरनी हिंदनी स्थितिमां आकाश पाताळ जेटलो भेद पडी गयो छे. पीस्ताळीश वर्ष उपर धार्मिक, सामाजीक, अने राजप्रकरणी स्थिति जे दशा भोगवती हती, अने आजे भोगवे छे तेमां सामान्यमां सामान्य अवलोकनकारने न कल्पी शकाय एवो भेद दृष्टिगोचर थाय छे. हिंदनी सर्व सामान्य स्थिति आजथी ४५ वर्ष उपर आ रीते, जे दशा भोगवती हती तेना परिणाममां जैन मार्गनी स्थितिनो विचार, जो बराबर करवामां आवे, तो जणाय के, ते समये जैन मार्गनी स्थितिनी दशा घणीज मंद हती. जे समये आवी स्थिति वर्तती हती ते समये अत्यारे जाहेर रीते स्वीकारायलां असाधारण शक्तिना आ पुरुषनुं जन्मवुं जैन मार्गमां थयुं हतुं.

महान् अंग्रेज लेखक मी० बर्क कहे छे के, दुनिया ५० वर्ष पाछळ छे. आ लेखकनो कहेवानो अभिप्राय एवा प्रकारनो छे के, दुनियाए आजे जे वात वस्तुतः समजवी जोइए, ते पचाश वर्ष पछी समजती थाय छे. श्रीमान् राजचंद्र ज्यारे समाज सन्मुख आव्या त्यारे जैन समाजनी स्थिति अनेक प्रकारना मतमतांतरोमां मशगुल हती. लोकोने एवुं मनाववामां आव्युं हतुं के पोते जे कुळमां जन्म्या होइए ते कुळना संप्रदायना धर्म विचारो गमे तेवा होय परंतु तेने वळगी रहेवामांज कल्याण छे. आ ईलाकानी तरफमां जैनना बे मुख्य गच्छोमां अनक अल्प अल्प बाबतोमां विखवाद चाल्या करतो हतो. संवत् १९४३ नी साल के जे सालनी लगभगना वर्षो "समकित सार" अने "समकित शल्योद्धार" रुपी क्लेशोनां स्थान हतां, त्यारे मात्र अढार वर्षनी वये श्रीमान् राजचंद्र जैन मार्गनी दशानुं नीचे प्रमाणे अवलोकन करी शक्या हताः—

"जैन समुदायमां परस्पर मतभेद बहु पडी गया छे. परस्पर निंदा ग्रंथोथी जंजाळ मांडी बेठा छे, महावीर भगवानना भणीथी उपासक वर्गनुं लक्ष गयुं; मात्र क्रियाभावपर राचता रह्या जेनुं परिणाम

दृष्टिगोचर छे. अंग्रेजोना शोधमां आवेली पृथ्विनी वसति लगभग दोढ अबजनी गणाई छे, तेमां सर्व गच्छनी मळीने जैन प्रजा मात्र वीश लाख (छेल्ला वसतिपत्रक प्रमाणे लगभग १३ लाखनी) लगभग छे ए प्रजा ते श्रमणोपासकनी छे. एमांथी हुं धारुं छुं के, नवतत्त्वने पठनरूपे बे हजार पुरुषो पण मांड जाणता हशे; मनन अने विचारपूर्वक जाण-नारा तो आंगळीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण नहीं हशे; ज्यारे आवी स्थिति तत्त्वज्ञान संबंधी थई गई छे, त्यारेज मतमतांतर वधी पड्या छे. सर्वज्ञ भगवाननुं कहेलुं गुप्त तत्त्व प्रमाद स्थितिमां आवी पड्युं छे. तेने प्रकाशित करवा तथा पूर्वाचार्योनां गुंथेलां महान् शास्त्रो एकत्र करवा, पडेला गच्छनां मतमतांतरने टाळवा तेमज धर्म विद्याने प्रफुल्लित करवानी अवश्य छे एम दर्शावुं छुं. पवित्र स्याद्वा-दमतनुं ढंकाएलुं तत्त्व प्रसिद्धिमां आणवा ज्यां सुधी प्रयोजन नथी त्यांसुधी शासननी पण उन्नति नथी. वाडामां बेसी रहेवा करतां मत-मतांतर तजी एम करवुं उचित छे. हुं इच्छुं छुं के ते कृत्यनी सिद्धि थइ, जैनांतर गच्छ मतभेद टाळो, सत्य वस्तु उपर मनुष्य मंडलनुं लक्ष आवो अने ममत्व जाओ." (मोक्षमाळा)

आ विचारो संवत् १९४३ नी सालमां समाज समक्ष मुक्या हता. आ समय एवो हतो के, ज्यारे समाजनो लक्ष बहुधा मतमतां-तरनां रक्षण करवामां, अने ज्ञानरहित शुष्क क्रियाओमां कल्याण मानी लेवामां आवतुं हतुं. ज्ञान, आत्मज्ञान के तत्त्वज्ञाननो लक्षज लगभग आवरण पामी गयो हतो. ज्यारे श्रीमान् राजचंद्रे समाजने पोतानुं जीवन कर्तव्य आत्मत्व संबंधे शुं छे ते जाहेर कर्युं त्यारे समाजने ते वात उपर कह्युं तेम मी. बर्कना कहेवा प्रमाणे न समजाइ पण, हवे ते वात उपर लक्ष्य जतो जाय छे, ए जोइ संतोष थाय छे.

जैनने विषे मुख्य बे शाखाओ छे. श्वेतांबर अने दिगंबर. लगभग बे हजार वर्ष थयां तेओनी बच्चे अभिप्राय भेद एवो थइ गयो हतो के

केम जाण तेओ एकबीजाना प्रतिपक्षीओ होय. श्रीमान् राजचंद्रे आ बे शाखाओना संबंधमां आ प्रमाणे अभिप्राय धारण कर्यो हतो.

"शरीरादि बळ घटवाथी सर्व मनुष्योथी मात्र दिगम्बर वृत्तिए वर्त्तीने चारित्रनो निवाह न थइ शके तेथी ज्ञानीए उपदेशेली मर्यादा-पूर्वक श्वेताम्बरपणेथी वर्तमानकाळ जेवा काळमां चारित्रनो निर्वाह करवाने अर्थे प्रवृत्ति छे, ते निषेध करवा योग्य नथी. तेमज वस्त्रनो आग्रह करी दिगम्बर वृत्तिनो एकांते निषेध करी वस्त्रमूर्च्छादि कारणोथी चारित्रमां शिथिलपणुं पण कर्त्तव्य नथी. दिगम्बरपणुं अने श्वेताम्बरपणुं देश, काळ, अधिकारीयोगे उपकारना हेतु छे, एटले ज्यां ज्ञानीए जेम उपदेश्युं तेम प्रवर्त्ततां आत्मार्थेज छे."

श्रीमान् राजचंद्रना आ विचारो संवत् १९५३ मां लखाया छे; अने त्यारबादज जैनना सर्व समुदायोमां मतमतांतर टाळी अविभक्त जैन स्थिति लाववानो घणो परिश्रम चाली रह्यो छे.

ज्ञानीओने स्वसंप्रदाय मोह होइ शके ज नहीं. प्रमोद होइ शके पण मोह न होइ शके. तेओने वस्तुस्थिति प्राप्त करवानोज सतत लक्ष्य रह्या करे छे; तेओना चित्तमां जैन, वेदांत, सांख्य के गमे ते दर्शननो पक्षपात होतोज नथी, तेओनी स्थिरता मात्र तत्त्वनी यथार्थता प्रत्येज होय छे. एकवीश वर्षनी वये एटले संवत् १९४५ मां तेओना नीचेना लखाएला विचारो तेओनो धर्मआदर्श बतावे छे.

"मोक्षना मार्ग बे नथी, जे जे पुरुषो मोक्षरुप परमशांतिने भूतकाळे पाम्या छे, ते ते सघळा सत्पुरुषो एकज मार्गेथी पाम्या छे, वर्तमानकाळे पण तेथीज पामे छे; अने भविष्यकाळे पण तेथीज पामशे. ते मार्गमां मतभेद नथी, असरळता नथी, उन्मत्तता नथी, भेदाभेद नथी, मान्यामान्य नथी, ते सरळ मार्ग छे, ते समाधि मार्ग छे, तथा ते स्थिर मार्ग छे; अने स्वाभाविक शांति स्वरुपे छे. सर्व

काळे मार्गनुं होवापणुं छे. मार्गना मर्मने पाम्या विना कोई भूतकाळे मोक्ष पाम्या नथी, वर्तमानकाळे पामता नथी, अने भविष्यकाळे पामशे नहीं. श्री जिने सहस्र क्रियाओ अने सहस्र उपदेशो ए एकज मार्ग आपवा माटे कह्यां छे, अने ते मार्गने अर्थे ते क्रियाओ अने उपदेशो ग्रहण थाय तो ते सफळ छे, अने ए मार्गने भूली जइ ते क्रियाओ अने ते उपदेशो ग्रहण थाय तो ते सौ निष्फळ छे. श्री महावीर जे वाटेथी तर्या ते वाटेथी श्रीकृष्ण तरशे; जे वाटेथी श्रीकृष्ण तरशे ते वाटेथी श्री महावीर तर्या छे. ए वात गमे त्यां बेठां, गमे ते काळे, गमे ते श्रेणिमां, गमे ते योगमां ज्यारे पमाशे त्यारे पवित्र, शाश्वत सत्पदना अनंत अतींद्रिय सुखनो अनुभव थशे, ते वाट सर्व स्थळे संभवित छे. योग्य सामग्री नहीं मेळववाथी भव्य पण ए मार्ग पामतां अटक्या छे, तथा अटकशे, अने अटक्या हता. कोइ पण धर्म संबंधी मतभेद छोडी दई एकाग्र भावथी सम्यक् योगे एज मार्ग संशोधन करवानो छे. विशेष शुं कहेवुं? ते मार्ग आत्मामां रह्यो छे. आत्मत्व प्राप्य पुरुष—निर्ग्रंथ आत्मा—ज्यारे योग्यता गणी जे आत्मत्व अर्पशे—उदय आपशे त्यारेज ते प्राप्त थशे, त्यारेज तेनी वाट मळशे, त्यारेज ते मतभेदादिक जशे. मतभेद राखी कोई मोक्ष पाम्या नथी, विचारीने जेणे मतभेदने टाळ्यो ते अंतर्वृत्तिने पामी क्रमेकरी शाश्वत मोक्षने पाम्या छे, पामे छे अने पामशे."

प्रोफेसर ब. क. ठाकोरे श्रीमान्‌ना विचारोनुं अवलोकन कर्या-बाद एवा अभिप्रायनो निश्चय कर्यो हतो के श्रीमान् राजचंद्र एक जन्मविरागी (Born ascetic) हता. तेओनी बालचर्याथीज तेओने विषे वैराग्य हतो. तेओनी आत्मज्ञाननी कई भूमिए स्थिरता हशे तेनो विचार करवाने माटे तेओश्रीना विचारोना मनननी नियमा जरुर छे.

आज जडवादमूलक विज्ञानना जमानामां आत्मवादनी प्रतीति लोकोमांथी ओछी थती जाय छे. जेओ श्रीमान् राजचंद्रने,—तेओनी

दशाने—तेओना विचारोने अन तेओना ज्ञान, दर्शन, चारित्रने अवलोकशे तेमने आत्मानी प्रतीति सहेजे थया विना नहींज रहे.

श्रीमान् राजचंद्रना विचारोनो संग्रह ७०० पृष्ठना एक भव्य ग्रंथना आकारे प्रजा सन्मुख क्यारनो रजु थयो छे. आ संग्रहमां तेओना तत्त्वज्ञान संबंधी निर्णयो, तेओनी आभ्यंतर दशानां अवलोकनो, अने अनेक परमार्थ संबंधीना विषयो छे. तत्त्वज्ञान के सिद्धांतज्ञान जेवा कठण विषयोना अधिकारीओ माटे ते ग्रंथनुं अवलोकन योग्य छे.

'मोक्षमाळा'मां श्रीमान् राजचंद्रे सत्तर अढार वर्षनी वये पोतानो 'सामान्य मनोरथ' पोते आ प्रमाणे प्रकल्प्यो छेः—

मोहिनिभाव विचार अधीन थई,
ना निरखुं नयने परनारी;
पत्थर तूल्य गणुं परवैभव,
निर्मळ तात्त्विक लोभ समारी!
द्वादशव्रत अने दीनता धरि,
सात्त्विक थाउं स्वरुप विचारी;
ए मुज नेम सदा शुभ क्षेमक,
नित्य अखंड रहो भव हारी.
ते त्रिशला तनये मन चिंतवि,
ज्ञान, विवेक, विचार वधारुं;
नित्य विशोध करी नव तत्त्वनो,
उत्तम बोध अनेक उच्चारुं.
संशय बीज उगे नहीं अंदर,
जे जिननां कथनो अवधारुं;
राज्य सदा मुज एज मनोरथ,
धार, थश अपवर्ग, उतारुं.

—सामान्य मनोरथ.

तेओश्रीना विचारोने माटे अभिप्राय आपवानी क्यां जरुर छे? जे पुरुषे आत्मानुभवथी विचारो बताव्या छे ते पुरुषना विचारोना संबंधमां बाह्यदृष्टि शो अभिप्राय आपे? एना संबंधमां विशेष नही कहेतां श्रीयुत मोहनदास गांधीना शब्दोमांज ते विचारोथी केटली शांति मळे छे ते जणाववुं बस थइ पडशे; "तेओनां आ पुस्तको में वांच्यां छे, अने तेणे मने सर्वोत्कृष्ट शांति आपी छे."

आ बृहत् ग्रंथमांना विचारो एक जैन महानुभावना होवा छतां ते कोई पण दर्शनना अनुयायी वांचतां विचारतां एमज अनुभवी शकशे के, ते विचारो कोई पण संप्रदायना ममत्वने माटे नथी परंतु आत्मत्वप्राप्ति माटेना छे. तेथी आत्मकल्याणज थई शकवानुं. ज्ञानीनी दृष्टि सदैव एकज वस्तुनी प्राप्ति माटे होय छे; अने ते वस्तु ते आत्मस्वरुप छे. श्रीमान् राजचंद्रनो आभ्यन्तर लक्ष—परम मनोरथ—शुं हवो ते सुज्ञ वाचक तेओना नीचे आपेल काव्यपरथी जोई शकशे.

गुणस्थानक क्रमारोह.

१. अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे?
क्यारे थईशुं बाह्यांतर निर्ग्रंथ जो?
सर्व संबंधनुं बंधन तिक्ष्ण छेदीने,
विचरशुं कव महत्पुरुषने पंथजो? अपूर्व०

२. सर्व भावथी औदासीन्यवृत्ति करीः
मात्र देह ते संयमहेतु, होय जो;
अन्य कारणे अन्य कशुं कल्पे नही,
देहे पण किंचित् मूर्छा नव जोय जो. अपूर्व०

३. दर्शनमोह व्यतीत थई उपज्यो बोध जे,
देह भिन्न केवल चैतन्यनुं ज्ञान जो;
तेथी प्रक्षीण चारितमोह विलोकिये,
वर्ते एवुं शुद्धस्वरुपनुं ध्यान जो. अपूर्व०

४. आत्मस्थिरता त्रण संक्षिप्त योगनी,
मुख्यपणे तो वर्ते देहपर्यंत जो;
घोर परिषह के उपसर्गभये करी,
आवी शके नहीं ते स्थिरतानो अंत जो. अपूर्व०

५. संयमना हेतुथी योगप्रवर्त्तना,
स्वरुपलक्षे जिनआज्ञा आधीन जो;
ते पण क्षण क्षण घटती जाती स्थितिमां,
अंते थाये निजस्वरुपमां लीन जो. अपूर्व०

६. पंच विषयमां रागद्वेष विरहितता,
पंच प्रमादे न मळे मननो क्षोभ जो;
द्रव्य, क्षेत्र ने काळ भाव प्रतिबंधवण,
विचरवुं उदयाधीन पण वीतलोभ जो. अपूर्व०

७. क्रोधप्रत्ये तो वर्ते क्रोधस्वभावता,
मान प्रत्ये तो दीनपणानुं मान जो;
माया प्रत्ये माया साक्षी भावनी,
लोभप्रत्ये नहीं लोभ समान जो. अपूर्व०

८. बहु उपसर्गकर्त्ता प्रत्ये पण क्रोध नहीं,
वंदे चक्रि तथापि न मळे मान जो;
देह जाय पण माया थाय न रोममां,
लोभ नहीं छो प्रबळ सिद्धि निदान जो. अपूर्व०

९. नग्नभाव, मुंडभाव सहअस्नानता,
अदंतधोवन आदि परम प्रसिद्ध जो;
केश, रोम, नख, के अंगे शृंगार नहीं,
द्रव्यभाव सयंममय निर्ग्रंथ सिद्ध जो. अपूर्व०

१०. शत्रु मित्रप्रत्ये वर्ते समदर्शिता,
मान अमाने वर्ते तेज स्वभाव जो,

जीवित, के मरणे नहीं न्यूनाधिकता,
भव मोक्षे पण शुद्ध वर्ते समभाव जो. अपूर्व०

११. एकाकी विचरतो वळी स्मशानमां,
वळी पर्वतमां वाघ सिंह संयोग जो;
अडोल आसन, ने मनमां नहीं क्षोभता,
परममित्रनो जाणे पाम्या योग जो. अपूर्व०

१२. घोर तपश्चर्यामां पण मनने ताप नहीं,
सरस अन्ने नहीं मनने प्रसन्नभाव जो;
रजकण के रिद्धि वैमानिक देवनी,
सर्वे मान्या पुद्गल एक स्वभाव जो. अपूर्व०

१३. एम पराजय करीने चारितमोहनो,
आवुं त्यां ज्यां करण अपूर्व भाव जो;
श्रेणी क्षपकतणी करीने आरूढता,
अनन्य चिंतन अतिशय शुद्ध स्वभाव जो. अपूर्व०

१४. मोह स्वयंभूरमण समुद्र तरी करी,
स्थिति त्यां ज्यां क्षीणमोह गुणस्थान जो;
अंत समय त्यां पूर्ण स्वरुप वितराग थई,
प्रगटावुं निज केवलज्ञाननिधान जो. अपूर्व०

१५. चार कर्म घनघाती ते व्यवच्छेद ज्यां,
भवना बीजतणो आत्यंतिक नाश जो;
सर्वभाव ज्ञाता दृष्टा सह शुद्धता,
कृतकृत्य प्रभु वीर्य अनंत प्रकाश जो. अपूर्व०

१६. वेदनियादि चार कर्म वर्ते जहां,
बळी सींदरीवत् आकृति मात्र जो;
ते देहायुष आधीन जेनी स्थिति छे,
आयुष पूर्णे, मटिये दैहिकपात्र जो. अपूर्व०

१७. मन, वचन, काया ने कर्मनी वर्गणा,
छूटे जहां सकळ पुद्‌गल संबंध जो;
एवुं अयोगी गुण स्थानक त्यां वर्ततुं,
महाभाग्य सुखदायक पूर्ण अबंध जो. अपूर्व०

१८. एक परमाणु मात्रनी मळे न स्पर्शता,
पूर्ण कलंकरहित अडोलस्वरूप जो;
शुद्ध निरंजन चैतन्यमूर्त्ति अनन्यमय,
अगुरुलघु, अमूर्त्त सहजपदरूप जो. अपूर्व०

१९. पूर्व प्रयोगादि कारणना योगथी,
उर्ध्वगमन सिद्धालय प्राप्त सुस्थित जो;
सादि अनंत अनंत समाधिसुखमां,
अनंत दर्शन, ज्ञान, अनंत सहित जो. अपूर्व०

२०. जे पद श्री सर्वज्ञे दीठुं ज्ञानमां,
कही शक्या नहीं पण ते श्री भगवान जो;
तेह स्वरुपने अन्य वाणी ते शुं कहे !
अनुभवगोचर मात्र रह्युं ते ज्ञान जो. अपूर्व०

२१. एह परमपदप्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजावगर ने हाल मनोरथरुप जो;
तोपण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो,
प्रभुआज्ञाए थाशुं तेज स्वरुप जो. अपूर्व०

श्रीमान् राजचंद्रनुं जीवन आध्यात्मिक होई तेओनुं आलेखन शी रीते करवुं ? तेओनी दशा तेओनाज शब्दोमां कहेवी योग्य थइ पडशेः—

धन्य रे दिवस आ अहो,
जागी रे शांति अपूर्व रे;
दश वर्षे रे धारा उल्लसी,
मट्यो उदय कर्मनो गर्व रे. धन्य०
ओगणीसें ने एकत्रीसें,
आव्यो अपूर्व अनुसाररे;

ओगणीसें ने बेताळीसें,
अद्भुत वैराग्य धार रे. धन्य०
ओगणीसें ने सुडतालीसें,
समकित शुद्ध प्रकाश्युं रे;
श्रुत अनुभव वधती दशा,
निज स्वरुप अवभास्युं रे. धन्य०
त्यां आव्यो रे उदय कारमो,
परिग्रह कार्य प्रपंच रे;
जेम जेम ते हडसेलीए,
तेम वधे न घटे रंच रे. धन्य०
वधतुं एमज चालियुं,
हवे दीसे क्षीण कांइ रे;
क्रमे करीने ते जशे,
एम भासे मन मांहि रे. धन्य०
यथा हेतु जे चित्तनो,
सत्य धर्मनो उद्धार रे;
थशे अवश्य आ देहथी,
एम थयो निरधार रे. धन्य०
आवी अपूर्व वृत्ति अहो,
थशे अप्रमत्त योग रे;
केवळ लगभग भूमिका,
स्पर्शिने देह वियोग रे. धन्य०
अवश्य कर्मनो भोग छें,
भोगववो अवशेष रे;
तेथी देह एकज धारीने,
जाशुं स्वरुप स्वदेश रे. धन्य०

INDIANS OF TO-DAY.

(From The Pioneer, 22nd May 1901.)

We have already quoted a short account from the Bombay paper of Shrimad Rajchandra Ravjibhai, (popularly known as Kavi) a rising Jain reformer, who died on April 9th, 1901, in Rajkot, Kathiawar at the premature age of 33. Shrimad had the reputation of being the only *Shatavadhani* poet of India, when he was only nineteen. *Avadhana* means attention. *Shatavadhana* means attention to a hundred things at a time. A poet is styled *Shatavadhani*, when he stores up a hundred things in his memory,–be they verses in different languages whose words are recited to him at random, or some games such as chess, cards, &c., or any other things, and reproduces them in their proper order from memory. During the performance the strokes of a bell are counted, and arithmetical problems are solved by the poet. This feat of memory power, coupled with poetic gifts,–for the *Shatavadhani* poet, has also to compose poetry *extempore*,–can be realised better by sight than description.

Shrimad Rajchandra was a living psychological instance of how far memory can be developed. He was considered by his admirers to be one of the greatest moral teachers of our time and country, and the enlightened portion of the Jain community regarded him as its youngest great philosopher in this *Pancham Kal.* He was born in Vavanya, Kathiawar, in 1867, of *Vanika* parentage. As a boy at school he showed extraordinary powers of memory. He finished within two years the vernacular course of his studies, which generally requires six years to complete. His teachers regarded him as a prodigy of intellect and memory. At a very early as he showed a predilection for poetry. At the age of nine, he wrote small *Ramayana* and *Mahabharata* in Padya (poetry). At the age of twelve, he wrote three hundred

stanzas on a clock in three days. This shows that Shrimad was a born poet He also began to contribute to several monthly magazines, and newspapers, and wrote an essay on the importance of female education. When he was thirteen, he went to Rajkot to study English. At the age of fourteen or fifteen, he went to Morvi, and performed an *Ashtavadhana* (in which eight things are attended to at a time) feat before a circle of friends. He then increased the *Avadhanas* from eight to twelve, and gave a public performance of the same. He gradually increased his powers of memory to such an extent that from twelve *Avadhanas* he began to perform sixteen, and from sixteen fifty-two and lastly, one hundred, and thus at the age of nineteen, he became a *Shatavadhani* poet. He went to Bombay and gave a public performance of his *Shatavadhans*, in the Framji Kavasji Institute and other places. For these wonderful feats of memory he was awarded a gold medal by the Bombay public, and was given the name of *Sakshat Saraswati* (સાક્ષાત્ સરસ્વતી.) Mr. Malabari, the well-known social reformer, after witnessing the performance wrote in his paper, the *Indian Spectator*, a very admirable article calling Shrimad, "a prodigy of intellect and memory." Shortly after this, at the instance of the late Sir Charles Sargent, the then Chief Justice of the High Court of Bombay, Dr. Peterson, Mr. Yajnik, and such other well-known citizens, arrangements were made for a big public meeting to witness Shrimad's *Shatavadhana*. The public and the Press expressed their high appreciation and admiration of the young prodigy. Sir Charles advised him to visit Europe and exhibit his powers there, but he could not do so, as he thought he could not live in Europe as a pure Jain ought to live.

After such public recognition, a sudden change seemed to come over him. At the age of twenty, he completely disappeared from the public gaze. He determined to use his powers and abilities for the instruction and enlightment of

his community and the people at large. From his every early age he was a voracious reader. He studied the six schools of religions (ષડ્દર્શન) and other systems of Oriental and Western philosophy. Strange though it might seem it was a fact that a book was required to be read only once in order to be digested, and without any regular study of Sanskrit and Prakrit, he could accurately understand works in those languages and explain them to others, as only learned scholars could be expected to do. Shrimad now began to inculcate his taste for knowledge in others and soon attracted a large number of disciples, whom he guided to the proper study of the Jain philosophy. He found that the *Acharyas* (religious teachers) of the time held narrow and secatrian views, and did not appreciate the change of times. Again those who renounced the world were generally lacking in some of good things of the world, and had some reason or other to be dissatisfied with their lot in the world. Such men could not impress their congregations by their example. He believed that if a man of wealth, and social position renounced the world, he could work real good by his example; convinced of his sincerity and disinterestedness, the people would more readily follow his guidance and profit by his preaching. Holding such views, he had believed that he had not sufficiently qualified himself to appear before the public as an ascetic and a spiritual guide, and he continued steadily a man of the world, though his inclinations were all the other way.

When he was twenty-one, he took to business and in a very short time gained the credit of being a capable jeweller. The cares of a flourishing business, however, did not keep him from his favourite study of religion and philosophy. In the midst of his busy life he was quietly extending his studies and was always found surrounded by his books. Again, for some months of the year, he would leave Bombay with instructions to the members of the firm not to correspond with him unless he wrote to them. He used to retire into the

forests of Gujerat and there pass days and weeks in meditation and *yoga*. He always tried to conceal his identity and whereabouts, and, in spite of that, he was often found out followed by a large number of people, eager to listen to his preaching and advice.

After ten years of business life, he felt that he had accomplished the object with which he had entered business. He expressed his desire to sever his connection with it. Knowledge, possession of wealth, social position, the enjoyment of family happiness (for Shrimad had parents, one married brother, four married sisters, a wife, two sons and two daughters, all living), he was preparing to renounce the world and lead the life of an ascetic. In the meantime, in his 32nd year, his health gave way. He was treated by a number of competent medical men. And once there was a change for the better. A relapse, however, followed, and after an illness of more than a year, in spite of competent medical treatment and good nursing by devoted disciples, he quietly passed away on the 9th ultimo, (April, 1901) at Rajkot, Kathiawad. During his long and painful illness he never uttered a sigh or a groan. He was cheerful while all others around him were despondent.

Besides scattered poems he has written several works. His *Moksha Mala* has already been published. This work is the keynote of Jainism. This, he had written at the age of seventeen. Among his unpublished works there are *Atman-Siddhi-Upaya* and *Panchastikaya*, and several essays on the *Atman* or soul. The corner-stone of the Jain religion and philosophy is the theory of Karma, in which he strongly believed. He thought of writing a convincing treatise on this theory, and a series of works on the principles taught by the Great Mahavira, but unfortunately he was prevented from doing so by his long illness. He had also solved several difficult problems of religion. After careful study of the Jain and the Buddhist literature, he had come to the conclusion

that both Mahavira and Buddha were different personages, their principles were quite different and the belief of European scholars, that Jainism was the offspring of Buddhism was not well founded. He said, that in the Jain manuscripts, of two thousand years old, it was clearly stated that the Great Mahavira and the Great Buddha were hard religious competitors. Shrimad had also maintained that the two chief sects of Jainism,–the Digamber and the Swetambara–were the outcome of irregular condition of the country.

The above short sketch of his life is sufficient to show that, Shrimand Rajchandra was in every way a remarkable man. His mental powers were extraordinary. At the same time the moral elevation of his character was equally striking. His regard for truth, his adherance to the strictest moral principles in business, his determination to do what he believed to be right, in spite of all opposition, and his lofty ideal of duty, inspired and elevated those who came in contact with him. His exterior was not imposing, but he had a serenity and gravity of his own. On account of his vast and accurate knowledge of religions and philosophy, his wonderful powers of exposition and his lucid delivery, his discourses were listened with the utmost attention. His self-control under irritating circumastances was so complete, his persuasive powers so great, and his presence so inspiring, that those who came to discuss with him in a defiant and combative frame of mind, returned quite humiliated and full of admiration.

Shrimad Rajchandra deplored the present condition of India, and was always solicitous for its amelioration. His views on the social and political questions of that day were liberal. He said there ought not to be any thing like caste-distinction amongst the Jains, as those who were Jains were all ordered to lead similar life. Among all the agencies for reform, he assigned the highest place to the religious reformer, working with the purest of motives and without ostentation.

He found fault with the religious teachers of the present day because, they preached sectarianism, did not realise the change of the times, and often forgot their real sphere in the desire to proclaim themselves as *avatars* of God, and arrogated to themselves powers which they did not possess. In his later years, it was clear that he was preparing to fulfil his life's mission in that capacity. But unfortunately death intervened and the mission remained unfulfilled. Shrimad had, however, succeeded in creating a new spirit among the Jains in the Bombay Presidency. It is generally believed that had he lived long, he would have revolutionised the whole system of the present Jain religion, and would have taught the people what the Great Mahavira had actually taught. He wanted to do away with the numerous sects of the Jain religion in order to establish one common religion, founded by Mahavira. That such an useful life should have been cut short at this premature age was a distinct loss to the country.

His admirers have already collected about Rs. 11,000 to perpetuate his memory. A movement is still going on to increase the fund. It is expected that an institution to collect old manuscripts and to publish the work of the Jain religion which remain unpublished, in several *Bhandaras*, will be started, bearing his honoured name. It is hoped that some one of his numerous disciples may give the public a comprehensive account of his life and work.

आजना हिंदीओ.

[अलाहबादना 'पायोनीयर' (२२, मे, १९०१) पत्र उपरथी.]

अमे मुंबईना वर्त्तमानपत्रोमांथी श्रीमद् राजचंद्र रवजीभाई (प्रसिद्धिमां 'कवि' तरीके ज्ञात थयेला) अने उगता जैनसुधारक के जे काठियावाडमां आवेल राजकोटमां ३३ वर्षनी अकाल उमरे १९०१ ना एप्रिलनी नवमीए गत थया तेनुं टुंक वर्णन क्यारनुं टांकेल छे. ज्यारे १९ वर्षना हता त्यारे हिंदीना शतावधानी कवि तेओ एकज छे एवुं मान श्रीमद्ने मळ्युं हतुं. अवधान एटले लक्ष. शतावधान एटले एकी वखते सो वस्तुपर ध्यान आपवुं ते. एक कवि ज्यारे पोतानी स्मरणशक्तिमां एक सो बाबतोनो संग्रह करी राखे छे त्यारे ते शतावधानी कहेवाय छे. आ बाबतोमां जुदी जुदी भाषाओनी कविताओ के जेमांना शब्दो आडाअवळा क्रममां गमे तेम कहेवामां आवे छे, अथवा शेतरंज, पानां आदि केटलीक रमतो अने बीजी केटलीक बाबतोनो समावेश थाय छे. आ अवधानक्रियामां घंट वगाडवामां आवे छे तेना टकोरा गणतां गणतां गणितना दाखलाओ करी आपे छे. कवित्वनी बक्षीस साथेनी—कारण के शतावधानी कविने पूछेली कविता तात्कालिक अने शिघ्र रीते करवी पडे छे—स्मरणशक्तिनुं आवी रीते व्यक्तत्व वर्णन करतां दृष्टिए जोयाथीज तेनो खरो ख्याल आवी शके छे.

श्रीमद् राजचंद्र, स्मरणशक्तिनो केटलो बधो विकास करी शकाय छे तेना अध्यात्मशास्त्रदृष्टया प्रत्यक्ष उदाहरणरुप हता. तेमना स्तुतिकारो तेओ आपणा समय अने देशना महत्तम नीतिशास्त्रना उपदेशकोमांना एक हता एम गणता; अने जैनसमुदायना सुशिक्षित पुरुषो तेओने आ पंचमकालना एक उछरता महान् फिलसुफ तरीके लेखता. तेमनो जन्म काठियावाडना ववाणिया गाममां वणिकज्ञातिमां १८६७ मां थयो हतो. नानपणमां ज्यारे तेओ शाळामां जता त्यारे तेओए

अद्‌भुत स्मरणशक्ति दर्शावी हती. गुजराती भाषामांनो अभ्यासक्रम के जे पूरो करवाने छ वर्ष लागतां हतां ते तेमणे बे वर्षनी अंदर पूरो कर्यो. तेमना शिक्षको तेमने बुद्धि अने स्मरणशक्ति विषये असाधारण लेखता. घणीज नानी उमरथीज तेमने कविता प्रत्ये अनुराग हतो. नव वर्षनी वयमां तेमणे पद्यमां नाना रामायण अने महाभारत लख्यां हतां. बार वर्षनी वयमां त्रण दिवसमां घटिकायंत्रपर त्रणसो वृत्त लख्या हता. आ दर्शावे छे के श्रीमद् आजन्मसिद्ध कवि हता. तेमणे केटलाक मासिक अने जाहेर वर्त्तमानपत्रोमां लखाण लखवा मांड्यां हतां, अने स्त्रीकेळवणीनी उपयोगिता उपर एक निबंध लख्यो हतो. तेर वर्षनी उमरे तेओ इंग्लिश भाषानो अभ्यास करवा राजकोट गया. १४ के १५ वर्षनी उमरे तेओए मोरबी जइ मित्रमंडळ पासे अष्टावधान (एकी वखते आठ बाबतोमां चित्त राखवानी क्रिया) कर्यां. पछी आठमांथी बार अवधान करवानी शक्ति वधारी अने पछी ते बार अवधानो प्रजा समक्ष कर्यां. तेमणे धीमे धीमे पोतानी स्मरणशक्ति एटला बधा प्रमाणमां वधारी के बारमांथी सोळ अवधान कर्यां, सोळमांथी बावन अवधान कर्यां अने अंते सो अवधान कर्यां, अने आवी रीते ओगणीस वर्षनी उमरे तेओ शतावधानी कवि थया. तेओए मुंबई जइ पोतानी शतावधान करवानी शक्ति फरामजी कावसजी इन्स्टिटयुट अने अन्य स्थळोए प्रजा सन्मुख करी बतावी. आ आश्चर्यभूत स्मरणशक्तिनी क्रियाओथी तेमने प्रजाए सुवर्णचंद्रक (चांद) आप्यो अने 'साक्षात् सरस्वति'नुं बिरद आपवामां आव्युं. प्रसिद्ध सुधारक मि. मलबारीए उपरोक्त शतावधानक्रिया जोई पोताना पत्र नामे 'इन्डिअन स्पेकटेटर'मां ते विषये घणोज स्तुतिप्रदर्शक लेख लख्यो अने तेमां श्रीमद्‌ने "बुद्धि अने स्मरणशक्ति अद्‌भुत रीते धरावनार" (a prodigy of intellect and memory) कह्या. आ पछी थोडाक वखतमां मुंबईनी हाईकोर्टना मुख्य न्यायमूर्त्ति सर चार्ल्स

सारजन्ट, डॉक्टर पीटर्सन, मि. याज्ञिक अने अन्य प्रतिष्ठित पुरुषोनी प्रेरणाथी श्रीमद्ना शतावधान जोवाने माटे एक महान् लोकसभा बोलाववाने व्यवस्था करवामां आवी. आ असाधारण शक्तिवाळा युवकनी स्तुति अने कदर लोकोए अने पत्रवाळाओए* उत्तम रीते प्रदर्शित करी. सर चार्ल्से तेमने युरोपमां जई त्यां पोतानी शक्तिओ दर्शाववाने भलामण करी पण तेओ तेम करी शक्या नहि. कारण के तेमणे विचार्युं के, युरोपमां पोते जैनधर्मानुसार रही शके नहि.

आवी रीते समग्र प्रजामां ख्याति थया पछी तेमना पर एकाएक नवुं परिवर्तन आव्युं होय तेम जणायुं. वीस वर्षनी वये प्रजानी दृष्टिमांथी

* जूदा जूदा वर्त्तमानपत्रोए श्रीमद् राजचंद्रना संबंधमां लखेल लेखोमांथी अहीं ता. ४, डिसेम्बर, १८८६ (संवत् १९४३ ना मागशर शुद ८, शनि) ना अंकमां 'मुंबई समाचार' पत्रे लखेलो एक अग्रलेख (Leading article) मूकीए छीए:—

अद्भुत स्मरणशक्ति तथा कविताशक्ति धरावनार एक जवान हिंदुनी अत्रे पधरामणी, अने तेना तरफथी थता शतावधानना प्रयोग.

मोरबीथी कविश्री रायचंद्रजी रवजीभाई नामनो मात्र ओगणीश वरसनी वयनो एक हिंदु गृहस्थ अत्रे आवी स्मरणशक्ति तथा कविताशक्तिनां जे अद्भुत कृत्यो करी देखाडे छे तेनाथी वांचनाराओने अमे वाकेफ करता जईए छीए. एवी महान् शक्तिना पुरुषो एकथी वधारे आवी गया छे, अने खुद मुंबईमां शीघ्र कवि पंडित गट्टुलालजी तेवी शक्ति धरावनार तरीके जाणीता छे; पण हमणा आवेलो सदरहुं पुरुष तेओ करतां चढती शक्तिनो कहेवाय छे; एटले बीजाओ ज्यारे अष्टावधानना एटले एकवेळा आठ प्रकारना प्रयोगो करी बतावे छे त्यारे आने शतावधानी एटले एकसो प्रयोगो करी देखाडनारो समजवामां आवे छे. तेमनामां रहेली शक्तिनी मोटी खुबी ए छे के, तेओ एकी वेळा अनेक बाबत पोताना मनमां याद राखी तथा रमी शके छे; अने ते बाबत जेम सहेली तेम कविता, गणीत अने भाषाना सरखी अघरी पण होय छे. गमे एवा कठण छंदमां तेओ बोल बोलतामां कविता रचे छे; गमे एवी अजाणी अने पारकी भाषामां कहेला उलट पालट शब्दोना वाक्योने सरखां गोठवी आपे छे; अने ते सघळुं एक बीजानी साथे वचे वचे करे छे.

पूर्ण रीते तेओ अदृश्य थया. पोतानी शक्ति अने बुद्धिबळनो उपयोग पोताना समुदायवर्गमां अने विस्तारथी समग्र लोकने शिक्षा अने ज्ञान-बोध आपवामां करवा माटे तेमणे निश्चय कर्यो. तेओ घणी नानी उमरथी अतिशय परिमाणमां वांचनार हता. तेमणे षड्दर्शननी आलोचना करी; अने तेनी साथे पूर्व तेमज पश्चिमनी फिलसुफीनां दर्शनो जोयां. जो के आश्चर्यकारक लागशे, परंतु आतो वास्तविक सत्य छे के तेमने पुस्तकने पूर्ण रीते ग्रहण करवाने फक्त एकज वखत वांचवानी जरुर

ए शक्तिओ खरेज अद्‌भुत अने असाधारण छे; अने ते केम खीले छे तथा कामे लागे छे तेनी तपास करी तेनो लाभ लेवानी तजवीज करवी जोईए छे. आटलुं तो खरुं छे के, एवी शक्ति कुदरतनी एक बक्षीश मात्र छे, अने ते कोईज भाग्यशाळी गृहस्थने अर्पण थयेली होय छे; पण ते खीली के वधी शके के नहीं अने माणस जातना कारोबार तथा वहेवारमां आवी शके के नहीं ते नक्की करवानी जरुर छे. केटलीक तरफथी एवुं मानवामां आवे छे के, ते तेवा उपयोगमां आवी शके नहीं; अने जो लेवा मांगे, तो तेनुं बळ ओछुं थतुं जाय. आमां केटली सचाई छे ते पण शोधी काढवुं जोईए. जो ए शक्ति एवा उपयोगमां आवी शके नहीं तो पछी ते मात्र जोवानी अने नवाईनीज थई पडे. पण आपणे एकदम तेम मानीशुं नहीं. माणस जातमां ईश्वरे मेलेली दरेक शक्तिओ खीलवीने वधारी शकाय छे, तेम उपली अद्‌भुत शक्तिओना संबंधमां पण थवुं जोईए; अने जो तेम होय तो पछी आवा चमत्कारिक पुरुषोने उत्तेजन आपी तेमनी शक्ति खीलववा अने तेने लोकोपयोगी काममां आणवानी कोशेष करवाथी आपणे पछात पडवुं जोईतुं नथी. एवा पुरुषो जो युरोप के अमेरिकामां होय तो तेओ मोटां मान अने दोलते पोषाय; तथा प्रजा अने सरकार तेमने उत्तेजन आपी आगळ वधार्या वगर रहे नहीं. अत्रे पण तेमज थवुं जोइए छे; अने तेम थशे तोज एवा नामीचा पुरुषोनो आपणामां वधारो थशे. आ वात पण तपासवा जोग छे के, एवा पुरुषो अत्यार सुधी हिंदु कोममांथीज मळी आवे छे. मोहमेदन, पारसी वगेरे कोममांथी तेओ मळी आवतां नथी एनुं कारण शुं? शुं एवा पुरुषो चोकस जातमांज जन्म पामे छे अथवा वंशपरंपरा उतरे छे ए सर्वे बाबतोनी तपास करतां अगत्यना खुलासा मळशे, अने तेथी एवा पुरुषो उत्पन्न थवानो कांई नियम जणावा जोडे तेमनी वृद्धिथी प्रजाने फायदो थशे.

रहेती अने संस्कृत अने प्राकृतना नियमित अभ्यास वगर तेओ ते भाषामांना पुस्तको म्होटा पंडितोनी पेठे यथार्थ रीते समजी शकता अने बीजाने समजावी शकता.

तेओए जोयुं के धर्मगुरुओ वर्तमानकाळमां सांप्रदायिक दृष्टिथी संकुचित—टुंक मर्यादावाळा—विचारो धरावे छे अने काळना परिवर्तन अनुसार केवी रीते वर्तन करवुं जोइए ते समजता नथी. विशेष जेओ आ संसारनो त्याग करी त्यागवृत्त स्वीकारे छे तेओमां केटलाक सांसारिक संपत्तिओना अभावे तथा संसारथी एक या बीजा कारणथी थयेला असंतोषने परिणामे तेम करे छे. आवा पुरुषो पोताना चारित्र्यनी असर तेओना समुदाय प्रत्ये पाडी शकता नथी. श्रीमद्नी एवी मानी-नता हती के धनवान अने सांसारिक सारी स्थितिवाळो पुरुष संसारनो त्याग करे तो पोताना चारित्र्यथी संगीन हित करी शके. जनसमाज तेना शुद्ध हृदय अने निःस्वार्थना सद्गुणनी खात्री थवाथी तेना कहेवा प्रमाणे दोरावामां घणीज तत्पर रहे अने तेना उपदेशथी लाभ मेळवती थाय. आवा विचार श्रीमद्ना हता अने तेनी साथे जनसमाज आगळ एक साधु अने धार्मिक नायक तरीके रजु थवा योग्य स्थितिमां मूकाया नथी एम तेओ मानता हता; अने तेथीज गृहस्थदशाएज जीवन गाळवानुं चालु राख्युं हतुं. ज्यारे तेना आंतरिक विचारो संसारप्रत्ये तद्दन उदासीन वर्त्तता हता.

ज्यारे श्रीमद् २१ वर्षना हता, त्यारे तेमणे धंधामां प्रयाण कर्युं; अने घणा टुंक वखतमां एक बाहोश झवेरी तरीकेनी नामना मेळवी. वधता जता व्यापारनी उपाधिओमां पण धर्म अने तत्त्वज्ञानना पोताना प्रिय अभ्यासमां तेओए खलेल आववा दीधी नहि. पोताना उद्योगरत जीवनमां चूपकीदीथी ज्ञानवृद्धि करता हता. तेमज हमेशां पुस्तकोमां गुंथायेला रहेता हता. वळी, वर्षमां केटलाक महिनाओ तो पोते मुंबई छोडी चाल्या जता अने पोतानी पेढीए कही जता के ज्यांसुधी पोते

लखे नहि त्यां सुधी कोईए पोतानी साथे पत्रव्यवहार पण चलाववो नहि. गुजरातना वनोमां तेओ एकांत वास गाळता अने त्यां रही चिंत्वन अने योगमां दहाडा अने अठवाडीआओ व्यतीत करता. तेओ रखेने पोते ओळखाइ जाय अथवा पोताना स्थळनी खबर पडी जाय तेवी धास्तीथी घणा गुप्त रहेवानो हमेश प्रयास करता, छतां तेओ वारंवार ओळखाइ जता अने लोकोनी म्होटी संख्या तेमनां उपदेश अने शिक्षा वचनो श्रवण करवानी जिज्ञासापूर्वक तेमनी पाछळ आवती.

व्यापार कर्याने दश वर्ष थया पछी तेमने लाग्युं के जे हेतुथी व्यापार–धंधामां प्रयाण कर्युं हतुं ते हेतु तेओए पूर्ण कर्यो हतो. तेथी व्यापारनी साथेनो पोतानो संबंध निवृत्तवानी इच्छा तेमणे जणावी. ज्ञान, धनसंपत्ति, सांसारिक पदवी, कौटुंबिक सुख (कारण के तेमने हयात मातापिता, एक परिणीत बंधु, चार परिणीत व्हेनो, स्त्री, बे पुत्र अने बे पुत्रीओ हती) प्राप्त करी संसारनो त्याग करी साधु–मुनिनुं जीवन गाळवानी तेमणे तैयारी करी. एटलामां ३२ मा वर्षनी वये तेमनी शारीरिक प्रकृति नबळी पडी. अनेक कुशळ डाक्टरोनी सार-वार नीचे राखवामां आव्या अने एक वखत तो तेमनी प्रकृति सुधरी जवानी आशा रखाइ परंतु व्याधिए फरीवार देखाव दीधो अने काबेल्यतवाळी सारवार अने तेमना भक्तशिष्योनी मावजत छतां एक वर्ष करतां वधारे वखत बीछानावश रहीने काठियावाडना राजकोट शहेरमां, गया मासनी नवमी तारीखे (१९०१ ना एप्रिल मासमां) तेओ शांतिथी कालशरण थया. तेमनी लांबी अने तीव्र मांदगी दर-म्यान तेमणे कदी पण निःश्वास अथवा आर्त्तता दाखवी नहोती. ज्यारे तेमना बीछानानी आसपासना बीजा बधाओ दीलगीर थता त्यारे पण पोते आनंदसमेत रहेता.

छूटी छवायी कविता शिवाय तेमणे केटलांक पुस्तको लख्यां छे.[१]

---

१ श्रीमद् राजचंद्रना लखेला जे जे लेखो मळी आव्या तेनो संग्रह करी 'परमश्रुतप्रभावक मंडळे' रॉयल चार पेजी ७०० पानानो भव्य ग्रंथ बहार पाड्यो छे.

तेमनी मोक्षमाळा क्यारनी प्रसिद्धि पामी गइ छे. आ ग्रंथ जैनधर्मनी कुंची समान छे. आ तेमणे सत्तरवर्षनी वये रच्यो हतो. तेमना अप्रसिद्ध ग्रंथोमां आत्मसिद्धिशास्त्र[1] तथा पंचास्तिकाय अने आत्माना विषयपर केटलाक निबंधो छे. जैनधर्म तथा तेना तत्वज्ञाननो मुख्य सिद्धांत कर्मवाद छे. कर्मवादमां तेमने अखंड श्रद्धा हती. तेमणे आ कर्मवादपर प्रमाणो साथे एक पुस्तक लखवानो अने भगवान् महावीरे प्रकाशेला सिद्धांतोपर ग्रंथमाळा लखवानो विचार हतो, परंतु दुर्भाग्ये तेम तेमनाथी लांबी मांदगीने सबबे थइ शक्युं नहि. वळी तेमणे धर्मना केटलाक कठिन सिद्धांतो प्रतिपादित कर्या हता. जैन अने बौद्ध साहित्यनुं संभाळपूर्वक निरीक्षण कर्या पछी तेओ एवा निर्णयपर आव्या हता के महावीर अने बुद्ध बंने भिन्न महान् पुरुषो हता, तेओना सिद्धांतो तद्दन जुदा हता अने जैनधर्म ए बौद्धधर्मनी शाखा छे एवी युरोपीय पंडितोनी जे मानीनता हती ते बराबर प्रमाण सहित नथी. तेओ कहेता के जैनोना बे हजार वर्षना प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकोमां स्पष्ट रीते जणाय छे के महान् महावीर अने महान् बुद्ध ए धार्मिक प्रतिस्पर्धिओ हता. श्रीमद् आ पण निश्चित रीते प्रतिपादित करता के जैननी बे मुख्य शाखा नामे दिगंबर अने श्वेतांबर देशनी अनियमित स्थितिने लइने जन्म पामेली छे.

श्रीमद् राजचंद्र दरेक रीते लाक्षणिक चिन्हथी अंकित पुरुष हता ए दर्शाववाने तेमनी जींदगीनी उपर दर्शावेली लघु रेखा पूरती छे. तेमनी मानसिक शक्तिओ अद्भूत रीते चमत्कृतिवाळी हती, तेमज तेमना चारित्र्यनी नैतिक उन्नति चकित करावनार हती. सत्यप्रत्ये तेमनो आदर, व्यापारमां अत्यंत चीवटथी नैतिक तत्वोने वळगी रहेवानुं वर्त्तन, गमे तेटली विरुद्धता छतां जे खरुं तेओ मानता ते करवानी तेमनी निश्चय वृत्ति, अने तेमनो कर्तव्य संबंधे उच्च आदर्श,

---

[1] आ लखायां पश्चात् आ ग्रंथनी चार आवृत्तिओ प्रसिद्ध थइ चूकी छे.

जेओ तेमना सहवासमां आवता तेमनामां प्रेरणा करी तेमने उन्नतिनी श्रेणिपर चडावता. तेमनी बाह्यकृति डीमाकवाळी न हती, परंतु आंतरिक शांति अने गांभीर्य तो तेमनांज हतां. तेमनुं धर्मो तथा तत्वज्ञान संबंधी विशाळ अने यथास्थित ज्ञान, तेमनी समजाववानी अद्‌भूत शक्ति, अने उपदेश करवानी तेमनी दीव्य पद्धत्ति होवाथी तेमना उपदेशो पूर्ण लक्षपूर्वक सांभळवामां आवता हता. उश्केरनार संजोगो होय त्यारे पण तेमनो आत्मसंयम एटलो बधो पूर्ण हतो, तेमनी मध्यस्थ रीते समजाववानी शक्ति एटली बधी महान् हती, अने तेमनी हाजरी एटली बधी प्रेरणात्मक हती के जेओ तेमनी साथे वादविवाद करी तेमनी उपर जय मेळववानी बुद्धिए आवता तेओ तद्दन तेओथी वश थइने तेमनी आदरपूर्वक स्तुति करता जता हता.

हिंदनी वर्तमान दशापर श्रीमद् राजचंद्रने खेद थतो अने ते दूर करवाने हमेशां इच्छा धरावता हता. वर्तमान सामाजिक अने राजकीय प्रश्नोपरना तेमना विचारो उदार हता. तेओ कहेता के जैनोमां ज्ञातिभेद जेवुं कंइ पण होवुं जोइए नहि कारण के जेटला जैनो छे तेमने एकज प्रकारनुं जीवन—वर्तन राखवानुं होय छे. बधा सुधारकोमां जे सुधारक पवित्रतम आशयथी, अने दांभिक वृत्ति वगर सुधारानुं कार्य कर्या जाय छे तेमने श्रीमद उच्चतम पंक्ति आपता. वर्तमानकाळना धर्मगुरुओनो दोष ए कारणथी काढता हता के तेओ स्वसंप्रदायना मोहथी आग्रही उपदेश करी काळना फेरफारनुं लक्ष राखता नथी. पोताने प्रभुना अवतार तरीके कहेवडाववानी इच्छाथी पोतानुं खरुं कर्तव्य वारंवार भूली जाय छे अने जे शक्ति पोतानामां न होय छतां तेनो दावो करवानो गर्व राखे छे. तेना पाछलां वर्षोमां ए तो स्पष्ट जणातुं हतुं के श्रीमद् पोताना जीवननो संदेश धर्मगुरु तरीके आपवानी तैयारी करता हता. परंतु दुर्भाग्ये मरणे वचमां पडी ते संदेश पूर्ण थतां अटकाव्यो छे, छतां मुंबइ इलाकामां जैनोमां एक

नवीन जीवन उपजाववामां श्रीमद् विजय पाम्या छे. साधारण रीते एवुं मनाय छे के जो तेओ वधु वखत जीव्या हत तो हालना जैनधर्मनी संपूर्ण दर्शननी क्रांति करी हत अने महान् महावीरे जे वास्तविक उपदेश आप्यो छे ते उपदेश लोकोने शिखाव्यो हत. जैन धर्मना अनेक गच्छभेदो काढी नांखी महावीरे स्थापेलो एक सामान्य धर्म स्थापवानो तेओनो विचार हतो. आवी उपयोगी जींदगी अपक्व वये उपयोगमां आवती बंध पडी तेथी देशने चोक्खो गेरलाभ थयो छे.

तेमनुं नाम चिरंजीव राखवाने तेमना स्तुति पाठकोए आशरे रु. ११००० क्यारना संगृहीत कर्या छे. ते फंडने वधारवानी हिलचाल हजु पण चाली रही छे. अने एवी आशा रखाय छे के जूनां हस्तलिखित पुस्तकोने एकत्र करी जैनधर्मविषयक पुस्तको के जे केटलाक भंडारोमां अप्रगट दशामां पड्या छे तेने प्रगट करनारी संस्था तेमना मानवंता नाम साथे स्थापवामां आवशे. * आशा रहे छे के तेमना अनुयायीओमांना कोई श्रीमद्‌ना जीवनवृत्तांत अने कार्यनो सर्वगामी अने समजी शकाय तेवो अहेवाल प्रजासमक्ष रजु करशे.

---

* परमश्रुतप्रभावकमंडले जैन धर्मना बे मुख्य संप्रदाय—श्वेताम्बर अने दिगम्बरना प्राचीन शास्त्रो श्रीमद् राजचंद्रनुं नाम जोडी "राजचंद्र जैन शास्त्रमाला" ना नामथी प्रकट करवानुं शरु कर्युं छे, अने ते योजनानुसार नीचे प्रमाणे ग्रंथो मूळ तथा हिंदी अनुवादसहित बहार पण पडी चूक्यां छेः— १ सप्तभंगीत रंगिणी. २ तत्त्वार्थाधिगम सूत्र. ३ पुरुषार्थसिद्धि उपाय. ४ पंचास्तिकाय. ५ ज्ञानार्णव. ६ स्याद्वादमंजरी. ७ बृहतद्रव्य संग्रह. ८ द्रव्यानुयोगतर्कणा. ९ गोमट्टसार. १० प्रवचनसार. ११ परमात्मप्रकाश.

શિક્ષણ પદ્ધતિ અને મુખમુદ્રા.

આ એક સ્યાદ્વાદતત્ત્વબોધવૃક્ષનું બીજ છે. આ ગ્રંથ તત્ત્વ પામવાની જિજ્ઞાસા ઉત્પન્ન કરી શકે એવું એમાં કંઈ અંશે પણ દૈવત રહ્યું છે. એ સમભાવથી કહું છું. પાઠક અને વાંચકવર્ગને મુખ્ય ભલામણ એ છે કે, શિક્ષાપાઠ પાઠે કરવા કરતાં જેમ બને તેમ મનન કરવા. તેનાં તાત્પર્યો અનુભવવાં. જેમની સમજણમાં ન આવતાં હોય તેમણે જ્ઞાતા શિક્ષક કે મુનિઓથી સમજવાં, અને એ જોગવાઇ ન હોય તો પાંચ સાત વખત તે પાઠો વાંચી જવા. એક પાઠ વાંચી ગયા પછી અર્ધઘડી તેપર વિચાર કરી અંતઃકરણને પૂછવું કે શું તાત્પર્ય મળ્યું ? તે તાત્પર્યમાંથી હેય, જ્ઞેય અને ઉપાદેય શું છે? એમ તે જોવું. એમ કરવાથી આખો ગ્રંથ સમજી શકાશે, હૃદય કોમળ થશે, વિચારશક્તિ ખીલશે, અને જૈનતત્ત્વપર રુડી શ્રદ્ધા થશે. આ ગ્રંથ કંઈ પઠન કરવારુપ નથી, પણ મનન કરવારુપ છે. અર્થરુપ કેળવણી એમાં યોજી છે. તે યોજના 'બાલાવબોધ'રુપ છે. 'વિવેચન' અને 'પ્રજ્ઞાવબોધ' ભાગ ભિન્ન છે. આ એમાંનો એક કકડો છે, છતાં સામાન્ય તત્ત્વરુપ છે. સ્વભાષા સંબંધી જેને સારું જ્ઞાન છે અને નવતત્ત્વ તેમજ સામાન્ય પ્રકરણ ગ્રંથો જે સમજી શકે છે તેઓને આ ગ્રંથ વિશેષ બોધદાયક થશે. આટલી તો અવશ્ય ભલામણ છે કે, નાના બાળકોને આ શિક્ષાપાઠોનું તાત્પર્ય સમજણરુપે સવિધિ આપવું. જ્ઞાનશાળાઓના વિદ્યાર્થીઓને શિક્ષાપાઠ મુખપાઠે કરાવવાને વારંવાર સમજાવવા. જે જે ગ્રંથોની એ માટે સહાય લેવી ઘટે તે લેવી. એક બેવાર પુસ્તક પૂર્ણ શીખી રહ્યા પછી અવળેથી ચલાવવું. આ પુસ્તક ભણી હું ધારું છું કે, સુજ્ઞ વર્ગ કટાક્ષ દૃષ્ટિથી નહીં જોશે, બહુ ઉંડા ઉતરતાં આ 'મોક્ષમાળા' મોક્ષનાં કારણરુપ થઇ પડશે. માધ્યસ્થતાથી એમાં તત્ત્વજ્ઞાન અને શીલ બોધવાનો ઉદ્દેશ છે. આ પુસ્તક પ્રસિદ્ધ કરવાનો મુખ્ય હેતુ ઉછરતા બાલયુવાનો આવી રીતે વિદ્યા પામી આત્મસિદ્ધિથી ભ્રષ્ટ થાય છે તે ભાવના અટકાવવાનો પણ છે.—શ્રીમાન્ રાજચંદ્ર.

—બાલાવબોધ મોક્ષમાલા, પ્રથમમાલા.

अनुक्रमणिका.



ॐ

मोक्षमाळा.

पुस्तक बीजुं.

शिक्षापाठ १ वांचनारने भलामण.

वांचनार ! आ पुस्तक आजे तमारा हस्तकमळमां आवे छे, तेने लक्ष पूर्वक वांचजो, तेमां कहेला विषयोने विवेकथी विचारजो, अने परमार्थने हृदयमां धारण करजो. एम करशो तो तमे नीति, विवेक, ध्यान, ज्ञान, सद्गुण अने आत्मशांति पामी शकशो.

तमे जाणता हशो के केटलांक अज्ञान मनुष्यो नहीं वांचवा योग्य पुस्तको वांचीने अमूल्य वखत वृथा खोइ दे छे, जेथी तेओ अवळे रस्ते चडी जाय छे, आ लोकमां अपकीर्त्ति पामे छे, अने परलोकमां नीच गतिए जाय छे.

भाषाज्ञाननां पुस्तकोनी पेठे आ पुस्तक पठन करवानुं नथी, पण मनन करवानुं छे. तेथी आ भव अने परभव बन्नेमां तमारुं हित थशे. भगवाननां कहेलां वचनोनो एमां उपदेश कर्यो छे.

तमे आ पुस्तकनो विनय अने विवेकथी उपयोग करजो. विनय अने विवेक ए धर्मना मूळ हेतुओ छे.

तमने बीजी एक आ पण भलामण छे के जेओने वांचतां आवडतुं न होय अने तेओनी इच्छा होय तो आ पुस्तक अनुक्रमे तेमने वांची संभळाववुं.

तमने आ पुस्तकमांथी जे कंइ न समजाय ते सुविचक्षण पुरुष पासेथी समजी लेवुं योग्य छे.

तमारा आत्मानुं आथी हित थाय; तमने ज्ञान, शांति अने आनंद मळे; तमे परोपकारी, दयाळु, क्षमावान, विवेकी अने बुद्धिशाळी थाओ; एवी शुभ याचना अर्हंत भगवान पासे करी आ पाठ पूर्ण करुं छउं.

शिक्षापाठ २ सर्वमान्यधर्म.

चोपाइ.

धर्मतत्व जो पूछयुं मने, तो संभळावुं स्नेहे तने;
जे सिद्धांत सकळनो सार, सर्व मान्य सहुने हितकार. १

भाख्युं भाषणमां भगवान, धर्म न बीजो दया समान;
अभयदान साथे संतोष, द्यो प्राणीने, दळवा दोष. २

सत्य शीळने सघळां दान, दया होइने रह्यां प्रमाण;
दया नहीं तो ए नहि एक, विना सूर्य कीरण नहि देख. ३

पुष्पपांखडी ज्यां दूभाय, जिनवरनी त्यां नहि आज्ञाय;
सर्व जीवनुं ईच्छो सुख, महावीरनी शिक्षा मुख्य. ४

सर्व दर्शने ए उपदेश, ए एकांते-नहीं विशेष;
सर्व प्रकारे जिननो बोध, दया दया निर्मळ अविरोध! ५

ए भवतारक सुंदर राह, धरिये तरिये करि उत्साह;
धर्म सकळनुं ए शुभ मूळ, ए वण धर्म सदा प्रतिकूळ. ६

तत्त्वरूपथी ए ओळखे, ते जन प्होचे शाश्वत सुखे;
शांतिनाथ भगवान प्रसिद्ध, राज्यचंद्र करुणाए सिद्ध. ७

शिक्षापाठ ३ कर्मना चमत्कार.

हुं तमने केटलीक सामान्य विचित्रताओ कही जाउं छउं; ए उपर विचार करशो तो तमने परभवनी श्रद्धा द्रढ थशे.

एक जीव सुंदर पलंगे पुष्पशय्यामां शयन करे छे, एकने फाटेल गोदडी पण मळती नथी; एक भात भातनां भोजनोथी तृप्त रहे छे, एकने काळी जारना पण सांशा पडे छे; एक अगणित लक्ष्मीनो उपभोग ले छे, एक फुटी बदाम माटे थइने घेर घेर भाटके छे; एक मधुरां वचनथी मनुष्यनां मन हरे छे, एक अवाचक जेवो थइने रहे छे, एक सुंदर वस्त्रालंकारथी विभूषित थइ फरे छे, एकने खरा शियाळामां फाटेलुं कपडुं पण ओढवाने मळतुं नथी. एक रोगी छे, एक प्रबळ छे. एक बुद्धिशाळी छे, एक जडभरत छे. एक मनोहर नयनवाळो छे, एक अंध छे. एक लूलो के पांगळो छे, एकना पग ने हाथ रमणीय छे. एक कीर्तिमान छे, एक अपयश भोगवे छे. एक लाखो अनुचरोपर हुकम चलावे छे, अने तेटलानाज ठुंबा सहन एक करे छे. एकने जोइने आनंद उपजे छे, एकने जोतां वमन थाय छे. एक संपूर्ण इंद्रियोवाळो छे, अने एक अपूर्ण ईंद्रियोवाळो छे. एकने दीन दुनियानुं लेश भान नथी, एकनां दुःखनो किनारो पण नथी.

एक गर्भाधानमां आवतांज मरण पामे छे, एक जन्म्यो के तरत मरण पामे छे, एक मुवेलो अवतरे छे अने एक सो वर्षनो वृद्ध थईने मरे छे.

कोइनां मुख, भाषा अने स्थिति सरखां नथी. मूर्ख राज्यगादीपर खमा खमाथी वधावाय छे, समर्थ विद्वानो धक्का खाय छे!

आम आखा जगतनी विचित्रता भिन्न भिन्न प्रकारे तमे जुओ

छो; ए उपरथी तमने कंई विचार आवे छे? में कह्युं छे ते उपरथी तमने विचार आवतो होय तो कहो के ते शा वडे थाय छे?

पोतानां बांधेलां शुभाशुभ कर्मवडे. कर्म वडे आखो संसार भमवो पडे छे. परभव नहि माननार पोते ए विचारो शावडे करे छे?–ते उपर यथार्थ विचार करे तो ते पण आ सिद्धांत मान्य राखे.

शिक्षापाठ ४ मानवदेह.

आगळ कह्युं छे ते प्रमाणे विद्वानो मानवदेहने बीजा सघळा देह करतां उत्तम कहे छे; ते उत्तम कहेवानां केटलांक कारणो अत्रे कहीशुं.

आ संसार बहु दुःखथी भरेलो छे. एमांथी ज्ञानीयो तरीने पार पामवा प्रयोजन करे छे. मोक्षने साधी तेओ अनंत सुखमां विराजमान थाय छे. ए मोक्ष बीजा कोइ देहथी मळतो नथी. देव, तिर्यंच के नर्क ए एके गतिथी मोक्ष नथी, मात्र मानवदेहथी मोक्ष छे.

त्यारे तमे कहेशो के सघळा मानवियोनो मोक्ष केम थतो नथी? तेनो उत्तर जेओ मानवपणुं समजे छे, तेओ संसार शोकने तरी जाय छे. जेनामां विवेकबुद्धि उदय पामी होय, अने ते वडे सत्यासत्यनो निर्णय समजीने परम तत्त्वज्ञान तथा उत्तम चारित्र-रूप सद्धर्मनुं सेवन करीने जेओ अनुपम मोक्षने पामे छे, तेनां देहधारीपणाने विद्वानो मानवपणुं कहे छे. मनुष्यना शरीरना देखाव उपरथी विद्वानो तेने मनुष्य कहेता नथी; परंतु तेना विवेकने लइने कहे छे. बे हाथ, बे पग, बे आंख, बे कान, एक मुख, बे होठ अने एक नाक ए जेने होय तेने मनुष्य कहेवो एम आपणे समजवुं नहि; जो एम समजीए तो पछी वांदराने पण मनुष्य गणवो जोइए; एणे पण ए प्रमाणे सघळुं प्राप्त कर्युं छे. विशेषमां एक पूंछडुं पण

छे; त्यारे शुं एने महा मनुष्य कहेवो? ना, नहीं—मानवपणुं समजे तेज मानव कहेवाय.

ज्ञानीओ कहे छे के ए भव बहु दुर्लभ छे; अति पुण्यना प्रभावथी ए देह सांपडे छे; माटे एथी उतावळे आत्मसार्थक करी लेवुं. अयमंतकुमार, गजसुकुमार जेवां नानां बाळको पण मानवपणाने समजवाथी मोक्षने पाम्यां. मनुष्यमां जे शक्ति वधारे छे, ते शक्तिवडे करीने मदोन्मत्त हाथी जेवा प्राणीने पण वश करी ले छे; एज शक्तिवडे जो तेओ पोताना मनरुपी हाथीने वश करी ले तो केटलुं कल्याण थाय!

कोइ पण अन्य देहमां पूर्ण सद्विवेकनो उदय थतो नथी अने मोक्षना राजमार्गमां प्रवेश थइ शकतो नथी. एथी आपणने मळेलो आ बहु दुर्लभ मानवदेह सफळ करी लेवो अवश्यना छे. केटलाक मूर्खो दुराचारमां, अज्ञानमां, विषयमां, अने अनेक प्रकारना मदमां आवो मानवदेह वृथा गुमावे छे. अमूल्य कौस्तुभ हारी बेसे छे. ए नामना मानव गणाय, बाकी तो वानररूपज छे.

मोतनी पळ निश्चय आपणे जाणी शकता नथी, माटे जेम बने तेम धर्ममां त्वराथी सावधान थवुं.

शिक्षापाठ ५ अनाथी मुनि भाग १.

अनेक प्रकारनी रीद्धिवाळो मगधदेशनो श्रेणिक नामे राजा अश्वक्रिडाने माटे मंडिकूक्ष नामना वनमां नीकळी पड्यो, वननी विचित्रता मनोहारिणी हती. नाना प्रकारनां वृक्षो त्यां आवी रह्यां हतां; नाना प्रकारनी कोमळ वेलीओ घटाटोप थइ रही हती; नाना प्रकारनां पंखीओ आनंदथी तेनुं सेवन करतां हतां; नाना प्रका-

रनां पक्षियोनां मधुरां गायन त्यां संभळातां हतां; नाना प्रकारनां फूलथी ते वन छवाइ रह्युं हतुं; नाना प्रकारनां जळनां झरण त्यां वहेतां हतां; टुंकामां ए वन नंदनवन जेवुं लागतुं हतुं. ते वनमां एक झाड तळे महा समाधिवंत पण सुकुमार अने सुखोचित मुनिने ते श्रेणिके बेठेलो दीठो. एनुं रुप जोइने ते राजा अत्यंत आनंद पाम्यो. उपमारहित रुपथी विस्मित थइने मनमां तेनी प्रशंसा करवा लाग्यो. आ मुनिनो केवो अद्भुत वर्ण छे! एनुं केवुं मनोहर रुप छे! एनी केवी अद्भुत सौम्यता छे! आ केवी विस्मयकारक क्षमानो धरनार छे! आना अंगथी वैराग्यनो केवो उत्तम प्रकाश छे! आनी केवी निर्लोभिता जणाय छे! आ संयति केवुं निर्भय नम्रपणुं धरावे छे! ए भोगथी केवो विरक्त छे! एम चिंतवतो चिंतवतो-मुदित थतो थतो-स्तुति करतो करतो-धीमेथी चालतो चालतो, प्रदक्षिणा देइने ते मुनिने वंदन करीने अति समीप नहि तेम अति दूर नहीं, एम ते श्रेणिक बेठो; पछी बे हाथनी अंजलि करीने विनयथी तेणे ते मुनिने पूछ्युं के हे आर्य! तमे प्रशंसा करवा योग्य एवा तरुण छो; भोगविलासने माटे तमारी वय अनुकूळ छे; संसारमां नाना प्रकारनां सुख रह्यां छे, ऋतु ऋतुना कामभोग, जळ संबंधीना विलास, तेमज मनोहारिणी स्त्रीओनां मुखवचननुं मधुरुं श्रवण छतां ए सघळानो त्याग करीने मुनित्वमां तमे महा उद्यम करोछो एनुं शुं कारण? ते मने अनुग्रहथी कहो. राजानां आवां वचन सांभळीने मुनिए कह्युं, हे राजा! हुं अनाथ हतो. मने अपूर्व वस्तुनो प्राप्त करावनार, तथा योगक्षेमनो करनार, मारापर अनुकंपा आणनार, करुणाथी करीने परम सुखनो देनार एवो मारो कोइ मित्र थयो नहि. ए कारण मारा अनाथीपणानुं हतुं.



शिक्षापाठ ६ अनाथी मुनि भाग २.

श्रेणिक, मुनिना भाषणथी स्मित हसीने बोल्यो, तमारे महा रीद्धिवंतने नाथ केम न होय ? जो कोइ नाथ नथी तो हुं थउं छउं. हे भयंत्राण ! तमे भोग भोगवो. हे संयति ! मित्र, ज्ञातिए करीने दुर्ल्लभ एवो आ तमारो मनुष्यभव सुलभ करो ! अनाथीए कह्युं, अरे श्रेणिक राजा ! पण तुं पोते अनाथ छो तो मारो नाथ शुं थइश ? निर्धन ते धनाढ्य क्यांथी बनावे ? अबुध ते बुद्धिदान क्यांथी आपे? अज्ञ ते विद्वता क्यांथी आपे ? वंध्या ते संतान क्यांथी आपे? ज्यारे तुं पोते अनाथ छे; त्यारे मारो नाथ क्यांथी थइश? मुनिना वचनथी राजा अति आकुळ अने अति विस्मित थयो. कोइ काळे जे वचननुं श्रवण थयुं नथी ते वचननुं यति मुखथी श्रवण थयुं एथी ते शंकित थयो अने बोल्यो, हुं अनेक प्रकारना अश्वनो भोगी छउं; अनेक प्रकारना मदोन्मत्त हाथीओनो धणी छउं; अनेक प्रकारनी सैन्या मने आधीन छे; नगर, ग्राम, अंतःपुर अने चतुष्पादनी मारे कंई न्यूनता नथी; मनुष्य संबंधी सघळा प्रकारना भोग हुं पाम्यो छउं; अनुचरो मारी आज्ञाने रुडी रीते आराधे छे; एम राजाने छाजती सर्व प्रकारनी संपत्ति मारे घेर छे; अनेक मनवांछित वस्तुओ मारी समीपे रहे छे. आवो हुं महान् छतां अनाथ केम होउं ? रखे हे भगवन्, तमे मृषा बोलता हो ! मुनिए कह्युं, राजा ! मारुं कहेवुं तुं न्यायपूर्वक समज्यो नथी. हवे हुं जेम अनाथ थयो; अने जेम में संसार त्याग्यो तेम तने कहुं छउं; ते एकाग्र अने सावधान चित्तथी सांभळ; सांभळीने पछी तारी शंकानो सत्यासत्य निर्णय करजे.

कौशांबी नामे अति जीर्ण अने विविध प्रकारनी भव्यताथी भरेली एक सुंदर नगरी छे; त्यां रीद्धिथी परिपूर्ण धनसंचय नामनो

मारो पिता रहेतो हतो. हे महाराजा! योवन वयना प्रथम भागमां मारी आंखो अति वेदनाथी घेराइ, आखे शरीरे अग्नि बळवा मंड्यो. शस्त्रथी पण अतिशय तीक्ष्ण ते रोग वैरीनी पेठे मारापर कोपायमान थयो. मारुं मस्तक ते आंखनी असह्य वेदनाथी दुःखवा लाग्युं. वज्रना प्रहार जेवी, बीजाने पण रौद्रमय उपजावनारी एवी ते दारुण वेदनाथी हुं अत्यंत शोकमां हतो. संख्याबंध वैद्यकशास्त्रनिपूण वैद्यराजो मारी ते वेदनानो नाश करवा माटे आव्या अने तेमणे अनेक औषध उपचार कर्या पण ते वृथा गया. ए महा निपूण गणाता वैद्यराजो मने ते दरदथी मुक्त करी शक्या नहि; एज हे राजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी आंखनी वेदना टाळनाने माटे मारा पिताए सर्व धन आपवा मांडयुं; पण तेथी करीने मारी ते वेदना टळी नहि. हे राजा! एज मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी माता पुत्रने शोके करीने अति दुःखार्त्त थई; परंतु ते पण मने दरदथी मूकावी शकी नहि, एज हे राजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. एक पेटथी जन्मेला मारा ज्येष्ट अने कनिष्ठ भाइओ पोताथी बनतो परिश्रम करी चूक्या पण मारी ते वेदना टळी नहि, हे राजा! एज मारुं अनाथपणुं हतुं. एक पेटथी जन्मेली मारी ज्येष्टा अने कनिष्ठा भगनीओथी मारुं ते दुःख टळ्युं नहि, हे महाराजा! एज मारुं अनाथपणुं हतुं, मारी स्त्री जे पतिव्रता, मारापर अनुरक्त अने प्रेमवंती हती, ते आंसु भरी मारुं हैयुं पलाळती हती. तेणे अन्न पाणी आप्या छतां अने नाना प्रकारनां अंघोलण, चुवादिक सुगंधि पदार्थ, तेमज अनेक प्रकारनां फुल चंदनादिकनां जाणिता अजाणिता विलेपन कर्या छतां, हुं ते विलेपनथी मारो रोग शमावी न शक्यो. क्षण पण अळगी रहेती नहोती, एवी ते स्त्री पण मारा रोगने टाळी न शकी, एज हे महाराजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. एम कोइना प्रेमथी, कोइना औषधथी, कोइना विलापथी के कोइना परिश्रमथी

ए रोग उपशम्यो नहि. ए वेळा पुनः पुनः में असह्य वेदना भोगवी; पछी हुं प्रपंचीसंसारथी खेद पाम्यो. एकवार जो आ महा विडंबनामय वेदनाथी मुक्त थउं तो खंती, दंती अने निरारंभी प्रवर्ज्याने धारण करुं, एम चिंतवीने शयन करी गयो. ज्यारे रात्रि अतिक्रमी गइ त्यारे हे महाराजा ! मारी ते वेदना क्षय थइ गइ; अने हुं निरोगी थयो. मात, तात स्वजन बंधवादिकने पूछीने प्रभाते में महा क्षमावंत, इंद्रियने निग्रह करवावाळुं अने आरंभोपाधिथी रहित एवुं अणगारत्व धारण कर्युं.

शिक्षापाठ ७ अनाथी मुनि भाग ३.

हे श्रेणिक राजा ! त्यार पछी हुं आत्मा परमात्मानो नाथ थयो. हवे हुं सर्व प्रकारना जीवनो नाथ छउं. तुं जे शंका पाम्यो हतो ते हवे टळी गइ हशे. एम आखुं जगत्—चक्रवर्त्ति पर्यंत अशरण अने अनाथ छे. ज्यां उपाधि छे त्यां अनाथता छे; माटे हुं कहुं छउं ते कथन तुं मनन करी जजे. निश्चय मानजे के आपणो आत्माज दुःखनी भरेली वैतरणीनो करनार छे; आपणो आत्माज क्रूर साल्मलि वृक्षनां दुःखनो उपजावनार छे; आपणो आत्माज वंछित वस्तुरुपी दुधनी देवावाळी कामधेनु सुखनो उपजावनार छे; आपणो आत्माज नंदनवननी पेठे आनंदकारी छे; आपणो आत्माज कर्मनो करनार छे; आपणो आत्माज ते कर्मनो टाळनार छे; आपणो आत्माज दुःखोपार्जन करनार छे, अने आपणो आत्माज सुखोपार्जन करनार छे; आपणो आत्माज मित्र ने आपणो आत्माज वैरी छे; आपणो आत्मा कनिष्ठ आचारे स्थित अने आपणो आत्माज निर्मळ आचारे स्थित रहे छे. एम आत्मप्रकाशकबोध श्रेणिकने ते अनाथी मुनिए आप्यो. श्रेणिकराजा बहु संतोष

पाम्यो. बे हाथनी अंजालि करीने ते एम बोल्यो के, हे भगवन् ! तमे मने भली रीते उपदेश्यो; तमे जेम हतुं तेम अनाथपणुं कही बताव्युं. महर्षि ! तमे सनाथ, तमे सबंधव अने तमे सधर्म छो. तमे सर्व अनाथना नाथ छो. हे पवित्र संयति ! हुं तमने क्षमावुं छुं. तमारी ज्ञानी शिक्षाथी लाभ पाम्यो छुं. धर्मध्यानमां विघ्न करवावाळुं भोग भोगव्या संबंधीनुं में तमने हे महा भाग्यवंत ! जे आमंत्रण दीधुं ते संबंधीनो मारो अपराध मस्तक नमावीने क्षमावुंछुं. एवा प्रकारथी स्तुति उच्चारीने राजपुरुष केशरी श्रेणिक विनयथी प्रदक्षिणा करी स्वस्थानके गयो.

महा तप्पोधन, महा मुनि, महा प्रज्ञावंत, महा यशवंत, महा निर्ग्रंथ अने महा श्रुत अनाथी मुनिए मगध देशना श्रेणिक राजाने पोतानां वितक चरित्रथी जे बोध आप्यो छे, ते खरे ! अशरणभावना सिद्ध करे छे. महा मुनि अनाथीए भोगवेली वेदना जेवी के एथी अति विशेष वेदना अनंत आत्माओने भोगवता जोइए छीए. ए केवुं विचारवा लायक छे ! संसारमां अशरणता अने अनंत अनाथता छवाइ रही छे, तेनो त्याग उत्तम तत्त्वज्ञान अने परम शीलने सेववाथीज थाय छे. एज मुक्तिनां कारण रुप छे. जेम संसारमां रह्या अनाथी अनाथ हता; तेम प्रत्येक आत्मा तत्त्वज्ञाननी प्राप्ति विना सदैव अनाथज छे ! सनाथ थवा सद्देव, सद्धर्म अने सद्गुरुने जाणवा अने ओळखवा अवश्यनां छे.

शिक्षापाठ ८ सद्देवतत्त्व.

त्रण तत्त्व आपणे अवश्य जाणवां जोइए. ज्यां सुधी ते तत्त्व संबंधी अज्ञानता होय छे त्यांसुधी आत्महित नथी. ए त्रण तत्त्व सद्देव, सद्धर्म अने सद्गुरु छे. आ पाठमां सद्देवनुं स्वरुप संक्षेपमां कहीशुं.

चक्रवर्त्ति—राजाधिराज के राजपुत्र छतां जेओ संसारने एकांत अनंत शोकनुं कारण मानीने तेनो त्याग करे छे. पूर्ण दया, शांति, क्षमा, निरागीत्व अने आत्मसमृद्धिथी त्रिविध तापनो लय करे छे. महा उग्र तपोपध्यानवडे विशोधन करीने जेओ कर्मना समूहने बाळी नाखे छे, अने चंद्र तथा शंखथी अत्यंत उज्वळ एवुं शुक्ल ध्यान जेओने प्राप्त थाय छे. सर्व प्रकारनी निद्रानो जेओ क्षय करे छे. संसारमां मुख्यता भोगवतां ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहिनीय अने अंतराय ए चार कर्म भस्मिभूत करी, जेओ केवल ज्ञान केवल दर्शनसहित स्वस्वरुपथी विहार करे छे. जेओ चार अघाति कर्म रह्या सुधी यथाख्यात चारित्ररुप उत्तम शीलनुं सेवन करे छे. कर्मग्रीष्मथी अकळाता पामर प्राणीओने परम शांति मळवा जेओ शुद्ध बोध बीजनो निष्कारण करुणाथी मेघधारा वाणीवडे उपदेश करे छे. कोई पण समये किंचित् मात्र पण संसारी वैभव-विलासनो स्वप्नांश पण जेने रह्यो नथी. धनघाति कर्मक्षय कर्या पहेलां पोतानी छद्मस्थता गणी जेओ श्रीमुखवाणीथी उपदेश करता नथी. पांच प्रकारना अंतराय, हास्य, रति, अरति, भय, जुगुप्सा, शोक, मिथ्यात्व, अज्ञान, अप्रत्याख्यान, राग, द्वेष, निद्रा अने काम ए अढार दूषणथी रहित छे, सच्चिदानंद स्वरुपथी विराजमान छे, महा उद्योतकर बार गुणो जेओने प्रगटे छे. जन्म, मरण अने अनंत संसार जेनो गयो छे तेने, निर्ग्रंथना आगममां सद्देव कह्या छे. ए दोषरहित शुद्ध आत्मस्वरुपने पामेला होवाथी पूजनीय परमेश्वर कहेवा योग्य छे. उपर कह्या ते अढार दोषमांनो एक पण दोष होय त्यां सद्देवनुं स्वरुप घटतुं नथी. आ परम तत्त्व महत्पुरुषोथी विशेष जाणवुं अवश्यनुं छे.



शिक्षापाठ ९ सद्धर्मतत्त्व.

अनादि काळथी कर्मजाळनां बंधनथी आ आत्मा संसारमां रझळ्या करे छे. समय मात्र पण तेने खरुं सुख नथी. अधोगतिने ए सेव्या करे छे; अने अधोगतिमां पडता आत्माने धरी राखनार-सद्गति आपनार वस्तु तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे, अने एज सत्य सुखनो उपाय छे. ते धर्मतत्त्वना सर्वज्ञ भगवाने भिन्न भिन्न भेद कह्या छे. तेमांना मुख्य बे छे. १ व्यवहारधर्म, २ निश्चयधर्म.

व्यवहारधर्ममां दया मुख्य छे. सत्यादि बाकीनां चार महाव्रतो ते पण दयानी रक्षा वास्ते छे. दयाना आठ भेद छे. १ द्रव्यदया, २ भावदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरुपदया, ६ अनुबंधदया, ७ व्यवहारदया, ८ निश्चयदया.

प्रथम द्रव्यदया-कोइ पण काम करवुं ते यत्नापूर्वक जीवरक्षा करीने करवुं ते द्रव्यदया.

बीजी भावदया-बीजा जीवने दुर्गति जतो देखीने अनुकंपाबुद्धिथी उपदेश आपवो ते भावदया.

त्रीजी स्वदया-आ आत्मा अनादि काळथी मिथ्यात्वथी गृहायो छे, तत्व पामतो नथी, जिनाज्ञा पाळी शकतो नथी. एम चिंतवी धर्ममां प्रवेश करवो ते स्वदया.

चोथी परदया-छकाय जीवनी रक्षा करवी ते परदया.

पांचमी स्वरूपदया-सूक्ष्म विवेकथी स्वरूप-विचारणा ते स्वरुप दया.

छठ्ठी अनुबंधदया-सद्गुरु के सुशिक्षक शिष्यने कडवां कथनथी उपदेश आपे ए देखवामां तो अयोग्य लागे छे; परंतु परिणाम करुणानुं कारण छे-एनुं नाम अनुबंधदया.

सातमी व्यवहारदया—उपयोगपूर्वक तथा विधिपूर्वक जे दया पाळवी तेनुं नाम व्यवहारदया.

आठमी निश्चयदया—शुद्ध साध्य उपयोगमां एकता भाव, अने अभेद उपयोग ते निश्चयदया.

ए आठ प्रकारनी दयावडे करीने व्यवहारधर्म भगवाने कह्यो छे एमां सर्व जीवनुं सुख, संतोष, अभयदान ए सघळुं विचारपूर्वक जोतां आवी जाय छे.

बीजो निश्चयधर्म—पोतानां स्वरुपनी भ्रमणा टाळवी, आत्माने आत्मभावे ओळखवो, आ संसार ते मारो नथी, हुं एथी भिन्न परमअसंग सिद्धसद्रश्य शुद्ध आत्मा छुं, एवी आत्मस्वभाववर्त्तना ते निश्चयधर्म छे.

जेमां कोइ प्राणीनुं दुःख, अहित के असंतोष रह्यो छे त्यां दया नथी; अने दया नथी त्यां धर्म नथी. अर्हत भगवाननां कहेलां धर्मतत्त्वथी सर्व प्राणी अभय थाय छे.

शिक्षापाठ १० सद्गुरुतत्त्व भाग १.

पिता—पुत्र, तुं जे शाळामां अभ्यास करवा जाय छे ते शाळानो शिक्षक कोण छे ?

पुत्र—पिताजी, एक विद्वान अने समजु ब्राह्मण छे.

पिता—तेनी वाणी, चालचलगत वगेरे केवां छे ?

पुत्र—एनां वचन बहु मधुरां छे. ए कोईने अविवेकथी बोलावता नथी अने बहु गंभीर छे, बोले छे त्यारे जाणे मुखमांथी फुल झरे छे. कोईनुं अपमान करता नथी; अने अमने योग्यनीति समजाय तेवी शिक्षा आपे छे.

पिता-तुं त्यां शा कारणे जाय छे ते मने कहे जोईए.

पुत्र-आप एम केम कहोछो पिताजी ? संसारमां विचक्षण थवाने माटे पद्धातियो समजुं, व्यव ारनी नीति शीखुं एटला माटे थइने आप मने त्यां मोकलो छो.

पिता-तारा ए शिक्षक दुराचरणी के एवा होत तो ?

पुत्र-तो तो बहु माठुं थात; अमने अविवेक अने कुवचन बोलतां आवडत; व्यवहार नीति तो पछी शीखवे पण कोण ?

पिता-जो पुत्र, ए उपरथी हुं हवे तने एक उत्तम शिक्षा कहुं. जेम संसारमां पडवा माटे व्यवहारनीति शीखवानुं प्रयोजन छे, तेम धर्मतत्त्व अने धर्मनीतिमां प्रवेश करवानुं परभवने माटे प्रयोजन छे. जेम ते व्यवहारनीति सदाचारी शिक्षकथी उत्तम मळी शके छे; तेम परभव श्रेयस्करधर्मनीति उत्तम गुरुथी मळी शके छे. व्यवहारनीतिना शिक्षक अने धर्मनीतिना शिक्षकमां बहु भेद छे. एक बीलोरीना कडका जेम व्यवहार शिक्षक अने अमूल्य कौस्तुभ जेम आत्मधर्मशिक्षक छे.

पुत्र-शीरछत्र ! आपनुं कहेवुं व्याजबी छे. धर्मना शिक्षकनी संपूर्ण अवश्य छे. आपे वारंवार संसारनां अनंत दुःख संबंधी मने कह्युं छे; एथी पार पामवा धर्मज सहायभूत छे; त्यारे धर्म केवा गुरुथी पामिये तो श्रेयस्कर नीवडे ते मने कृपा करीने कहो.

शिक्षापाठ ११ सद्गुरुतत्त्व भाग २.

पिता-पुत्र ! गुरु त्रण प्रकारना कहेवाय छे. १ काष्टस्वरुप. २ कागळस्वरुप. ३ पथ्थरस्वरुप. काष्टस्वरुप गुरु सर्वोत्तम छे; कारण संसाररूपी समुद्रने काष्टस्वरुपी गुरुज तरे छे-अने तारी शके छे.

२ कागळस्वरुप गुरु ए मध्यम छे. ते संसारसमुद्रने पोते तरी शके नहीं; परंतु कंइ पून्य उपार्जन करी शके. ए बीजाने तारी शके नहीं ३ पथ्थरस्वरुप ते पोते बुडे अने परने पण बुडाडे. काष्टस्वरुप गुरु मात्र जिनेश्वर भगवंतना शासनमां छे. बाकी बे प्रकारना जे गुरु रह्या ते कर्मावरणने वृद्धि करनार छे. आपणे बधा उत्तम वस्तुने चाहिए छीए; अने उत्तमथी उत्तम मळी शके छे. गुरु जो उत्तम होय तो ते भवसमुद्रमां नाविकरुप थई सद्धर्मनावमां बेसाडी पार पमाडे. तत्वज्ञानना भेद, स्वस्वरुपभेद लोकालोक विचार, संसारस्वरुप ए सघळुं उत्तम गुरु विना मळी शके नहि; त्यारे तने प्रश्न करवानी इच्छा थशे के एवा गुरुनां लक्षण कयां कयां? ते कहुं छुं. जिनेश्वर भगवाननी भाखेली आज्ञा तेने यथातथ्य पाळे, जाणे, अने बीजाने बोधे, कंचन कामिनीथी सर्व भावथी त्यागी होय, विशुद्ध आहारजळ लेता होय, बाविश प्रकारना परिसह सहन करता होय, क्षांत, दांत, निरारंभि अने जितेंद्रिय होय, सिद्धांतिक ज्ञानमां निमग्न होय, धर्म माटे थइने मात्र शरीरनो निर्वाह करता होय, निर्गंथ–पंथ पाळतां कायर न होय, सळी मात्र पण अदत्त लेता न होय, सर्वे प्रकारना अहार रात्रिये त्याग्या होय, समभावि होय, अने निरागताथी सत्योपदेशक होय. टुंकामां तेओने काष्ट-स्वरुप सद्गुरु जाणवा. पुत्र! गुरुना आचार, ज्ञान ए सम्बन्धी आगममां बहुं विवेकपूर्वक वर्णन कर्युं छे. जेम तुं आगळ विचार करतां शीखतो जइश, तेम पछी हुं तने ए विशेष तत्वो बोधतो जइश.

पुत्र–पीताजी! आपे मने टुंकामां पण बहु उपयोगी अने कल्याणमय कह्युं; हुं निरंतर ते मनन करतो रहीश.



शिक्षापाठ १२ उत्तम ग्रहस्थ.

संसारमां रह्या छतां पण उत्तम श्रावको ग्रहस्थाश्रमथी आत्मसाधनने साधे छे; तेओनो ग्रहस्थाश्रम पण वखणाय छे.

ते उत्तम पुरुष, सामायिक, क्षमापना चोविहार प्रत्याख्यान इ० यम नियमने सेवे छे.

पर पत्नि भणी मातृ बहेननी द्रष्टि राखे छे.

सत्पात्रे यथाशक्ति दान दे छे.

शांत, मधुरी अने कोमळ भाषा बोले छे.

सत्शास्त्रनुं मनन करे छे.

बने त्यां सुधी उपजीविकामां पण माया, कपट, इ० करतो नथी.

स्त्री, पुत्र, मात, तात, मुनि अने गुरु ए सघळांने यथायोग्य सन्मान आपे छे.

माबापने धर्मनो बोध आपे छे.

यत्नाथी घरनी स्वच्छता, रांधवुं, सींधवुं, शयन इ० रखावे छे.

पोते विचक्षणताथी वर्ती स्त्री, पुत्रने विनयि अने धर्मि करे छे.

सघळां कुटुंबमां संपनी वृद्धि करे छे.

आवेला अतिथिनुं यथायोग्य सन्मान करे छे.

याचकने क्षुधातुर राखतो नथी.

सत्पुरुषोनो समागम अने तेओनो बोध धारण करे छे.

समर्याद अने संतोष युक्त निरंतर वर्ते छे.

यथाशक्ति शास्त्र संचय जेना घरमां रह्यो छे.

अल्प आरंभथी जे व्यवहार चलावे छे.

आवो ग्रहस्थावास उत्तम गतिनुं कारण थाय, एम ज्ञानीओ कहे छे.

शिक्षापाठ १३ जिनेश्वरनी भक्ति भाग १.

जिज्ञासु–विचक्षण सत्य! कोइ शंकरनी, कोइ ब्रह्मानी, कोई विश्नुनी, कोई अग्निनी, कोई भवानीनी, कोई पेगम्बरनी अने कोई क्राइस्टनी भक्ति करे छे. एओ भक्ति करीने शुं आशा राखता हशे?

सत्य–प्रिय जिज्ञासु, ते भाविक मोक्ष मेळववानी परम आशाथी ए देवोने भजे छे.

जिज्ञासु–कहो त्यारे, एथी तेओ उत्तम गति पामे एम तमारुं मत छे?

सत्य–एओनी भक्तिवडे तेओ मोक्ष पामे एम हुं कही शकतो नथी. जेओने ते परमेश्वर कहे छे तेओ कंई मोक्षने पाम्या नथी; तो पछा उपासकने ए मोक्ष क्यांथी आपे? शंकर वगेरे कर्मक्षय करी शक्या नथी अने दूषणसहीत छे. एथी ते पूजवा योग्य नथी.

जिज्ञासु–ए दूषणो क्यां क्यां ते कहो.

सत्य–अज्ञान, निद्रा, मिथ्यात्व, राग, द्वेष, अविरति, भय, शोक, जुगुप्सा, दानांतराय, लाभांतराय, वीर्यांतराय अने उपभोगांतराय, काम, हास्य, रति अने अरति ए अढार दूषणमांहुं एक दूषण होय तोपण ते अपूज्य छे. एक समर्थ पंडिते पण कह्युं छे के परमेश्वर छउं एम मिथ्या रीते मनावनारा पुरुषो पोते पोताने ठगे छे कारण, पडखामां स्त्री होवाथी तेओ विषयी ठरे छे; शस्त्र धारण करेलां होवाथी द्वेषी ठरे छे. जपमाळा धारण कर्याथी तेओनुं चित्त व्यग्र छे एम सूचवे छे. मारे शरणे आव, हुं सर्व पाप हरी लउं एम कहेनारा अभिमानी अने नास्तिक ठरे छे. आम छे तो पछी बीजाने तेओ केम तारी शके? वळी केटलाक अवतार लेवारुपे परमेश्वर कहेवरावे छे तो त्यां तेओने अमुक कर्मनुं भोगववुं बाकी छे एम सिद्ध थाय छे.

जिज्ञासु-भाई, त्यारे पूज्य कोण? अने भक्ति कोनी करवी के जेवडे आत्मा स्वशक्तिनो प्रकाश करे.

सत्य-शुद्ध सच्चिदानंदस्वरुप जीवन सिद्ध भगवाननी भक्तिथी तेमज सर्व दूषणरहित, कर्ममलहीन, मुक्त वीतराग सकलभयरहित, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी आत्मशक्ति प्रकाश पामे छे.

जिज्ञासु-एओनी भक्ति करवाथी आपणने तेओ मोक्ष आपे छे एम मानवुं खरुं?

सत्य-भाइ जिज्ञासु, ते अनंतज्ञानी भगवान तो निरागी अने निर्विकार छे. एने स्तुति निंदानुं आपणने कंइ फळ आपवानुं प्रयोजन नथी. आपणो आत्मा अज्ञानी अने मोहांध थइने जे कर्मदळथी घेरायलो छे ते कर्मदळ टाळवा अनुपम पुरुषार्थनी अवश्य छे. सर्व कर्मदळ क्षय करी अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य, अने स्वस्वरुपमय थया एवा जिनेश्वरोनुं स्वरुप-आत्मानी निश्चयनये रीद्धि होवाथी ते भगवाननुं स्मरण, चिंतवन, ध्यान अने भक्ति ए पुरुषार्थता आपे छे. विकारथी आत्मा विरक्त करे छे. शांति अने निर्जरा आपे छे. जेम तरवार हाथमां लेवाथी शौर्यवृति अने भांग पीवाथी निशो उत्पन्न तेम ए गुण 'चिंतवनथी' आत्मा स्वस्वरुपानंदनी श्रेणिए चढतो जाय छे. दर्पण जोतां जेम मुखाकृतिनुं भान थाय छे तेम सिद्ध के जिनेश्वरस्वरुपनां चिंतवनरुप दर्पणथी आत्मस्वरुपनुं भान थाय छे.

शिक्षापाठ १४ जिनेश्वरनी भक्ति भाग २.

जिज्ञासु-आर्य सत्य! सिद्धस्वरुप पामेला ते जिनेश्वरो तो सघळा पूज्य छे; त्यारे नामथी भक्ति करवानी कंइ जरुर छे?

सत्य—हा, अवश्य छे. अनंत सिद्धस्वरुपने ध्यातां जे शुद्ध स्वरुपना विचार थाय ते तो कार्य परंतु ए जे जेवडे ते स्वरुपने पाम्या ते कारण कयुं? ए विचारतां उग्रतप, महान वैराग्य, अनंत-दया, महानध्यान ए सघळांनुं स्मरण थशे; एओनां अर्हत तीर्थंकर पदमां जे नामथी तेओ विहार करता हता ते नामथी तेओना पवित्र आचार अने पवित्र चरित्रो अंतःकरणमां उदय पामशे; जे उदय परिणामे महा लाभदायक छे. जेम महावीरनुं पवित्र नाम स्मरण करवाथी तेओ कोण? क्यारे? केवा प्रकारे सिद्धि पाम्या? ए आदि चरित्रोनी स्मृति थशे. अने एथी आपणे वैराग्य, विवेक इत्यादिकनो उदय पामीए.

जिज्ञासु—पण लागस्समां तो चोवीश जिनेश्वरनां नाम सूचवन कर्यां छे? एनो हेतु शुं छे ते मने समजावो.

सत्य—आ काळमां आ क्षेत्रमां जे चोवीश जिनेश्वरो थया एमनां नामनुं अने चरित्रोनुं स्मरण करवाथी शुद्ध तत्वनो लाभ थाय. वैरागीनुं चरित्र वैराग्य बोधे छे. अनंत चोवीशीनां अनंत नाम सिद्ध स्वरुपमां समग्रे आवी जाय छे. वर्त्तमानकाळना चोवीश तीर्थंकरनां नाम आ काळे लेवाथी काळनी स्थितिनुं बहु सूक्ष्मज्ञान पण सांभरी आवे छे. जेम एओनां नाम आ काळमां लेवाय छे. तेम चोवीशी चोवीशीनां नाम काळ अने चोवीशी फरतां लेवातां जाय छे. एटले अमुक नाम लेवां एम कंइ हेतु नथी. परंतु तेओना गुण अने पुरुषार्थ स्मृति माटे वर्त्तती चोवीशीनी स्मृति करवी एम तत्व रह्युं छे. तेओना जन्म, विहार उपदेश ए सघळुं नाम निक्षेपे जाणी शकाय छे. ए वडे आपणो आत्मा प्रकाश पामे छे. सर्प जेम मोरलीना नादथी जाग्रत थाय छे; तेम आत्मा पोतानी सत्य रीद्धि सांभळतां ते मोहनिद्राथी जाग्रत थाय छे.

जिज्ञासु—मने तमे जिनेश्वरनी भक्ति संबंधी बहु उत्तम कारण

कह्युं. आधुनिक केळवणीथी जिनेश्वरनी भक्ति कंइ फळद[illegible]. नथी एम मने आस्था थइ हती. ते नाश पामी छे. जिनेश्वर भगवाननी अवश्य भक्ति करवी जोइए ए हुं मान्य राखुं छउं.

सत्य–जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी अनुपम लाभ छे, एनां कारणो महान छे; तेमना परम उपकारने लीधे पण तेओनी भक्ति अवश्य करवी जोइए. वळी तेओना पुरुषार्थनुं स्मरण थतां पण शुभ वृत्तियोनो उदय थाय छे. जेम जेम श्री जिननां स्वरूपमां वृत्ति लय पामे छे तेम तेम परम शांति प्रवहे छे. एम जिनभक्तिमां कारणो अत्रे संक्षेपमां कह्यां छे ते आत्मार्थियोए विशेषपणे मनन करवां योग्य छे.

शिक्षापाठ १५ भक्तिनो उपदेश.

तोटकछंद.

शुभ शीतळतामय छांय रही, मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिन भक्ति ग्रहो तरु-कल्प अहो, भजिने भगवंत भवंत लहो. १

निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे, मन ताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वण दाम ग्रहो, भजिने भगवंत भवंत लहो. २

समभावि सदा परिणाम थशे, जडमंद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो, भजिने भगवंत भवंत लहो. ३

शुभ भाववडे मन शुद्ध करो, नवकार महा पदने समरो;
नहि एह समान सुमंत्र कहो, भजिने भगवंत भवंत लहो. ४

करशो क्षय केवळ राग कथा, धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा;
नृपचंद्र प्रपंच अनंत दहो, भजिने भगवंत भवंत लहो. ५

शिक्षापाठ १६ खरी महत्ता.

केटलाक लक्ष्मीथी करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक महान कुटुंबथी महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक पुत्र वडे करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक अधिकारथी महत्ता मळे छे एम माने छे. पण ए एमनुं मानवुं विवेकथी जोतां मिथ्या छे. एओ जेमां महत्ता ठरावे छे तेमां महत्ता नथी, पण लघुता छे; लक्ष्मीथी संसारमां खानपान मान, अनुचरोपर आज्ञा, वैभव ए सघळुं मळे छे अने ए महत्ता छे, एम तमे मानता हशो, पण एटलेथी एने महत्ता मानवी जोइती नथी. लक्ष्मी अनेक पाप वडे करीने पेदा थाय छे. आव्या पछी अभिमान, बेभानता, अने मूढता आपे छे. कुटुंबसमुदायनी महत्ता मेळववा माटे तेनुं पालण पोषण करवुं पडे छे. ते वडे पाप अने दुःख सहन करवां पडे छे. आपणे उपाधिथी पाप करी एनुं उदर भरवुं पडे छे. पुत्रथी कंइ शाश्वत नाम रहेतुं नथी; एने माटे पण अनेक प्रकारना पाप अने उपाधि वेठवी पडे छे; छतां एथी आपणुं मंगळ शुं थाय छे? अधिकारथी परतंत्रता के अमलमद आवे छे अने एथी जुलम, अनीति, लांच तेमज अन्याय करवा पडे छे;—के थाय छे. कहो त्यारे एमांथी महत्ता शानी थाय छे? मात्र पापजन्य कर्मनी. पापी कर्मवडे करी आत्मानी नीच गति थाय छे; नीच गति छे त्यां महत्ता नथी पण लघुता छे.

आत्मानी महत्ता तो सत्यवचन, दया, क्षमा, परोपकार अने समतामां रही छे. लक्ष्मी इ० ए तो कर्ममहत्ता छे. एम छतां लक्ष्मीथी शाणा पुरुषो दान दे छे, उत्तम विद्याशाळाओ स्थापी परदुःखभंजन थाय छे. एक परणेली स्त्रीमांज मात्र वृत्ति रोकी

परस्त्री तरफ पुत्रिभावथी जुए छे. कुटुंबवडे करीने अमुक समुदायनुं हित काम करे छे. पुत्रवडे तेने संसारभार आपी पोते धर्ममार्गमां प्रवेश करे छे. अधिकारथी डहापण वडे आचरण करी राजा प्रजा बन्नेनुं हित करी–धर्मनीतिनो प्रकाश करे छे, एम करवाथी केटलीक महत्ता पमाय खरी छतां ए महत्ता चोकस नथी. मरणभय माथे रह्यो छे. धारणा धरी रहे छे. योजेली योजना के विवेक वखते हृदयमांथी जतो रहे एवी संसारमोहिनीय छे. एथी आपणे एम निस्संशय समजवुं के सत्यवचन, दया, क्षमा, ब्रह्मचर्य अने समता जेवी आत्ममहत्ता कोइ स्थळे नथी. शुद्ध पंचम व्रतधारी भिक्षुके जे रीद्धि अने महत्ता मेळवी छे ते ब्रह्मदत्त जेवा चक्रवर्त्तिए लक्ष्मी, कुटुंब, पुत्र के अधिकारथी मेळवी नथी एम मारुं मानवुं छे !

शिक्षापाठ १७ बाहुबळ.

बाहुबळ एटले पोतानी भूजानुं बळ एम अहीं अर्थ करवानो नथी, कारण के बाहुबळ नामना महापुरुषनुं आ एक नानुं पण अद्भुत चरित्र छे.

सर्व संग परित्याग करी, ऋषभदेवजी भगवान भरत अने बाहुबळ नामना पोताना बे पुत्रोने राज्य सोंपी विहार करता हता. त्यारे भरतेश्वर चक्रवर्त्ति थयो. आयुधशाळामां चक्रनी उत्पत्ति थया पछी प्रत्येक राज्यपर तेणे पोतानी आम्नाय बेसारी, अने छखंडनी प्रभूता मेळवी. मात्र बाहुबळजीए प्रभूता अंगीकार न करी. एथी परिणाममां भरतेश्वर अने बाहुबळने युद्ध मंडायुं. घणा वखत सुधी भरतेश्वर के बाहुबळ ए बन्नेमांथी एके हठ्या नहि, त्यारे क्रोधावेशमां आवी जइ भरतेश्वरे

बा[illegible]बळपर चक्र मूक्युं, पण एक वीर्यथी उत्पन्न थयेला भाइपर पण ते चक्र प्रभाव न करी शके, ए नियमथी फरीने पाछुं भरतेश्वरना हाथमां आव्युं. भरते चक्र मूकवाथी बाहुबळने बहु क्रोध आव्यो. तेणे महा बळवत्तर मुष्टि उपाडी. तत्काळ त्यां तेनी भावनानुं स्वरुप फर्युं. ते विचारी गयो के हुं आ बहु निंदनिय करुं छउं; आनुं परिणाम केवुं दुःखद [illegible] छे! भले भरतेश्वर राज्य भोगवो. मिथ्या परस्परनो नाश शा माटे करवो? आ मुष्टि मारवी योग्य नथी; तेम उगामी ते हवे पाछी वाळवी पण योग्य नथी. एम विचारी तेणे पंच मुष्टि केश लुंचन कर्युं, अने त्यांथी मुनिभावे चाली नीकळ्या. भगवान आदीश्वर ज्यां अठाणुं दिक्षित पुत्रोथी तेमज आर्य—आर्याथी विहार करता हता त्यां जवा इच्छा करी; पण मनमां मान आव्युं के त्यां हुं जईश तो माराथी नाना अठाणुं भाइने वंदन करवुं पडशे. माटे त्यां तो जवुं योग्य नथी. एम मानवृत्तिथी वनमां ते एकाग्र ध्याने रह्या. हळवे हळवे बार मास थइ गया. महा तपथी काया हाडकानो माळो थइ गइ; ते सुकां झाड जेवा देखावा लाग्या; परंतु ज्यां सुधी माननो अंकुर तेनां अंतःकरणथी खस्यो नहोतो त्यांसुधी ते सिद्धि न पाम्या. ब्राह्मी अने सुंदरीए आवीने तेने उपदेश कर्यो; आर्य वीर! हवे मदोन्मत्त हाथीपरथी उतरो, एनाथी तो बहु शोष्युं. एओनां आ वचनोथी बाहुबळ विचारमां पड्या. विचारतां विचारतां तेने भान थयुं के सत्य छे—हुं म[illegible] मदोन्मत्त हाथीपरथी हजु क्यां उतर्यो छउं? हवे एथी उतरवुं एज मंगळकारक छे; एम विचारी तेणे वंदन करवाने माटे पगलुं भर्युं के ते अनुपम दिव्य कैवल्य कमळाने पाम्या.

[illegible], जुओ मान ए केवी दुरित वस्तु छे!!



शिक्षापाठ १८ चार गति.

संसारवनमां शुभाशुभ जीव सातावेदनीय, असातावेदनीय वेदतो कर्मनां फळ भोगववा आ चार गतिमां भम्या करे छे; तो ए चार गति खचीत जाणवी जोइए.

१ नर्कगति-महारंभ, मदीरापान, मांस भक्षण, इत्यादिक तीव्र हिंसाना करनार जीवो अघोर नर्कमां पडे छे. त्यां लेश पण शाता, विश्राम के सुख नथी. महा अंधकार व्याप्त छे. अंगछेदन सहन करवुं पडे छे. अग्निमां बळवुं पडे छे अने छरपळानी धार जेवुं जळ पीवुं पडे छे. अनंत दुःखथी करीने ज्यां प्राणीभूते सांकड, अशाता अने विलविलाट सहन करवा पडे छे. आवा जे दुःखने केवळज्ञानीओ पण कही शकता नथी. अहोहो ! ! ते दुःख अनंतिवार आ आत्माए भोगव्यां छे.

२ तिर्यंचगति-छल, जूठ, प्रपंच इत्यादिक करीने जीव सिंह, वाघ, हाथी, मृग, गाय, भेंस, बळद इत्यादिक तिर्यंचना शरीर धारण करे छे. ते तिर्यंचगतिमां भूख, तरश, ताप, वध, बंधन, ताडन, भारवहन इत्यादिनां दुःखने सहन करे छे.

३ मनुष्यगति-खाद्य, अखाद्य, विषे विवेकरहित छे; लज्जाहीन, माता पुत्री साथे काम गमन करवामां जेने पापापापनुं भान नथी; निरंतर मांसभक्षण, चोरी, परस्त्रीगमन वगेरे महा पातक कर्या करे छे. एतो जाणे अनार्यदेशनां अनार्य मनुष्य छे. आर्यदेशमां पण क्षत्रि, ब्राह्मण, वैश्य प्रमुख मतिहीन, दरिद्रि, अज्ञान अने रोगथी पीडित मनुष्यो छे. मान, अपमान इत्यादि अनेक प्रकारनां दुःख तेओ भोगवी रह्यां छे.

४ देवगति-परस्पर वेर, झेर, क्लेश, शोक मत्सर, काम,

मद, क्षुधा आदिथी देवताओ पण आयुष्य व्यतित करी रह्या छे; ए देवगति. एम चार गति सामान्यरुपे कही. आ चारे गतिमां मनुष्यगति सौथी श्रेष्ठ अने दुर्लभ छे, आत्मानुं परमहित मोक्ष ए गतिथी पमाय छे; ए मनुष्यगतिमां पण केटलाक दुःख अने आत्मसाधनमां अंतरायो छे.

एक तरुण सुकुमारने रोमे रोमे लालचोळ सुया घोंचवाथी जे असह्य वेदना उपजे छे; ते करतां आठगुणी वेदना गर्भस्थानमां जीव ज्यारे रहे छे त्यारे पामे छे. लगभग नव महीना मळ, मूत्र, लोही, परु आदिमां अहोरात्र मुर्छागत स्थितिमां वेदना भोगवी भोगवीने जन्म पामे छे. गर्भस्थाननी वेदनाथी अनंतगणी वेदना जन्मसमये उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी बाळावस्था पमाय छे. मळ-मूत्र, धूळ अने नग्नावस्थामां अणसमजथी रझळी रडीने ते बाळावस्था पूर्ण थाय छे; अने युवावस्था आवे छे. धन उपार्जन करवा माटे नाना प्रकारनां पापमां पडवुं पडे छे. ज्यांथी उत्पन्न थयो छे त्यां एटले विषय विकारमां वृत्ति जाय छे. उन्माद, आळस, अभिमान, निंद्यद्रष्टि, संयोग वियोग एम घटमाळमां युवावय चाली जाय छे त्यां वृद्धावस्था आवे छे. शरीर कंपे छे, मुखे लाळ झरे छे. त्वचापर करोचली पडी आय छे. सुंघवुं सांभळवुं अने देखवुं ए शक्तियो केवळ मंद थइ जाय छे. केश धवळ थइ खरवा मंडे छे; चालवानी आय रहेती नथी. हाथमां लाकडी लइ लडथडीयां खातां चालवुं पडे छे. कांतो जीवन पर्यंत खाटले पड्यां रहेवुं पडे छे. श्वास, खांसी इत्यादिक रोग आवीने वळगे छे, अने थोडा काळमां काळ आवीने कोळीओ करी जाय छे. आ देहमांथी जीव चाली नीकळे छे. काया हती नहती थइ जाय छे. मरण समये पण केटली बधी वेदना छे ? चतुर्गतिनां दुःखमां जे मनुष्यदेह श्रेष्ट तेमां पण केटलां बधां दुःख रह्यां छे ! तेम छतां उपर जणाव्या

प्रमाणे अनुक्रमे काळ आवे छे एम पण नथी. गमे ते वखते ते आवीने लइ जाय छे. माटेज विचक्षण पुरुषो प्रमाद विना आत्मकल्याणने आराधे छे.

शिक्षापाठ १९ संसारने चार उपमा भाग १.

संसारने महा तत्वज्ञानीओ एक समुद्रनी उपमा पण आपे छे. संसाररुपी समुद्र अनंत अने अपार छे. अहो लोको ! एनो पार पामवा पुरुषार्थनो उपयोग करो ! उपयोग करो ! ! आम एमनां स्थळे स्थळे वचनो छे. संसारने समुद्रनी उपमा छाजती पण छे. समुद्रमां जेम मोजांनी छोळो उछळया करे छे तेम संसारमां विषयरुपी अनेक मोजांओ उछळे छे. जळनो उपरथी जेम सपाट देखाव छे तेम संसार पण सरळ देखाव दे छे. समुद्र जेम क्यांक बहु उंडो छे, अने क्यांक भमरीओ खवरावे छे तेम संसार काम विषय प्रपंचादिकमां बहु उंडो छे. ते मोहरुपी भमरीओ खवरावे छे. थोडुं जळ छतां समुद्रमां जेम उभा रहेवाथी कादवमां गुचीं जइए छीए तेम संसारना लेश प्रसंगमां ते तृष्णारुपी कादवमां घुंचवी दे छे. समुद्र जेम नाना प्रकारना खराबा अने तोफानथी नाव के वहाणने जोखम पहोंचाडे छे तेम स्त्रीयोरुपी खराबा अने कामरुपी तोफानथी संसार आत्माने जोखम पहोंचाडे छे. समुद्र जेम अगाध जळथी शीतळ देखातो छतां वडवानळ नामना अग्निनो तेमां वास छे तेम संसारमां मायारुपी अग्नि बळ्याज करे छे. समुद्र जेम चोमासामां वधारे जळ पामीने उंडो उतरे छे तेम पापरुपी जळ पामीने संसार उंडो उतरे छे, एटले मजबुत पाया करतो जाय छे.

२. संसारने बीजी उपमा अग्निनी छाजे छे. अग्निथी करीने जेम महातापनी उत्पत्ति छे. एम संसारथी पण त्रिविध तापनी उत्पत्ति छे. अग्निथी बळेलो जीव जेम महा विलविलाट करे छे तेम संसारथी बळेलो जीव अनंत दुःखरुप नर्कथी असह्य विलविलाट करे छे. अग्नि जेम सर्व वस्तुनो भक्ष करी जाय छे, तेम संसारना मुखमां पडेलांनो ते भक्ष करी जाय छे. अग्निमां जेम जेम घी अने इंधन होमाय छे तेम तेम ते वृद्धि पामे छे. तेवीज रीते संसाररुप अग्निमां तीव्र मोहिनीरुप घी अने विषयरुप इंधन होमातां ते वृद्धि पामे छे.

३. संसारने त्रीजी उपमा अंधकारनी छाजे छे. अंधकारमां जेम सींदरी, सर्पनुं भान करावे छे तेम संसार सत्यने असत्यरुप बतावे छे; अंधकारमां जेम प्राणीओ आम तेम भटकी विपत्ति भोगवे छे तेम संसारमां बेभान थइने अनंत आत्माओ चतुर्गतिमां आम तेम भटके छे. अंधकारमां जेम काच अने हीरानुं ज्ञान थतुं नथी तेम संसाररुपी अंधकारमां विवेक अविवेकनुं ज्ञान थतुं नथी. जेम अंधकारमां प्राणीओ छती आंखे अंध बनी जाय छे तेम छती शक्तिए संसारमां तेओ मोहांध बनी जाय छे. अंधकारमां जेम घुवड इत्यादिकनो उपद्रव वधे छे तेम संसारमां लोभ, मायादिकनो उपद्रव वधे छे. एम अनेक भेदे जोतां संसार ते अंधकाररुपज जणाय छे.

शिक्षापाठ २० संसारने चार उपमा भाग २.

४. संसारने चोथी उपमा शकटचक्रनी एटले गाडांना पैडांनी छाजे छे. चालतां, शकटचक्र जेम फरतुं रहे छे तेम संसारमां प्रवेश करतां ते फरतां रुपे रहे छे. शकटचक्र जेम धरी विना चाली शकतुं नथी तेम संसार मिथ्यात्वरुपी धरी विना चाली शकतो नथी.

शकटचक्र जेम आरावडे करीने रह्युं छे तेम संसार शंका प्रमादादिक आराथी टक्यो छे. एम अनेक प्रकारथी शकटचक्रनी उपमा पण संसारने लागी शके छे.

एवी रीते संसारने जेटली अधोपमा आपो एटली थोडी छे. मुख्यपणे ए चार उपमा आपणे जाणी, हवे एमांथी तत्व लेवुं योग्यछे.

१. सागर जेम मजबुत नाव अने माहितगार नाविकथी तरीने पार पमाय छे तेम सद्धर्मरुपी नाव अने सद्गुरुरुपी नाविकथी संसारसागर पार पामी शकाय छे. सागरमां जेम डाह्या पुरुषोए निर्विघ्न रस्तो शोधी काढ्यो होय छे तेम जिनेश्वर भगवाने तत्वज्ञानरुप निर्विघ्न उत्तम राह बताव्यो छे.

२. अग्नि जेम सर्वेने भक्ष करी जाय छे, परंतु पाणीथी बुझाइ जाय छे तेम वैराग्यजळथी संसारअग्नि बुझवी शकाय छे.

३. अंधकारमां जेम दीवो लइ जवाथी प्रकाश थतां, जोइ शकाय छे तेम तत्वज्ञानरुपी निर्बुज दीवो संसाररुपी अंधकारमां प्रकाश करी सत्य वस्तु बतावे छे.

४. शकटचक्र जेम बळद विना चाली शकतुं नथी तेम संसारचक्र राग, द्वेष विना चाली शकतुं नथी.

एम ए संसारदरदनुं निवारण उपमावडे अनुपानादि प्रतिकार साथे कह्युं. ते आत्महितैषिए निरंतर मनन करवुं अने बीजाने बोधवुं.

शिक्षापाठ २१ बार भावना.

वैराग्यनी, अने तेवा आत्महितैषि विषयोनी सुद्रढता थवा माटे बार भावना चिंतववानुं तत्वज्ञानीओ कहे छे.

१. शरीर, वैभव, लक्ष्मी, कुटुंब परिवारादिक सर्व विनाशी छे;

जीवनो मूळ धर्म अविनाशी छे एम चिंतववुं ते पहेली अनित्यभावना.

२. संसारमां मरण समये जीवने शरण राखनार कोई नथी, मात्र एक शुभ धर्मनुंज शरण सत्य छे एम चिंतववुं ते बीजी अशरण भावना.

३. आ आत्माए संसारसमुद्रमां पर्यटन करतां करतां सर्व भव कीधा छे, ए संसारजंजीरथी हुं क्यारे छुटीश ? ए संसार मारो नथी, हुं मोक्षमयि छुं एम चिंतववुं ते त्रीजी संसार भावना.

४. आ मारो आत्मा एकलो छे; ते एकलो आव्यो छे, एकलो जशे; पोतानां करेलां कर्म एकलो भोगवशे एम चिंतववुं ते चोथी एकत्वभावना.

५. आ संसारमां कोइ कोइनुं नथी एम चिंतववुं ते पांचमी अन्यत्वभावना.

६. आ शरीर अपवित्र छे, मळमूत्रनी खाण छे, रोग जराने रहेवानुं धाम छे, ए शरीरथी हुं न्यारो छुं एम चिंतववुं ते छठी अशुचिभावना.

७. राग, द्वेष, अज्ञान, मिथ्यात्व इत्यादिक सर्व आश्रव छे एम चिंतववुं ते सातमी आश्रवभावना.

८. ज्ञान, ध्यानमां जीव प्रवर्त्तमान थइने नवां कर्म बांधे नहि एवी चिंतवना करवी ते आठमी सम्वरभावना.

९. ज्ञानसहित क्रिया करवी ते निर्जरानुं कारण छे एम चिंतववुं ते नवमी निर्जराभावना.

१०. लोकस्वरुपनुं उत्पत्ति, स्थिति, विनाशस्वरुप विचारवुं ते दशमी लोकस्वरुपभावना.

११. संसारमां भमतां आत्माने सम्यक्ज्ञाननी प्रासादी प्राप्त थवी दुर्ल्लभ छे, वा सम्यक्ज्ञान पाम्यो तो चारित्र सर्व विरति

परिणामरुप धर्म पामवो दुर्लभ छे एवी चिंतवना ते अग्यारमी बोधदुर्लभभावना.

१२. धर्मना उपदेशक तथा शुद्ध शास्त्रना बोधक एवा गुरु अने एवुं श्रवण मळवुं दुर्लभ छे एवी चिंतवना ते बारमी धर्म दुर्लभभावना.

आ बार भावनाओ मननपुर्वक निरंतर विचारवाथी सत्पुरुषो उत्तम पदने पाम्या छे, पामे छे अने पामशे.

शिक्षापाठ २२ कामदेव श्रावक.

महावीर भगवानना समयमां द्वादशव्रत्तने विमळ भावथी धारण करनार, विवेकी अने निर्ग्रंथवचनानुरक्त कामदेव नामना एक श्रावक तेओना शिष्य हता. सुधर्मा सभामां इंद्रे एक वेळा कामदेवनी धर्मअचळतानी प्रशंसा करी. एवामां त्यां एक तुच्छ बुद्धिवान देव बेठो हतो तेणे एवी सुद्रढतानो अविश्वास बताव्यो अने कह्युं के ज्यांसुधी परिषह पड्या न होय त्यांसुधी बधाय सहनशील अने धर्मद्रढ जणाय. आ मारी वात हुं एने चळावी आपीने सत्य करी देखाडुं. धर्मद्रढ कामदेव ते वेळा कायोत्सर्गमां लीन हता. देवताए प्रथम हाथीनुं रुप वैक्रिय कर्युं अने पछी कामदेवने खुब गुंद्या तोपण ते अचळ रह्या, एटले मुशळ जेवुं अंग करीने काळा वर्णना सर्प थइने भयंकर फुंकार कर्या, तोय कामदेव कायोत्सर्गथी लेश चळ्या नहि; पछी अट्टहास्य करता राक्षसनो देह धारण करीने अनेक प्रकारना परिषह कर्या, तोपण कामदेव कायोत्सर्गथी चळ्या नहि. सिंह वगेरेनां अनेक भयंकर रुप कर्या तोपण कायोत्सर्गमां लेश हीनता कामदेवे आणी नहि. एम रात्रिना चारे पहोर देवताए कर्या कर्युं, पण ते पोतानी धारणामां

फाव्यो नहि. पछी ते देवे अवधिज्ञानना उपयोगवडे जोयुं तो कामदेवने मेरुना शिखरनी पेरे अडोळ रह्या दीठा. कामदेवनी अद्भूत निश्चलता जाणी तेने विनयभावथी प्रणाम करी पोतानो दोष क्षमावीने ते देवता स्वस्थानके गयो.

कामदेव श्रावकनी धर्मद्रढता एवो बोध करे छे के सत्यधर्म अने सत्यप्रतिज्ञामां परम द्रढ रहेवुं, अने कायोत्सर्ग आदि जेम बने तेम एकाग्र चित्तथी अने सुद्रढताथी निर्दोष करवां. चळविचळ भावथी कायोत्सर्गादि बहु दोषयुक्त थाय छे. पाई जेवा द्रव्यलाभ माटे धर्मशास्त्र काढनारथी धर्ममां द्रढता क्यांथी रही शके? अने रही शके तो केवी रहे! ए विचारतां खेद थाय छे.

शिक्षापाठ २३ सत्य.

सामान्य कथनमां पण कहेवाय छे के सत्य ए आ जगत्नुं धारण छे. अथवा सत्यने आधारे आ जगत् रह्युं छे. ए कथनमांथी एवी शिक्षा मळे छे के धर्म, नीति, राज अने व्यवहार ए सत्यवडे प्रवर्त्तन करी रह्यां छे अने ए चारे न होय तो जगत्नुं रुप केवुं भयंकर होय? ए माटे सत्य ए जगत्नुं धारण छे एम कहेवुं ए कंइ अतिशयोक्ति जेवुं के नहि मानवा जेवुं नथी.

वसुराजानुं एक शब्दनुं असत्य बोलवुं केटलुं दुःखदायक थयुं हतुं ते प्रसंग विचार करवा माटे अहीं कहीशुं.

वसुराजा, नारद अने पर्वत ए त्रणे एक गुरु पासेथी विद्या भण्या हता. पर्वत अध्यापकनो पुत्र हतो; अध्यापके काळ कर्यो. एथी पर्वत तेनी मा सहीत वसुराजाना दरबारमां आवी रह्यो हतो. एक रात्रे तेनी मा पासे बेठी छे; अने पर्वत तथा नारद शास्त्रा-

भ्यास करे छे. एमां एक वचन पर्वत एवुं बोल्यो के 'अजाहोतव्यं.' त्यारे नारदे पूछ्युं अज ते शुं पर्वत? पर्वते कह्युंः 'अज' ते 'बोकडो.' नारद बोल्योः आपणे त्रणे जण तारा पिता कने भणता हता त्यारे तारा पिताए तो 'अज' ते त्रण वर्षनी 'त्रीहि' कही छे; अने तुं अवळुं शा माटे कहे छे? एम परस्पर वचनविवाद वध्यो. त्यारे पर्वते कह्युंः आपणने वसुराजा कहे ते खरुं. ए वातनी नारदे हा कही, अने जीते तेने माटे अमुक सरत करी. पर्वतनी मा जे पासे बेठी हती तेणे आ सांभळ्युं. 'अज' एटले 'त्रीहि' एम तेने पण याद हतुं; सरतमां पोतानो पुत्र हारशे एवा भयथी पर्वतनी मा रात्रे राजा पासे गइ अने पूछ्युंः राजा, 'अज' एटले शुं? वसुराजाए संबंधपूर्वक कह्युं. 'अज' एटले 'त्रीहि.' त्यारे पर्वतनी माए राजाने कह्युंः मारा पुत्रथी 'बोकडो' कहेवायो छे माटे तेनो पक्ष करवो पडशे; तमने पूछवा माटे तेओ आवशे. वसुराजा बोल्योः हुं असत्य केम कहुं? माराथी ए बनी शके नहि. पर्वतनी माए कह्युं, पण जो तमे मारा पुत्रनो पक्ष नहीं करो तो तमने हुं हत्या आपीश. राजा विचारमां पडी गयो के सत्यवडे करीने हुं मणिमय सिंहासनपर अद्धर बेसुं छुं. लोकसमुदायने न्याय आपु छुं. लोक पण एम जाणे छे के राजा सत्य गुणे करीने सिंहासनपर अंतरिक्ष बेसे छे. हवे केम करवुं? जो पर्वतनो पक्ष न करुं तो ब्राह्मणी मरे छे; ए वळी मारा गुरुनी स्त्री छे. न चालतां छेवटे राजाए ब्राह्मणीने कह्युंः तमे भले जाओ; हुं पर्वतनो पक्ष करीश. आवो निश्चय करावीने पर्वतनी मा घेर आवी. प्रभाते नारद, पर्वत अने तेनी मा विवाद करतां राजा पासे आव्यां. राजा अजाण थई पूछवा लाग्योः शुं छे पर्वत? पर्वते कह्युंः राजाधिराज! अज ते शुं? ते कहो. राजाए नारदने पुछ्युं, तमे शुं कहोछो? नारदे कह्युंः 'अज' ते त्रण वर्षनी 'त्रीही' तमने क्यां नथी सांभळतुं? वसुराजा बोल्योः 'अज'

एटले 'बोकडो' पण 'व्रीही' नहि. तेज वेळा देवताए सिंहासनथी उछाळी हेठो नाख्यो; वसु काळपरिणाम पामी नरके गयो.

आ उपरथी सामान्य मनुष्योए सत्य, तेमज राजाए न्यायमां अपक्षपात अने सत्य बन्ने ग्रहण करवायोग्य छे ए मुख्य बोध मळे छे.

जे पांच महाव्रत भगवाने प्रणीत कर्यां छे; तेमांना प्रथम महाव्रतनी रक्षाने माटे बाकीनां चार व्रत वाडरुपे छे, अने तेमां पण पहेली वाड ते सत्य महाव्रत छे. ए सत्यना अनेक भेद सिद्धांतथी श्रुत करवा अवश्यना छे.

शिक्षापाठ २४ सत्संग.

सत्संग ए सर्व सुखनुं मूळ छे. सत्संगनो लाभ मळ्यो के तेना प्रभाववडे वांछित सिद्धि थइज पडी छे. गमे तेवा पवित्र थवाने माटे सत्संग श्रेष्ट साधन छे. सत्संगनी एक घडी जे लाभ दे छे ते कुसंगनां एक कोट्यावधि वर्ष पण लाभ न दई शकतां अधोगतिमय महा पापो करावे छे, तेमज आत्माने मलिन करे छे. सत्संगनो सामान्य अर्थ एटलो छे के उत्तमनो सहवास. ज्यां सारी हवा नथी आवती त्यां रोगनी वृद्धि थाय छे; तेम ज्यां सत्संग नथी त्यां आत्मरोग वधे छे. दुर्गंधथी कंटाळीने जेम नाके वस्त्र आडुं दइए छीए तेम कुसंगथी सहवास बंध करवानुं अवश्यनुं छे. संसार ए पण एक प्रकारनो संग छे, अने ते अनंत कुसंगरुप तेमज दुःखदायक होवाथी त्यागवा योग्य छे. गमे ते जातनो सहवास होय परंतु जे वडे आत्मसिद्धि नथी ते सत्संग नथी. आत्माने सत्य रंग चढावे ते सत्संग. मोक्षनो मार्ग बतावे ते मैत्रि. उत्तम शास्त्रमां निरंतर एकाग्र रहेवुं ते पण सत्संग छे, सत्पुरुषोनो समा-

गम ए पण सत्संग छे. मलिन वस्त्रने जेम साबु तथा जळ स्वच्छ करे छे तेम शास्त्रबोध अने सत्पुरुषोनो समागम, आत्मानी मलिनता टाळीने शुद्धता आपे छे. जेनाथी हमेशनो परिचय रही राग, रंग, गान, तान अने स्वादिष्ट भोजन सेवातां होय ते तमने गमे तेवो प्रिय होय तोपण निश्चय मानजो के ते सत्संग नथी पण कुसंग छे. सत्संगथी प्राप्त थयेलुं एक वचन अमूल्य लाभ आपे छे. तत्वज्ञानीओए मुख्य बोध एवो कर्यो छे के सर्व संग परित्याग करी, अंतरमां रहेला सर्व विकारथी पण विरक्त रही एकांतनुं सेवन करो. तेमां सत्संगनी स्तुति आवी जाय छे. केवळ एकांत तेतो ध्यानमां रहेवुं के योगाभ्यासमां रहेवुं ए छे, परंतु समस्वभाविनो समागम जेमांथी एकज प्रकारनी वर्त्तनतानो प्रवाह नीकळे छे ते, भावे एकज रुप होवाथी घणा माणसो छतां अने परस्परनो सहवास छतां ते एकांतरुपज छे, अने तेवी एकांत मात्र संतसमागममां रही छे. कदापि कोइ एम विचारशे के विषयीमंडळ मळे छे त्यां समभाव सरखी वृत्ति होवाथी एकांत कां न कहेवी? तेनुं समाधान तत्काळ छे के तेओ एक स्वभावि होता नथी. तेमां परस्पर स्वार्थ बुद्धि अने मायानुं अनुसंधान होय छे, अने ज्यां ए बे कारणथी समागम छे ते एक स्वभावि के निर्दोष होता नथी. निर्दोष अने समस्वभावि समागम तो परस्परथी शांत मुनीश्वरोनो छे; तेमज धर्मध्यान प्रशस्त अल्पारंभी पुरुषनो पण केटलेक अंशे छे. ज्यां स्वार्थ अने माया कपटज छे त्यां समस्वभावता नथी, अने ते सत्संग पण नथी. सत्संगथी जे सुख अने आनंद मळे छे ते अति स्तुतिपात्र छे. ज्यां शास्त्रोना सुंदर प्रश्नो थाय, ज्यां उत्तम ज्ञान ध्याननी सुकथा थाय, ज्यां सत्पुरुषोनां चरित्रपर विचार बंधाय, ज्यां तत्वज्ञानना तरंगनी लहरियो छूटे, ज्यां सरळ स्वभावथी सिद्धांत विचार चर्चाय, ज्यां मोक्षजन्य कथन-

पर पुष्कळ विवेचन थाय; एवो सत्संग ते महा दुर्लभ छे. कोइ एम कहे के सत्संग मंडळमां कोइ मायावि नहि होय ? तो तेनुं समाधान आ छेः–ज्यां माया अने स्वार्थ होय छे त्यां सत्संगज होतो नथी. राजहंसनी सभानो काग देखावे कदापि न कळाय तो अवश्य रागे कळाशे; मौन रह्यो तो मुखमुद्राए कळाशे. पण ते अंधकारमां जाय नहि. तेमज मायावियो सत्संगमां स्वार्थे जइने शुं करे ? त्यां पेट भर्यानी वात तो होय नहि. बे घडी त्यां जइ ते विश्रांति लेतो होय तो भले ले के जेथी रंग लागे. नहि तो बीजीवार तेनुं आगमन होय नहि. जेम पृथ्वीपर तराय नहि, तेम सत्संगथी बुडाय नहि. आवी सत्संगमां चमत्कृति छे. निरंतर एवा निर्दोष समागममां माया लइने आवे पण कोण ? कोइज दुर्भागी, अने ते पण असंभवित छे.

सत्संग ए आत्मानुं परम हितकारि औषध छे.

शिक्षापाठ २५ परिग्रहने संकोचवो.

जे प्राणीने परिग्रहनी मर्यादा नथी, ते प्राणी सुखी नथी. तेने जे मळ्युं ते ओछुं छे; कारण जेटलुं जाय तेटलांथी विशेष प्राप्त करवा तेनी इच्छा थाय छे. परिग्रहनी प्रबळतामां जे कंइ मळ्युं होय तेनुं सुख तो भोगवातुं नथी परंतु होय ते पण वखते जाय छे. परिग्रहथी निरंतर चळविचळ परिणाम अने पापभावना रहे छे; अकस्मात् योगथी एवी पापभावनामां आयुष्य पूर्ण थाय तो बहुधा अधोगतिनुं कारण थइ पडे. केवळ परिग्रह तो मुनिश्वरो त्यागी शके, पण गृहस्थो एनी अमुक मर्यादा करी शके. मर्यादा थवाथी उपरांत परिग्रहनी उत्पत्ति नथी, अने एथी करीने विशेष भावना पण बहुधा थती नथी, अने वळी जे मळ्युं छे तेमां संतोष राख-

वानी पृथा पडे छे; एथी सुखमां काळ जाय छे. कोण जाणे लक्ष्मी आदिकमां केवीए विचित्रता रही छे के जेम जेम लाभ थतो जाय छे तेम तेम लोभनी वृद्धि थती जाय छे. धर्म संबंधी केटलुंक ज्ञान छतां, धर्मनी द्रढता छतां पण परिग्रहना पाशमां पडेलो पुरुष कोइकज छूटी शके छे. वृत्ति एमांज लटकी रहे छे; परंतु ए वृत्ति कोइ काळ सुखदायक के आत्महितैषि थई नथी. जेणे एनी टुंकी मर्यादा करी नहि; ते बहोळा दुःखना भोगी थया छे.

छ खंड साधी आज्ञा मनावनार राजाधिराज, चक्रवर्त्ती कहेवाय छे. ए समर्थ चक्रवर्त्तीमां सुभुम नामे एक चक्रवर्ती थइ गयो छे. एणे छ खंड साधी लीधा एटले चक्रवर्त्ति-पदथी ते मनायो; पण एटलेथी एनी मनोवांच्छा तृप्त न थई; हजु ते तरस्यो रह्यो. एटले घातकी खंडना छ खंड साधवा एणे निश्चय कर्यो. बधा चक्रवर्त्ती छ खंड साधे छे, अने हुं पण एटलाज साधु तेमां महत्ता शानी? बार खंड साधवाथी चिरंकाळ हुं नामांकित थइश. समर्थ आज्ञा जीवनपर्यंत ए खंडोपर मनावी शकीश, एवा विचारथी समुद्रमां चर्मरत्न मूक्युं; ते उपर सर्व सैन्यादिकनो आधार रह्यो हतो, चर्मरत्नना एक हजार देवता सेवक कहेवाय छे, तेमां प्रथम एके विचार्युं के कोण जाणे केटलांय वर्षे आमांथी छूटको थशे? माटे देवांगनाने तो मळी आवुं एम धारी ते चाल्यो गयो. पछी बीजो गयो, पछी त्रीजो गयो; अने एम करतां करतां हजारे चाल्या गया. त्यारे चर्मरत्न बूडयुं. अश्व, गज अने सर्व सैन्यसहित सुभुम नामनो ते चक्रवर्ती बूड्यो; पापभावनामां ने पापभावनामां मरीने ते अनंत दुःखथी भरेलो सातमी तमतमप्रभा नर्कने विषे जइने पड्यो. जुओ! छ खंडनुं आधिपत्य तो भोगववुं रह्युं परंतु अकस्मात् अने भयंकर रीते परिग्रहनी प्रीतिथी ए चक्रवर्तीनुं मृत्यु थयुं, तो पछी बीजा माटे तो कहेवुंज शुं? परिग्रह ए पापनुं मूळ

छे, पापनो पिता छे, अन्य एकादशव्रतने महा दोष दे एवो एनो स्वभाव छे. ए माटे थइने आत्महितैषिए जेम बने तेम तेनो त्याग करी मर्यादापूर्वक वर्त्तन करवुं.

शिक्षापाठ २६ तत्व समजवुं.

शास्त्रोनां शास्त्रो मुखपाठे होय एवा पुरुषो घणा मळी शके, परंतु जेणे थोडां वचनोपर प्रौढ अने विवेकपूर्वक विचार करी शास्त्र जेटलुं ज्ञान हृदयगत कर्युं होय तेवा मळवा दुर्लभ छे. तत्वने पहोंची जवुं ए कंइ नानी वात नथी. कूदीने दरियो ओळंगी जवो छे.

अर्थ एटले लक्ष्मी, अर्थ एटले तत्व अने अर्थ एटले शब्दनुं बीजुं नाम. आवा अर्थशब्दना घणा अर्थ थाय छे. पण अर्थ एटले तत्व ए विषयपर अहीं आगळ कहेवानुं छे. जेओ निर्ग्रंथप्रवचनमां आवेलां पवित्र वचनो मुखपाठे करे छे; ते तेओना उत्साहबळे सत्फळ उपार्जन करे छे; परंतु जो तेनो मर्म पाम्यो होय तो एथी ए सुख आनंद, विवेक अने परिणामे महद् भूतफळ पामे छे. अभणपुरुष सुंदर अक्षर अने ताणेला मिथ्या लीटा ए बेना भेदने जेटलुं जाणे छे तेटलुंज मुखपाठी अन्य ग्रंथ विचार अने निर्ग्रंथप्रवचनने भेदरुप माने छे. कारण तेणे अर्थपूर्वक निर्ग्रंथ वचनामृतो धार्यां नथी; तेम तेपर यथार्थ तत्वविचार कर्यो नथी. जो के तत्वविचार करवामां समर्थ बुद्धिप्रभाव जोइए छीए, तोपण कंइ विचार करी शके; पथ्थर पीगळे नहि तोपण पाणीथी पलळे; तेमज जे वचनामृतो मुखपाठे कर्यां होय, ते अर्थ सहित होय तो बहु उपयोगी थई पडे; नहि तो पोपटवाळुं राम नाम. पोपटने कोई परिचये रामनाम कहेतां शीखडावे; परंतु पोपटनी बला जाणे के राम ते दाडम के द्राक्ष. सामान्यार्थ समज्या वगर एवुं थाय छे. कच्छी वैश्योनुं द्रष्टांत एक

कहेवाय छे ते कंईक हास्ययुक्त छे खरुं; परंतु एमांथी उत्तम शिक्षा मळी शके तेम छे; एटले अहीं कही जउं छुं. कच्छना कोई गाममां श्रावकधर्म पाळता रायशी, देवशी अने खेतशी; एम त्रण नामधारी ओशवाळ रहेता हता. नियमित रीते तेओ संध्याकाळे, अने परोढिये प्रतिक्रमण करता हता. परोढिये रायशी अने संध्याकाळे देवशी प्रतिक्रमण करावता हता. रात्रि संबंधी प्रतिक्रमण रायशी करावतो, अने संबंधे 'रायशी पडिक्कमणुंठायमि' एम तेने बोलाववुं पडतुं; तेमज 'देवशीने देवशी पडिक्कमणुंठायमि' एम संबंध होवाथी बोलाववुं पडतुं. योगानुयोगे घणाना आग्रहथी एक दिवस संध्याकाळे खेतशीने बोलाववा बेसार्यो. खेतशीए ज्यां 'देवशी पडिक्कमणुंठायमि' एम आव्युं, त्यां 'खेतशी पडिक्कमणुंठायमि' ए वाक्यो लगावी दीधां! ए सांभळी बधा हास्यग्रस्त थया अने पूछयुं आमकां? खेतशी बोल्योः वळी आम ते केम? त्यां उत्तर मळ्यो के 'खेतशी पडिक्कमणुं ठायमि' एम तमे केम बोलो छो? खेतशीए कह्युंः हुं गरीब छुं एटले मारुं नाम आव्युं त्यां पाधरी तकरार लइ बेठा, पण रायशी अने देवशी माटे तो कोइ दिवस कोइ बोलता नथी. ए बन्ने केम 'रायशी पडिक्कमणुं ठायमि' अने 'देवशी पडिक्कमणुं ठायमि' एम कहे छे? तो पछी हुं 'खेतशी पडिक्कमणुं ठायमि' एम कां न कहुं? एनी भद्रिकताए तो बधाने विनोद उपजाव्यो. पछी अर्थनी कारणसहित समजण पाडी एटले खेतशी पोताना मुखपाठी प्रतिक्रमणथी शरमायो.

आ तो एक सामान्य वात छे, परंतु अर्थनी खुबी न्यारी छे. तत्वज्ञ तेपर बहु विचार करी शके. बाकी तो गोळ गळ्योज लागे तेम निर्ग्रंथवचनामृतो पण सत्फळज आपे. अहो! पण मर्म पामवानी वातनी तो बलीहारीज छे!

शिक्षापाठ २७ यत्ना.

जेम विवेक ए धर्मनुं मूळतत्व छे, तेम यत्ना ए धर्मनुं उपतत्व छे. विवेकथी धर्म तत्व ग्रहण कराय छे, तथा यत्नाथी ते तत्व शुद्ध राखी शकाय छे अने ते प्रमाणे प्रवर्त्तन करी शकाय छे. पांच समितिरुप यत्नो तो बहु श्रेष्ट छे, परंतु गृहाश्रमीथी ते सर्व भावे पाळी शकाती नथी; छतां जेटला भावांशे पाळी शकाय तेटला भावांशे पण असावधानीथी पाळी शकता नथी. जिनेश्वर भगवंते बांधेली स्थूल अने सूक्ष्म दया प्रत्ये ज्यां बेदरकारी छे, त्यां बहु दोषथी पाळी शकाय छे. ए यत्नानी न्यूनताने लीधे छे. उतावळी अने वेगभरी चाल, पाणी गळी तेनो संखाळो राखवानी अपूर्ण विधि, काष्टादिक इंधनना वगर खंचेर्ये, जोये उपयोग; अनाजमां रहेला सूक्ष्म जंतुओनी अपूर्ण तपास, पुंज्या प्रामाज्यां वगर रहेवा दीधेलां वासण, अस्वच्छ राखेला ओरडा, आंगणामां पाणीनुं ढोळवुं, एठनुं राखी मूकवुं, पाटला वगर धखधखती थाळी नीचे मूकवी. एथी पोताने आ लोकमां अस्वच्छता, अगवड, अनारोग्यता इत्यादिक फळ रुप थाय छे, अने परलोकमां दुःखदायी महापापनां कारण पण थइ पडे छे, ए माटे थइने कहेवानो बोध के चालवामां, बेसवामां, उठवामां, जमवामां अने बीजा हरेक प्रकारमां यत्नानो उपयोग करवो. एथी द्रव्य अने भावे बन्ने प्रकारे लाभ छे. चाल धीमी अने गंभिर राखवी घर स्वच्छ राखवां, पाणी विधि सहित गळाववुं, काष्टादिक इंधन खंखेरीने नांखवां ए कंइ आपणने अगवड पडतुं काम नथी; तेम तेमां विशेष वखत जतो नथी. एवा नियमो दाखल करी दीधा पछी पाळवा मुश्केल नथी. एथी बिचारा असंख्यात निरपराधी जंतुओ बचे छे.

प्रत्येक काम यत्नापूर्वकज करवुं ए विवेकी श्रावकनुं कर्त्तव्य छे.

शिक्षापाठ २८ रात्रिभोजन.

अहिंसादिक पंचमहाव्रत जेवुं भगवाने रात्रिभोजन त्याग व्रत कह्युं छे. रात्रिमां जे चार प्रकारना आहार छे ते अभक्षरुप छे. जे जातिनो आहारनो रंग होय छे ते जातिना तमस्काय नामना जीव ते आहारमां उत्पन्न थाय छे. रात्रिभोजनमां ए शिवाय पण अनेक दोष रह्या छे. रात्रे जमनारने रसोइने माटे अग्नि सळगाववो पडे छे, त्यारे समीपनी भींतपर रहेला निरपराधी सूक्ष्म जंतुओ नाश पामे छे. इंधनने माटे आणेलां काष्ठादिकमां रहेला जंतुओ रात्रिये नहि देखावाथी नाश पामे छे; तेमज सर्पना झेरनो, करोळियानी लाळनो अने मच्छरादिक जंतुनो पण भय रहे छे. वखते ए कुटुंबादिकने भयंकर रोगनुं कारण पण थइ पडे छे.

रात्रिभोजननो पुराणादिक मतमां पण सामान्य आचारने खातर त्याग कर्यो छे छतां तेओमां परंपरानी रुढीए करीने रात्रिभोजन पेसी गयुं छे. पण ए निषेधकतो छेज.

शरीरनी अंदर बे प्रकारनां कमळ छे. ते सूर्यना अस्तथी संकोच पामी जाय छे; एथी करीने रात्रिभोजनमां सूक्ष्म जीव भक्षणरुप अहित थाय छे; जे महा रोगनुं कारण छे. एवो केटलेक स्थळे आयुर्वेदनो पण मत छे.

सत्पुरुषो तो दिवस बे घडी रहे त्यारे वाळु करे, अने बे घडी दिवस चढ्यां पहेलां गमे ते जातनो आहार करे नहि. रात्रिभोजनने माटे विशेष विचार मुनिसमागमथी के शास्त्रथी जाणवो. ए संबंधी बहु सूक्ष्म भेदो जाणवा अवश्यना छे.

चारे प्रकारना आहार रात्रिने विषे त्यागवाथी महद्फळ छे. आ जिन वचन छे.

शिक्षापाठ २९ सर्व जीवनी रक्षा भाग १.

दया जेवो एके धर्म नथी. दया एज धर्मनुं स्वरुप छे. ज्यां दया नथी त्यां धर्म नथी. जगतितळमां एवा अनर्थकारक धर्म मतो पड्या छे के जेओ एम कहे छे के जीवने हणतां लेश पाप थतुं नथी; बहु तो मनुष्य देहनी रक्षा करो. तेम ए धर्ममतवाळा झनुनी, मदांध छे अने दयानुं लेश स्वरुप पण जाणता नथी. एओ जो पोतानुं हृदयपट प्रकाशमां मूकीने विचारे तो अवश्य तेमने जणाशे के एक सूक्ष्ममां सूक्ष्म जंतुने हणवामां पण महा पाप छे. जेवो मने मारो आत्मा प्रिय छे तेवो तेने पण तेनो आत्मा प्रिय छे. हुं मारा लेश व्यसन खातर के लाभ खातर एवा असंख्याता जीवोने बेधडक हणुं छुं. ए मने केटलुं बधुं अनंत दुःखनुं कारण थइ पडशे ? तेओमां बुद्धिनुं बीज पण नहि होवाथी तेओ आवो सात्विक विचार करी शकता नथी. पापमां ने पापमां निशदिन मग्न छे. वेद, अने वैष्णवादि पंथोमां पण सूक्ष्म दया संबंधी कंइ विचार जोवामां आवतो नथी. तोपण एओ केवळ दयाने नहि समजनार करतां घणा उत्तम छे. स्थूळ जीवोनी रक्षामां ए ठीक समज्या छे, परंतु ए सघळा करतां आपणे केवा भाग्यशाळी के ज्यां एक पूष्प पांखडी दूभाय त्यां पाप छे ए खरुं तत्व समज्या अने यज्ञयागादिक हिंसाथी तो केवळ विरक्त रह्या छीए ! बनता प्रयत्नथी जीव बचावीए छीए, वळी चाहिने जीव हणवानी आपणी लेश इच्छा नथी. अनंतकाय अभक्षथी बहु करी आपणे विरक्तज छीए. आ काळे ए सघळा पुन्यप्रताप सिद्धार्थ भूपाळना पुत्र महावीरनां कहेलां परमतत्वबोधना योगबळथी वध्यो छे. मनुष्यो रीद्धि पामे छे, सुंदर स्त्री पामे छे. आज्ञांकित पुत्र पामे छे, बहोळो

कुटुंबपरिवार पामे छे, मानप्रतिष्ठा तेमज अधिकार पामे छे. अने ते पामवां कंइ दुर्लभ नथी, परंतु खरुं धर्मतत्व के तेनी श्रद्धा के तेनो थोडो अंश पण पामवो महा दुर्लभ छे. ए रीद्धि इत्यादिक अविवेकथी पापनुं कारण थई अनंत दुःखमां लई जाय छे; परंतु आ थोडी श्रद्धाभावना पण उत्तम पद्विए पहोंचाडे छे. आम दयानुं सत्परिणाम छे. आपणे धर्मतत्वयुक्त कूळमां जन्म पाम्या छीए तो हवे जेम बने तेम विमळ दयामय वर्त्तनमां आववुं. वारंवार लक्षमां राखवुं के सर्व जीवनी रक्षा करवी. बीजाने पण एवोज युक्तिप्रयुक्तिथी बोध आपवो. सर्व जीवनी रक्षा करवा माटे एक बोधदायक उत्तम युक्ति बुद्धिशाळी अभयकुमारे करी हती ते आवता पाठमां हुं कहुं छुं; एमज तत्वबोधने माटे यौक्तिकन्यायथी अनार्य जेवा धर्ममतवादीओने शिक्षा आपवानो वखत मळे तो आपणे केवा भाग्यशाळी !

शिक्षापाठ ३० सर्व जीवनी रक्षा भाग २.

मगध देशनी राजगृही नगरीनो अधिराजा श्रेणिक एक वखते सभा भरीने बेठो हतो. प्रसंगोपात वातचितना प्रसंगमां मांसलुब्ध सामंतो हता ते बोल्या के हमणां मांसनी विशेष सस्ताई छे. आ वात अभयकुमारे सांभळी. ए उपरथी ए हिंसक सामंतोने बोध देवानो तेणे निश्चय कर्यो. सांजे सभा विसर्जन थई अने राजा अंतःपुरमां गया. त्यार पछी कर्त्तव्य माटे जेणे जेणे मांसनी वात उच्चारी हती तेने तेने घेर अभयकुमार गया. जेने घेर जाय त्यां सत्कार कर्या पछी तेओ पूछवा लाग्या के आपनुं परिश्रम लई अमारे घेर केम पधारवुं थयुं छे ? अभयकुमारे कह्युंः महाराजा ! श्रेणिकने अकस्मात् महा रोग उत्पन्न थयो छे. वैद्य भेळा करवाथी

तेणे कह्युं के कोमळ मनुष्यना काळजानुं सवा टांकभार मांस होय तो आ रोग मटे. तमे राजाना प्रियमान्य छो माटे तमारे त्यां ए मांस लेवा आव्यो छुं. प्रत्येक सामंते विचार्युं के काळजानुं मांस हुं मुवाविना, शी रीते आपी शकुं ? एथी अभयकुमारने पुछ्युं: महाराज, ए तो केम थई शके ? एम कही पछी अभयकुमारने केटलुंक द्रव्य पोतानी वात राजा आगळ नहि प्रसिद्ध करवा ते प्रत्येक सामंत आपता गया अने ते अभयकुमार लेता गया. एम सघळा सामंतोने घेर अभयकुमार फरी आव्या. सघळा मांस न आपी शक्या, अने आम तेमणे पोतानी वात छुपाववा द्रव्य आप्युं. पछी बीजे दिवसे ज्यारे सभा भेळी थइ त्यारे सघळा सामंतो पोताने आसने आवीने बेठा. राजा पण सिंहासनपर बिराज्या हता. सामंतो आवी आवीने गइ कालनुं कुशळ पूछवा लाग्या. राजा ए वातथी विस्मित थया. अभयकुमार भणी जोयुं एटले अभयकुमार बोल्या. महाराज काले आपना सामंतो सभामां बोल्या हता के हमणां मांस सस्तुं मळे छे. जेथी हुं तेओने त्यां लेवा गयो हतो, त्यारे सघळाए मने बहु द्रव्य आप्युं; परंतु काळजानुं सवा पैसाभार मांस न आप्युं. त्यारे ए मांस सस्तु के मोंघुं ? बधा सामंतो सांभळी शरमथी नीचुं जोइ रह्या. कोइथी कंइ बोली शकायुं नहि. पछी अभयकुमारे कह्युं: आ कंइ में तमने दुःख आपवा कर्युं नथी, परंतु बोध आपवा कर्युं छे. आपणने आपणा शरीरनुं मांस आपवुं पडे तो अनंतभय थाय छे, कारण आपणा देहनी आपणने प्रियता छे, तेम जे जीवनुं ते मांस हशे तेनो पण जीव तेने वहालो हशे. जेम आपणे अमूल्य वस्तुओ आपीने पण पोतानो देह बचावीए छीए तेम ते बिचारां पामर प्राणीओने पण होवुं जोइए. आपणे समजणवाळां, बोलतां चालतां प्राणी छइए. ते बिचारां अवाचक अने निराधार प्राणी छे. तेमने मोतरुप दुःख आपीए

ए केवुं पापनुं प्रबळ कारण छे. आपणे आ वचन निरंतर लक्षमां राखवुं के सर्व प्राणीने पोतानो जीव वहालो छे, अने सर्व जीवनी रक्षा करवी ए जेवो एके धर्म नथी. अभयकुमारना भाषणथी श्रेणिक महाराजा संतोषाया. सघळा सामंतो पण बोध पाम्या. तेओए ते दिवसथी मांस खावानी प्रतिज्ञा करी, कारण एक तो ते अभक्ष छे, अने कोइ जीव हणाया विना ते आवतुं नथी ए मोटो अधर्म छे; माटे अभय प्रधाननुं कथन सांभळीने तेओए अभयदानमां लक्ष आप्युं.

अभयदान आत्माना परम सुखनुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३१ प्रत्याख्यान.

पच्चखाण नामनो शब्द वारंवार तमारा सांभळवामां आव्यो छे. एनो मूळ शब्द प्रत्याख्यान छे; अने ते अमुक वस्तु भणी चित्त न करवुं एवा जे तत्व समजी हेतुपूर्वक नियम करवो तेने बदले वपराय छे. प्रत्याख्यान करवानो हेतु महा उत्तम अने सूक्ष्म छे. प्रत्याख्यान नहि करवाथी गमे ते वस्तु न खाओ के न भोगवो तोपण तेथी संवरपणुं नथी कारण के तत्वरुपे करीने इच्छानुं रुंधन कर्युं नथी. रात्रे आपणे भोजन न करता होइए, परंतु तेनो जो प्रत्याख्यानरुपे नियम न कर्यो होय तो ते फळ न आपे; कारण आपणी इच्छा खुल्ली रही. जेम घरनुं बारणुं उघाडुं होय अने श्वानादिक जनावर के मनुष्य चाल्युं आवे तेम इच्छानां द्वार खुल्लां होय तो तेमां कर्म प्रवेश करे छे. एटले के ए भणी आपणा विचार छूटथी जाय छे; ते कर्म बंधननुं कारण छे, अने जो प्रत्याख्यान होय तो पछी ए भणी द्रष्टि करवानी इच्छा थती नथी. जेम आपणे

जाणीए छीए के वांसानो मध्य भाग आपणाथी जोइ शकातो नथी, माटे ए भणी आपणे द्रष्टि पण करता नथी; तेम प्रत्याख्यान करवाथी आपणे अमुक वस्तु खवाय के भोगवाय तेम नथी एटले ए भणी आपणुं लक्ष स्वाभाविक जतुं नथी, ए कर्म आववाने आडो कोट थइ पडे छे. प्रत्याख्यान कर्या पछी विस्मृति वगेरे कारणथी कोइ दोष आवी जाय तो तेनां प्रायश्चित निवारण पण महात्माओए कह्यां छे.

प्रत्याख्यानथी एक बीजो पण मोटो लाभ छे; ते एके अमुक वस्तुओमांज आपणुं लक्ष रहे छे, बाकी बधी वस्तुओनो त्याग थइ जाय छे. जे जे वस्तु त्याग करी छे ते ते संबंधी पछी विशेष विचार, ग्रहवुं, मूकवुं के एवी कंइ उपाधि रहेती नथी. ए वडे मन बहु बहोळताने पामी नियमरूपी सडकमां चाल्युं जाय छे. अश्व जो लगाममां आवी जाय छे, तो पछी गमे तेवो प्रबळ छतां तेने धारेले रस्ते जेम लइ जवाय छे तेम मन ए नियमनी लगाममां आववाथी पछी गमे ते शुभ राहमां लइ जवाय छे; अने तेमां वारंवार पर्यटन करावथी ते एकाग्र, विचारशील अने विवेकी थाय छे. मननो आनंद शरीरने पण निरोगी करे छे. वळी अभक्ष्य, अनंतकाय, परस्त्रीयादिक नियम कर्याथी पण शरीर निरोगी रही शके छे. मादक पदार्थो मनने अवळे रस्ते दोरे छे, पण प्रत्याख्यानथी मन त्यां जतां अटके छे; एथी ते विमळ थाय छे.

प्रत्याख्यान ए केवी उत्तम नियम पाळवानी प्रतिज्ञा छे ते आ उपरथी तमे समज्या हशो. विशेष सद्गुरु मुखथी अने शास्त्रावलोकनथी समजवा हुं बोध करुं छुं.



शिक्षापाठ ३२ विनयवडे तत्वनी सिद्धि छे.

राजगृही नगरीनां राज्यासनपर ज्यारे श्रेणिक राजा विराजमान हता, त्यारे ते नगरीमां एक चंडाळ रहेतो हतो. एक वखते ए चंडाळनी स्त्रीने गर्भ रह्यो, त्यारे तेने केरी खावानी इच्छा उत्पन्न थइ. तेणे ते लावी आपवा चंडाळने कह्युं. चंडाळे कह्युंः आ केरीनो वखत नथी, एटले मारो उपाय नथी. नहि तो हुं गमे तेटले उंचे होय त्यांथी मारी विद्यानां बळवडे करीने लावी तारी इच्छा सिद्ध करुं. चंडाळणीए कह्युंः राजानी महाराणीना बागमां एक अकाळिक केरी आपनार आंबो छे. तेपर अत्यारे केरीओ लची रही हशे, माटे त्यां जइने ए केरी लावो. पोतानी स्त्रीनी इच्छा पुरी पाडवा चंडाळ ते बागमां गयो. गुप्त रीते आंबा समीप जई मंत्र भणीने तेने नमाव्यो, अने केरी लीधी. बीजा मंत्रवडे करीने तेने हतो एम करी दीधो. पछी ते घेर आव्यो अने तेनी स्त्रीनी इच्छा माटे निरंतर ते चंडाळ विद्यावळे त्यांथी केरी लाववा लाग्यो. एक दिवसे फरतां फरतां माळीनी द्रष्टि आंबा भणी गई. केरीओनी चोरी थयेली जोईने तेणे श्रेणिकराजाना आगळ नम्रतापूर्वक जइने कह्युं. श्रेणिकनी आज्ञाथी अभयकुमार नामना बुद्धिशाळी प्रधाने युक्तिवडे ते चंडाळने शोधी काढ्यो. तेने पोताना आगळ तेडावी पूछयुंः एटलां बधां माणसो बागमां रहे छे छतां तुं केवी रीते चढीने ए केरी लई गयो के ए वात कळवामां पण न आवी? चंडाळे कह्युंः आप मारो अपराध क्षमा करजो. हुं साचुं बोली जउं छुं के मारी पासे एक विद्या छे, तेना योगथी हुं ए केरीओ लइ शक्यो. अभयकुमारे कह्युंः माराथी क्षमा न थइ शके, परंतु महाराजा श्रेणिकने ए विद्या तुं आप तो तेओने एवी विद्या लेवानो अभिलाष होवाथी तारा उपकारना बदलामां हुं अपराध क्षमा

करावी शकुं. चंडाळे एम करवानी हा कही. पछी अभयकुमारे चंडाळने श्रेणिकराजा ज्यां सिंहासनपर बेठा हता त्यां लावीने सामो उभो राख्यो, अने सघळी वात राजाने कही बतावी. ए वातनी राजाए हा कही. चंडाळे पछी सामा उभा रही थरथरते पगे श्रेणिकने ते विद्यानो बोध आपवा मांड्यो, पण ते बोध लाग्यो नहि. झडपथी उभा थइ अभयकुमार बोल्याः महाराज! आपने जो ए विद्या अवश्य शीखवी होय तो सामा आवी उभा रहो, अने एने सिंहासन आपो. राजाऐ विद्या लेवा खातर एम कर्युं तो तत्काळ विद्या साध्य थइ.

आ वात मात्र बोध लेवाने माटे छे. एक चंडाळनो पण विनय कर्या वगर श्रेणिक जेवा राजाने विद्या सिद्ध न थइ, तो तेमांथी तत्व ए ग्रहण करवानुं छे के सद्विद्याने साध्य करवा विनय करवो अवश्यनो छे. आत्मविद्या पामवा निर्ग्रंथगुरुनो जो विनय करीए तो केवुं मंगळदायक थाय!

विनय ए उत्तम वशीकरण छे. उत्तराध्ययनमां भगवाने विनयने धर्मनुं मूळ कही वर्णव्यो छे. गुरुनो, मुनिनो, विद्वाननो, मातापितानो अने पोताथी वडानो विनय करवो ए आपणी उत्तमतानुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३३ सुदर्शन शेठ.

प्राचीनकाळमां शुद्ध एक पत्नीव्रतने पाळनारा असंख्य पुरुषो थइ गया छे; एमांथी संकट सही नामांकित थयेलो सुदर्शन नामनो एक सत्पुरुष पण छे. ए धनाढ्य सुंदर मुखमुद्रावाळो कांतिमान अने मध्य वयमां हतो. जे नगरमां ते रहेतो हतो, ते नगरना

राज्यदरबार आगळथी कंइ कामप्रसंगने लीधे तेने नीकळवुं पड्युं. ते वेळा राजानी अभया नामनी राणी पोताना आवासना गोखमां बेठी हती. त्यांथी सुदर्शन भणी तेनी द्रष्टि गइ. तेनुं उत्तम रुप अने काया जोइने तेनुं मन ललचायुं. एक अनुचरी मोकलीने कपटभावथी निर्मळ कारण बतावीने सुदर्शनने उपर बोलाव्यो. केटलाक प्रकारनी वातचित कर्या पछी अभयाए सुदर्शनने भोग भोगववा संबंधीनुं आमंत्रण कर्युं. सुदर्शने केटलोक उपदेश आप्यो तोपण तेनुं मन शांत थयुं नहि. छेवटे कंटाळीने सुदर्शने युक्तिथी कह्युंः बहेन, हुं पुरुषत्वमां नथी! तोपण राणीए अनेक प्रकारना हावभाव कर्या. ए सघळी कामचेष्टाथी सुदर्शन चळ्यो नहि, एथी कंटाळी जइने राणीए तेने जतो कर्यो.

एक वार ए नगरमां उजाणी हती, तेथी नगर बहार नगरजनो आनंदथी आम तेम भमता हता. धामधुम मची रही हती. सुदर्शन शेठना छ देवकुमार जेवा पुत्रो पण त्यां आव्या हता. अभया राणी कपिला नामनी दासी साथे ठाठमाठथी त्यां आवी हती. सुदर्शनना देवपूतळां जेवा छ पुत्रो तेना जोवामां आव्या, कपिलाने तेणे पूछयुंः आवा रम्य पुत्रो कोना छे? कपिलाए सुदर्शन शेठनुं नाम आप्युं. नाम सांभळीने राणीनी छातीमां कटार भोकाइ; तेने कारी घा वाग्यो. सघळी धामधुम वीती गया पछी माया कथन गोठवीने अभयाए अने तेनी दासीए मळी राजाने कह्युंः तमे मानता हशो के मारा राज्यमां न्याय अने नीति वर्ते छे, दुर्जनोथी मारी प्रजा दुःखी नथी; परंतु ते सघळुं मिथ्या छे. अंतःपुरमां पण दुर्जनो प्रवेश करे त्यां सुधी हजु अंधेर छे! तो पछी बीजां स्थळ माटे पूछवुं पण शुं? तमारा नगरना सुदर्शन नामना शेठे मारी कने भोगनुं आमंत्रण कर्युं. नहि कहेवा योग्य कथनो मारे सांभळवां पड्यां; पण में तेनो तिरस्कार कर्यो. आथी विशेष

अंधारुं कयुं कहेवाय ? घणा राजा मूळ कानना काचा होय छे ए वात जाणे बहु मान्य छे, तेमां वळी स्त्रीनां मायावी मधुरां वचन शुं असर न करे ? ताता तेलमां टाढां जळ जेवां वचनथी राजा क्रोधायमान थया. सुदर्शनने शूळीए चढावी देवानी तत्काळ तेणे आज्ञा करी दीधी, अने ते प्रमाणे सघळुं थई पण गयुं. मात्र शूळीए सुदर्शन बेसे एटली वार हती.

गमे तेम हो, पण सृष्टिना दिव्य भंडारमां अजवाळुं छे, सत्यनो प्रभाव ढांक्यो रहेतो नथी. सुदर्शनने शूळीए बेसार्यो, के शूळी फीटीने तेनुं झळझळतुं सोनानुं सिंहासन थयुं अने देव दुंदुंभीना नाद थया; सर्वत्र आनंद व्यापी गयो. सुदर्शननुं सत्यशीळ विश्वमंडळमां झळकी उठयुं. सत्य शीळनो सदा जय छे.

शीयळ अने सुदर्शननी उत्तम द्रढता ए बन्ने आत्माने पवित्र श्रेणिए चढावे छे !

शिक्षापाठ ३४ ब्रह्मचर्य विषे सुभाषित.

दोहरा.

निरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान;
गळे काष्टनी पूतळी, ते भगवान समान. १

आ सघळा संसारनी, रमणी नायकरुप;
ए त्यागी, त्याग्युं बधुं, केवळ शोक स्वरुप. २

एक विषयने जीततां, जीत्यो सौ संसार;
नृपति जीततां जीतिये, दळ, पुरने अधिकार. ३

विषयरूप अंकूरथी, टळे ज्ञानने ध्यान;
लेश मदिरापानथी, छाके ज्यम अज्ञान. ४

जे नववाड विशुद्धथी, धरे शियळ सुखदाइ;
भव तेनो लव पछि रहे, तत्ववचन ए भाइ. ५

सुंदर शीयळसुरतरु, मन वाणी ने देह;
जे नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ले तेह. ६

पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिक ज्ञान;
पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान. ७

शिक्षापाठ ३५ नमस्कारमंत्र.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं;
नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं;
नमो लोए सव्वसाहुणं.

आ पवित्र वाक्योने निर्ग्रंथप्रवचनमां नवकार (नमस्कार) मंत्र के पंचपरमेष्टिमंत्र कहे छे.

अर्हत भगवंतना बार गुण, सिद्ध भगवंतना आठ गुण, आचार्यना छत्रीश गुण, उपाध्यायना पंचवीश गुण, अने साधुना सत्तावीश गुण मळीने एकसो आठ गुण थया. अंगुठा विना बाकीनी चार आंगळीओनां बार टेरवां थाय छे, अने एथी ए गुणोनुं चिंतवन करवानी योजना होवाथी बारने नवे गुणतां १०८ थाय छे. एटले नवकार एम कहेवामां साथे एवुं सूचवन रह्युं जणाय छे के हे भव्य ! तारां ए आंगळीनां टेरवांथी (नवकार) मंत्र नववार गण.—कार एटले करनार एम पण थाय छे. बारने नवे गुणतां जेटला थाय एटला गुणनो भरेलो मंत्र एम नवकार मंत्र तरीके एनो अर्थ थइ शके छे. पंचपरमेष्टि एटले आ सकळ जगत्मां पांच वस्तुओ परमोत्कृष्ट छे ते ते कयी कयी ?—तो कही बतावी के अरि-

र्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु, एने नमस्कार करवानो जे मंत्र ते परमेष्ठि मंत्र; अने पांच परमेष्ठिने साथे नमस्कार होवाथी पंचपरमेष्ठिमंत्र एवो शब्द थयो. आ मंत्र अनादिसिद्ध मनाय छे, कारण पंचपरमेष्ठि अनादिसिद्ध छे. एटले ए पांचे पात्रो आद्यरुप नथी प्रवाहथी अनादि छे, अने तेनो जपनार पण अनादिसिद्ध एथी ए जाप पण अनादिसिद्ध ठरे छे.

प्रश्न—ए पंचपरमेष्ठिमंत्र परिपूर्ण जाणवाथी मनुष्य उत्तम गतिने पामे छे एम सत्पुरुषो कहे छे ए माटे तमारुं शुं मत छे?

उत्तर—ए कहेवुं न्यायपूर्वक छे, एम हुं मानुं छुं.

प्रश्न—एने कयां कारणथी न्यायपूर्वक कही शकाय?

उत्तर—हा. ए तमने हुं समजावुं. मननी निग्रहता अर्थे एक तो सर्वोत्तम जगत्भूषणना सत्य गुणनुं ए चिंतवन छे. तत्वथी जोतां वळी अर्हतस्वरुप, सिद्धस्वरुप, आचार्यस्वरुप, उपाध्याय स्वरुप अने साधुस्वरुप एनो विवेकथी विचार करवानुं पण ए सूचवन छे; कारण के तेओ पूजवा योग्य शाथी छे? एम विचारतां एओनां स्वरुप, गुण इ० माटे विचार करवानी सत्पुरुषने तो खरी अगत्य छे. हवे कहो के ए मंत्र केटलो कल्याणकारक छे?

प्रश्नकार—सत्पुरुषो नमस्कारमंत्रने मोक्षनुं कारण कहे छे. ए आ व्याख्यानथी हुं पण मान्य राखुं छुं.

अर्हंत भगवंत, सिद्ध भगवंत, जाचार्य, उपाध्याय अने साधु एओनो अकेको प्रथमअक्षर लेतां "असिआउसा" एवुं महद्भूत वाक्य नीकळे छे. जेनुं 'ओं' एवुं योगबिंदुनुं स्वरुप थाय छे; माटे आपणे ए मंत्रनो अवश्य करीने विमळ भावथी जाप करवो.



शिक्षापाठ ३६ अनानुपूर्वि.

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

पिता—आवी जातनां कोष्टकथी भरेलुं एक नानुं पुस्तक छे ते तें जोयुं छे ?

पुत्र—हा पिताजी.

पिता—एमां आडा अवळा अंक मूक्या छे, तेनुं कांइ पण कारण तारा समजवामां छे ?

पुत्र—नहि पिताजी. मारा समजवामां नथी माटे आप ते कारण कहो.

पिता--पुत्र ! प्रत्यक्ष छे के मन ए एक बहु चंचळ चीज छे, जेने एकाग्र करवुं बहु बहु विकट छे. ते ज्यां सुधी एकाग्र थतुं नथी त्यां सुधी आत्ममलिनता जती नथी. पापना विचारो घटता नथी. ए एकाग्रता माटे बार प्रतिज्ञादिक अनेक महान साधनो भगवाने कह्यां छे. मननी एकाग्रताथी महा योगनी श्रेणिए चढवा माटे अने तेने केटलाक प्रकारथी निर्मळ करवा माटे सत्पुरुषो आ एक साधनरूप कोष्टकावलि करी छे. पंचपरमेष्टि मंत्रना पांच

अंक एमां पहेला मूक्या छे, अने पछी लोमविलोम स्वरुपमां लक्षबंध एना ए पांच अंक मूकीने भिन्न भिन्न प्रकारे कोष्टको कर्या छे. एम करवानुं कारण पण मननी एकाग्रता थईने निर्जरा करी शकाय ए छे.

पुत्र–पिताजी ! अनुक्रमे लेवाथी एम शा माटे न थइ शके ?

पिता–लोमविलोम होय तो ते गोठवतां जवुं पडे अने नाम संभारतां जवुं पडे. पांचनो अंक मूक्या पछी बेनो आंकडो आवे के 'नमो लोए सव्वसाहुणं' पछी–'नमो अरिहंताणं' ए वाक्य मूकीने 'नमो सिद्धाणं' ए वाक्य संभारवुं पडे. एम पुनः पुनः लक्षनी द्रढता राखतां मन एकाग्रताए पहोंचे छे. अनुक्रमबंध होय तो तेम थइ शकतुं नथी, कारण के विचार करवो पडतो नथी. ए सूक्ष्म वखतमां मन परमेष्टिमंत्रमांथी नीकळीने संसारतंत्रनी खटपटमां जइ पडे छे, अने वखते धर्म करतां धाड पण करी नाखे छे, जेथी सत्पुरुषोए अनानुपूर्विनी योजना करी छे. ते बहु सुंदर छे अने आत्मशांतिने आपनारी छे.

शिक्षापाठ ३७ सामायिक विचार भाग १.

आत्मशक्तिनो प्रकाश करनार, सम्यगूज्ञानदर्शननो उदय करनार, शुद्ध समाधिभावमां प्रवेश करावनार, निर्जरानो अमूल्य लाभ आपनार, रागद्वेषथी मध्यस्थ बुद्धि करनार एवुं सामायिक नामनुं शिक्षाव्रत छे. सामायिक शब्दनी व्युत्पत्ति समआय–इक ए शब्दोथी थाय छे. सम एटले रागद्वेषरहित मध्यस्थ परिणाम, आय एटले ते समभावनाथी उत्पन्न थतो ज्ञानदर्शन चारित्ररुप मोक्षमार्गनो लाभ, अने इक कहेतां भाव एम अर्थ थाय छे. एटले

जे वडे करीने मोक्षना मार्गनो लाभदायक भाव उपजे ते सामायिक. आर्त्त, अने रौद्र ए बे प्रकारनां ध्याननो त्याग करीने मन, वचन, कायाना पापभावने रोकीने विवेकी मनुष्यो सामायिक करे छे.

मनना पुद्गल तरंगी छे. सामायिकमां ज्यारे विशुद्ध परिणामथी रहेवुं योग्य छे त्यारे पण ए मन आकाश पातालना घाट घड्या करे छे. तेमज भूल, विस्मृति, उन्माद इत्यादिथी वचनकायामां पण दूषण आववाथी सामायिकमां दोष लागे छे. मन, वचन अने कायाना थईने बत्रीश दोष उत्पन्न थाय छे. दश मनना, दश वचनना अने बार कायाना एम बत्रीश दोष जाणवा अवश्यना छे. जे जाणवाथी मन सावधान राखी शकाय.

मनना दश दोष कहुं छुं.

१ अविवेकदोष–सामायिकनुं स्वरुप नहि जाणवाथी मनमां एवो विचार करे के आथी शुं फळ थवानुं हतुं ? आथी ते कोण तर्युं हशे ? एवा विकल्पनुं नाम अविवेकदोष.

२ यशोवांच्छादोष–पोते सामायिक करे छे एम बीजा मनुष्यो जाणे तो प्रशंसा करे एवी इच्छाए सामायिक करवुं ते यशोवांच्छादोष.

३ धनवांछादोष–धननी इच्छाए सामायिक करवुं ते धनवांच्छा दोष.

४ गर्वदोष–मने लोको धर्मि कहे छे अने हुं सामायिक पण तेवुंज करुं छुं ? एवो अध्यवसाय ते गर्वदोष.

५ भयदोष–हुं श्रावककुलमां जन्म्यो छुं, मने लोको मोटा तरीके मान आपे छे, अने जो सामायिक नहि करु तो कहेशे के आटली क्रिया पण नथी करतो; एम निंदाना भयथी सामायिक करे ते भयदोष.

६ निदानदोष–सामायिक करीने तेनां फळथी धन, स्त्री, पुत्रादिक मळवानुं इच्छे ते निदानदोष.

७ संशयदोष–सामायिकनुं फळ हशे के नहि होय? एवो विकल्प करे ते संशयदोष.

८ कषायदोष–सामायिक क्रोधादिकथी करवा बेसी जाय किंवा पछी क्रोध, मान, माया, लोभमां वृत्ति धरे ते कषायदोष.

९ अविनयदोष–विनय वगर सामायिक करे ते अविनयदोष.

१० अबहुमानदोष–भक्तिभाव अने उमंगपूर्वक सामायिक न करे ते अबहुमानदोष.

शिक्षापाठ ३८ सामायिक विचार भाग २.

मनना दश दोष कह्या हवे वचनना दश दोष कहीशुं.

१ कुबोलदोष–सामायिकमां कुवचन बोलवुं ते कुबोलदोष.

२ सहसात्कारदोष–सामायिकमां साहसथी अविचारपूर्वक वाक्य बोलवुं ते सहसात्कारदोष.

३ असदारोपणदोष–बीजाने खोटो बोध आदि आपवां ते असदारोपणदोष.

४ निरपेक्षदोष–सामायिकमां शास्त्रनी दरकार विना वाक्य बोले ते निरपेक्षदोष.

५ संक्षेपदोष–सूत्रना पाठ इत्यादिक टुंकामां बोली नाखे, यथार्थ उच्चार करे नहि ते संक्षेपदोष.

६ क्लेशदोष–कोईथी कंकाश करे ते क्लेशदोष.

७ विकथादोष–स्त्रियादि चार के सात प्रकारनी विकथा मांडी बेसे ते विकथादोष.

८ हास्यदोष–सामायिकमां कोइनी हांसी मश्करी करे ते हास्यदोष.

९ अशुद्धदोष–सामायिकमां सूत्रपाठ न्यूनाधिक अने अशुद्ध बोले ते अशुद्धदोष.

१० मुणमुणदोष–गडबडगोटाथी सामायिकमां सूत्रपाठ बोले जे पोते पण पूरुं मांड समजी शके ते मुणमुणदोष.

ए वचनना दश दोष कह्या, हवे कायाना बार दोष कहुं छुं.

१ अयोग्य आसनदोष–सामायिकमां पगपर पग चढावी बेसे, ते श्री गुरु आदि प्रत्ये अविनयरुपआसन ते अयोग्य आसनदोष.

२ चलासनदोष–डगडगते आसने बेसी सामायिक करे, किंवा वारंवार ज्यांथी उठवुं पडे तेवे आसने बेसे ते चलासनदोष.

३ चलद्रष्टिदोष–कार्योत्सर्गमां आंखो चंचळ राखे ए चल-द्रष्टिदोष.

४ सावद्यक्रियादोष–सामायिकमां कंइ पाप क्रिया के तेनी संज्ञा करे ते सावद्यक्रियादोष.

५ आलंबनदोष–भींतादिके ओठींगण दइ बेसे एथी त्यां बेठेला जंतुनो नाश थाय के तेने पीडा थाय तेमज पोताने प्रमादनी प्रवृत्ति थाय, ते आलंबनदोष.

६ आकुंचनप्रसारणदोष–हाथ पग संकोचे, लांबा करे ए आदि ते आकुंचनप्रसारणदोष.

७ आलसदोष–अंग मरडे, टचाका वगाडे ए आदि ते आलसदोष.

८ मोटनदोष–आंगळी वगेरे वांकी करी टचाका वगाडे ते मोटनदोष.

९ मलदोष--घरडा घरड करी सामायिकमां चल करी मेल खंखेरे ते मलदोष.

१० विमासणदोष--गळामां हाथ नाखी बेसे इ. ते विमासणदोष.

११ निद्रादोष--सामायिकमां उंघ आवे ते निद्रादोष.

१२ वस्त्रसंकोचन--सामायिकमां टाढ प्रमुखनी भीतिथी वस्त्रथी शरीर संकोचे ते.

ए बत्रीश दूषणरहित सामायिक करवुं. पांच अतिचार टाळवा.

शिक्षापाठ ३९ सामायिक विचार भाग ३.

एकाग्रता अने सावधानी विना ए बत्रीश दोषमांना अमुक दोष पण आवी जाय छे. विज्ञानवेत्ताओए सामायिकनुं जघन्य प्रमाण बे घडीनुं बांध्युं छे. ए व्रत सावधानीपूर्वक करवाथी परमशांति आपे छे. केटलाकनो ए बे घडीनो काळ ज्यारे जतो नथी त्यारे तेओ बहु कंटाळे छे. सामायिकमां नवराश लइने बेसवाथी काळ जाय पण क्यांथी ? आधुनिक काळमां सावधानीथी सामायिक करनारा बहुज थोडा छे. प्रतिक्रमण सामायिकनी साथे करवानुं होय छे त्यारे तो वखत जवो सुगम पडे छे. जो के एवा पामरो प्रतिक्रमण लक्षपूर्वक करी शकता नथी तोपण केवळ नवराश करतां एमां जरुर कंइक फेर पडे छे. जेओने सामायिक पण पुरुं आवडतुं नथी तेओ बीचारा सामायिकमां पछी बहु मुंझाय छे. केटलाक भारे कर्मियो ए अवसरमां व्यवहारना प्रपंचो पण घडी राखे छे. आथी सामायिक बहु दोषित थाय छे.

विधिपूर्वक सामायिक न थाय ए बहु खेदकारक अने कर्मनी बाहुल्यता छे. साठ घडीना अहोरात्र व्यर्थ चाल्या जाय छे. असं-

ख्याता दिवसथी भरेलां अनंता कालचक्र व्यतित करतां पण जे सार्थक न थयुं ते बे घडीना विशुद्ध सामायिकथी थाय छे. लक्षपूर्वक सामायिक थवा माटे तेमां प्रवेश कर्या पछी चार लोगस्सथी वधारे लोगस्सनो कायोत्सर्ग करी चित्तनी कंइक स्वस्थता आणवी. पछी सूत्रपाठ के उत्तम ग्रंथनुं मनन करवुं, वैराग्यनां उत्तम काव्यो बोलवां, पाछळनुं अध्ययन करेलुं स्मरण करी जवुं, नूतन अभ्यास थाय तो करवो. कोइने शास्त्राधारथी बोध आपवो; एम सामायिकी काळ व्यतित करवो. मुनिराजनो जो समागम होय तो आगमवाणी सांभळवी अने ते मनन करवी, तेम न होय अने शास्त्र परिचय न होय तो विचक्षण अभ्यासी पासेथी वैराग्यबोधक कथन श्रवण करवुं; किंवा कंइ अभ्यास करवो. ए सघळी योगवाइ न होय तो केटलोक भाग लक्षपूर्वक कायोत्सर्गमां रोकवो अने केटलोक भाग महापुरुषोनां चरित्रकथामां उपयोगपूर्वक रोकवो, परंतु जेम बने तेम विवेकथी अने उत्साहथी सामायिकीकाळ व्यतित करवो. कंइ साहित्य न होय तो पंच परमेष्टिमंत्रनो जापज उत्साहपूर्वक करवो. पण व्यर्थ काळ काढी नाखवो नहि. धीरजथी, शांतिथी अने यत्नाथी सामायिक करवुं. जेम बने तेम सामायिकमां शास्त्रपरिचय वधारवो.

साठ घडीना अहोरात्रिमांथी बे घडी अवश्य बचावी सामायिक तो सद्भावथी करवुं.

शिक्षापाठ ४० प्रतिक्रमणविचार.

प्रतिक्रमण एटले पाछुं फरवुं—फरीथी जोई जवुं एम एनो अर्थ थई शके छे. भावनी अपेक्षाए जे दिवसे जे वखते प्रतिक्रमण

करवानुं थाय; ते वखतनी अगाउ अथवा ते दिवसे जे जे दोष थया होय ते एक पछी एक अंतरात्मथी जोइ जवा अने तेनो पश्चाताप करी ते दोषथी पाछुं वळवुं तेनुं नाम प्रतिक्रमण कहेवाय.

उत्तम मुनियो अने भाविक श्रावको संध्याकाळे अने रात्रिना पाछळना भागमां दिवसे अने रात्रे एम अनुक्रमे थयेला दोषना पश्चाताप करे छे के तेनी क्षमापना इच्छे छे, एनुं नाम अहीं आगळ प्रतिक्रमण छे. ए प्रतिक्रमण आपणे पण अवश्य करवुं. कारण के आ आत्मा मन, वचन अने कायाना योगथी अनेक प्रकारनां कर्म बांधे छे. प्रतिक्रमण सूत्रमां एनुं दोहन करेलुं छे, जेथी दिवस रात्रमां थयेलां पापना पश्चाताप ते वडे थइ शके छे. शुद्धभाव वडे करी पश्चाताप करवाथी लेश पाप थतां परलोकभय अने अनुकंपा छूटे छे, आत्मा कोमळ थाय छे. त्यागवा योग्य वस्तुनो विवेक आवतो जाय छे. भगवत्साक्षीए अज्ञान आदि जे जे दोष विस्मरण थया होय तेनो पश्चाताप पण थई शके छे. आम ए निर्जरा करवानुं उत्तम साधन छे.

एनुं आवश्यक एवुं पण नाम छे. आवश्यक एटले अवश्य करीने करवा योग्य ए सत्य छे. ते वडे आत्मानी मलिनता खसे छे, माटे अवश्य करवा योग्यज छे.

सायंकाळ जे प्रतिक्रमण करवामां आवे छे तेनुं नाम 'देवसीयपडिक्कमण' एटले दिवस संबंधी पापनो पश्चाताप, अने रात्रिना पाछला भागमां प्रतिक्रमण करवामां आवे छे ते 'राइपडिक्कमण' कहेवाय छे. देवसीय अने राइ ए प्राकृत भाषाना शब्दो छे. पखवाडीए करवानुं प्रतिक्रमण ते पाक्षिक अने संवत्सरे करवानुं ते संवत्सारिक कहेवाय छे. सत्पुरुषोए योजनाथी बांधेलो ए सुंदर नियम छे.

केटलाक सामान्य बुद्धिमानो एम कहे छे के दिवस अने

रात्रिनुं सवारे प्रायश्चितरूप प्रतिक्रमण कर्युं होय तो कंइ खोटुं नथी परंतु ए कहेवुं प्रमाणिक नथी. रात्रिये अकस्मात् अमुक कारण आवी पडे के काळधर्म प्राप्त थाय तो दिवस संबंधी पण रही जाय.

प्रतिक्रमणसूत्रनी योजना बहु सुंदर छे. एनां मूळतत्व बहु उत्तम छे. जेम बने तेम प्रतिक्रमण धीरजथी, समजाय एवी भाषाथी, शांतिथी, मननी एकाग्रताथी अने यत्नापूर्वक करवुं.

शिक्षापाठ ४१ भीखारीनो खेद भाग १.

एक पामर भीखारी जंगलमां भटकतो हतो. त्यां तेने भूख लागी. एटले ते बिचारो लडथडीआं खातो खातो एक नगरमां एक सामान्य मनुष्यने घेर पहोंच्यो, त्यां जइने तेणे अनेक प्रकारनी आजीजी करी; तेना कालावालाथी करुणा पामीने ते गृहस्थनी स्त्रीए तेने घरमांथी जमतां वधेलुं मिष्टान्न आणी आप्युं. भोजन मळवाथी भीखारी बहु आनंद पामतो पामतो नगरनी बहार आव्यो, आवीने एक झाड तळे बेठो; त्यां जरा स्वच्छ करीने एक बाजुए अती जुनो थयेलो पोतानो जळनो घडो मूक्यो. एक बाजुए पोतानी फाटीतुटी मलिन गोदडी मूकी अने एक बाजुए पोते ते भोजन लइने बेठो. राजी राजी थतां एणे ते खाइने पुरुं कर्युं. पछी ओशिके एक पथ्थर मूकीने ते सुतो. भोजनना मदथी [illegible] तेनी आंखो मिंचाइ गइ. निद्रावश थयो एटले तेने एक स्वप्न आव्युं. पोते जाणे महा राजरिद्धिने पाम्यो छे, सुंदर वस्त्राभूषण धारण कर्यां छे, देश आखामां पोतानो विजयनो डंको वागी गयो छे, समीपमां तेनी आज्ञा अवलंबन करवा अनुचरो उभा थइ रह्या छे, आजुबाजु छडीदारो खमा खमा पोकारे छे, एक रमणिय महेलमां सुंदर पलंगपर तेणे शयन कर्युं छे, देवांगना

जेवी स्त्रीओ तेना पग चांपे छे, पंखाथी एक बाजुएथी पंखानो मंद मंद पवन ढोळाय छे, एवा स्वप्नामां तेनो आत्मा चढी गयो. ते स्वप्नाना भोग लेतां तेनां रोम उल्लसी गयां. एवामां मेघ महाराजा चढी आव्यो, विजळीना झबकारा थवा लाग्या. सूर्य बादळांथी ढंकाइ गयो, सर्वत्र अंधकार पथराइ गयो, मुशलधार वरसाद थशे एवुं जणायुं अने एटलामां गाजवीजथी एक प्रबळ कडाको थयो. कडाकाना अवाजथी भय पामीने ते पामर भीखारी बिचारो जागी गयो.

शिक्षापाठ ४२ भीखारीनो खेद भाग २.

जुए छे तो जे स्थळे पाणीनो खोखरो घडो पड्यो हतो ते स्थळे ते घडो पड्यो छे, ज्यां फाटी टुटी गोदडी पडी हती त्यांज ते पडी छे, पोते जेवां मलिन अने फाटेलां कपडां धारण कर्यां हतां तेवां ने तेवां ते वस्त्रो शरीर उपर छे. नथी तलभार वध्युं के नथी जवभार घट्युं, नथी ते देश के नथी ते नगरी, नथी ते महेल के नथी ते पलंग नथी ते चामरछत्र धरनारा के नथी ते छडीदारो नथी ते स्त्रीयो के नथी ते वस्त्रालंकारो, नथी ते पंखा के नथी ते पवन, नथी ते अनुचरो के नथी ते आज्ञा, नथी ते सुख विलास के नथी ते मदोन्मत्तता, भाइ तो पोते जेवा हता तेवा ने तेवा देखाया. एथी ते देखाव जोइने ते खेद पाम्यो. स्वप्नामां में मिथ्या आडंबर दीठो तेथी आनंद मान्यो. एमांनुं तो अहीं कशुए नथी. स्वप्नाना भोग भोगव्या नहि अने तेनुं परिणाम जे खेद ते हुं भोगवुं छुं. एम ए पामर जीव पश्चातापमां पडी गयो.

अहो भव्यो ! भीखारीनां स्वप्नां जेवां संसारनां सुख अनित्य छे. स्वप्नामां जेम ते भीखारीए सुख समुदाय दीठो अने आनंद

मान्यो तेम पामर प्राणीओ संसार स्वप्नाना सुखसमुदायमां आनंद माने छे. जेम ते सुख समुदाय जागृतिमां मिथ्या जणाया तेम ज्ञान प्राप्त थतां संसारनां सुख तेवां जणाय छे. स्वप्नाना भोग न भोगव्या छतां जेम भीखारीने खेदनी प्राप्ति थइ, तेम मोहांध प्राणीओ संसारनां सुख मानी बेसे छे, अने भोगव्या सम गणे छे. परंतु परिणाम खेद, दुर्गति अने पश्चाताप ले छे; ते चपळ अने विनाशी छतां स्वप्नाना खेद जेवुं तेनुं परिणाम रह्युं छे. ए उपरथी बुद्धिमान पुरुषो आत्महितने शोधे छे. संसारनी अनित्यतापर एक काव्य छे केः–

उपजाति.

विद्युतलक्ष्मी प्रभुता पतंग, आयुष्य तेतो जळना तरंग;
पुरंदरी चाप अनंगरंग, शुं राचिये त्यां क्षणनो प्रसंग !

विशेषार्थः–लक्ष्मी विजळी जेवी छे. विजळीनो झबकार जेम थइने ओलवाइ जाय छे तेम लक्ष्मी आवीने चाली जाय छे. अधिकार पतंगना रंग जेवो छे, पतंगनो रंग जेम चार दिवसनी चटकी छे तेम अधिकार मात्र थोडो काळ रही हाथमांथी जतो रहे छे. आयुष्य पाणीना मोजां जेवुं छे. पाणीनो हिलोळो आव्यो के गयो तेम जन्म पाम्या अने एक देहमां रह्या के न रह्या त्यां बीजा देहमां पडवुं पडे छे. कामभोग आकाशमां उत्पन्न थतां इंद्रनां धनुष्य वर्षाकाळमां थइने क्षणवारमां लय थई जाय छे, तेम योवनमां कामना विकार फळीभूत थई जरा वयमां जता रहे छे. टुंकामां हे जीव ! ए सघळी वस्तुओनो संबंध क्षणभर छे, एमां प्रेमबंधननी सांकळे बंधाईने शुं राचवुं ? तात्पर्य ए सघळां चपळ अने विनाशी छे, तुं अखंड अने अविनाशी छे, माटे तारा जेवी नित्य वस्तुने प्राप्त करे ! ए बोध यथार्थ छे.

शिक्षापाठ ४३ अनुपम क्षमा.

क्षमा ए अंतर्शत्रु जीतवामां खड्ग छे. पवित्र आचारनी रक्षा करवामां बख्तर छे. शुद्धभावे असह्य दुःखमां, समपरिणामथी क्षमा राखनार मनुष्य भवसागर तरी जाय छे.

कृष्ण वासुदेवना गजसुकुमार नामना नाना भाइ महासुरुपवान, सुकुमार मात्र बारवर्षनी वये भगवान् नेमिनाथनी पासेथी संसारत्यागी थइ स्मशानमां उग्र ध्यानमां रह्या हता. त्यारे तेओ एक अद्भुत क्षमामय चरित्रथी महासिद्धिने पामी गया ते अहीं कहुं छुं.

सोमल नामना ब्राह्मणनी सुरुपवर्णसंपन्न पुत्री जोडे गजसुकुमारनुं सगपण कर्युं हतुं. परतुं लग्न थया पहेलां गजसुकुमार तो संसार त्यागी गया. आथी पोतानी पुत्रीनुं सुख जवाना द्वेषथी ते सोमल ब्राह्मणने भयंकर क्रोध व्याप्यो. गजसुकुमारनो शोध करतो करतो ए स्मशानमां ज्यां महामुनि गजसुकुमार एकाग्र विशुद्धभावथी कायोत्सर्गमां छे त्यां आवी पहोंच्यो. कोमळ गजसुकुमारना माथापर चीकणी माटीनी वाड करी अने अंदर धखधखता अंगारा भर्या, इंधन पूर्युं एटले महा ताप थयो. एथी गजसुकुमारनो कोमळ देह बळवा मंड्यो एटले ते सोमल जतो रह्यो. ते वखतना गजसुकुमारना असह्य दुःखनुं वर्णन केम थई शके? त्यारे पण तेओ समभाव परिणाममां रह्या. किंचित् क्रोध के द्वेष एना हृदयमां जन्म पाम्यो नहि. पोताना आत्माने स्थितिस्थापक करीने बोध दीधो के जो! तुं एनी पुत्रीने परण्यो होत तो ए कन्यादानमां तने पाघडी आपत. ए पाघडी थोडा वखतमां फाटी जाय तेवी अने परिणामे दुखदायक थात. आ एनो बहु उपकार

थयो के ए पाघडी बदल एणे मोक्षनी पाघडी बंधावी. एवां विशुद्ध परिणामथी अडग्ग रही समभावथी असह्य वेदना सहीने तेओ सर्वज्ञ सर्वदर्शी थई अनंतजीवन सुखने पाम्या. केवी अनुपम क्षमा अने केवुं तेनुं सुंदर परिणाम ! तत्वज्ञानीओनां वचन छे के आत्मा मात्र स्वसद्भावमां आववो जोइए, अने ते आव्यो तो मोक्ष हथेळीमांज छे. गजसुकुमारनी नामांकित क्षमा केवो शुद्ध बोध करे छे !

शिक्षापाठ ४४ राग.

श्रमण भगवान् महावीरना अग्रेसर गणधर गौतमनुं नाम तमे बहुवार जाण्युं छे. गौतमस्वामीना बोधेला केटलाक शिष्यो, केवळज्ञान पाम्या छतां गौतम पोते केवळज्ञान पाम्या नहोता, कारण के भगवानमहावीरनां अंगोपांग, वर्ण, वाणीरुप इत्यादिपर हजु गौतमने मोह हतो. निर्ग्रंथप्रवचननो निष्पक्षपाती न्याय एवो छे के गमे ते वस्तुपरनो राग दुःखदायक छे. राग ए मोह अने मोह ए संसारज छे. गौतमना हृदयथी ए राग ज्यां सुधी खस्यो नहि त्यां सुधी तेओ केवळज्ञान पाम्या नहि. श्रमण भगवान ज्ञातपुत्र ज्यारे अनुपमयसिद्धिने पाम्या, त्यारे गौतम नगरमांथी आवता हता. भगवानना निर्वाण समाचार सांभळी तेओ खेद पाम्या. विरहथी तेओ अनुराग वचनथी बोल्याः हे महावीर ! तमे मने साथे तो न राख्यो परंतु संभार्योए नहि. मारी प्रीति सामी तमे द्रष्टि पण करी नहि ! आम तमने छाजतुं नहोतुं. एवा विकल्पो थतां थतां तेनो लक्ष फर्यो ने ते निरागश्रेणिए चढ्याः हुं बहु मूर्खता करुं छुं. ए वीतराग-निर्विकारी अने निरागी ते मारामां केम मोह राखे ? एनी शत्रु अने मित्रपर केवळ समान द्रष्टि हती ! हुं

ए निरागीनो मिथ्या मोह राखुं छुं. मोह संसारनुं प्रबळ कारण छे, एम विचारतां विचारतां तेओ शोक तजीने निरोगी थया. एटले अनंतज्ञान प्रकाशित थयुं, अने प्रांते निर्वाण पधार्या.

गौतम मुनिनो राग आपणने बहु सूक्ष्म बोध आपे छे. भगवाननो मोह गौतम जेवा गणधरने दुःखदायक थयो तो पछी संसारनो, ते वळी पामर आत्माओनो मोह केवुं अनंत दुःख आपतो हशे! संसाररुपी गाडीने राग अने द्वेष ए बे रुपी बळद छे. ए न होय तो संसारनुं अटकन छे. ज्यां राग नथी त्यां द्वेष नथी; आ मान्य सिद्धांत छे. राग तीव्र कर्मबंधननुं कारण छे, एना क्षयथी आत्मसिद्धि छे.

शिक्षापाठ ४५ सामान्य मनोर्थ.

सवैया.

मोहिनिभावविचार आधीन थइ, ना निरखुं नयने परनारी;
पत्थरतुल्य गणुं परवैभव, निर्मळ तात्विक लोभ समारी!
द्वादश व्रत अने दिनता धरि, सात्विक थाउं स्वरुप विचारी;
ए मुजनेम सदा शुभ क्षेमक, नित्य अखंड रहो भवहारी. १

ते त्रिशलातनये मन चिंतवि, ज्ञान विवेक विचार वधारुं;
नित्य विशोध करी नव तत्वनो, उत्तम बोध अनेक उच्चारुं;
संशय बीज उगे नहि अंदर, जे जिननां कथनो अवधारुं;
राज्य, सदा मुज एज मनोरथ, धार, थशे अपवर्ग उतारुं. २



शिक्षापाठ ४६ कपिलमुनि भाग १.

कौसांबी नामनी एक नगरी हती, त्यांना राजद [illegible] राज्यनां आ[illegible]षणरुप काश्यप नामनो एक शास्त्री रहेतो हतो. एनी स्त्रीनुं नाम श्रीदेवी हतुं, तेना उदरथी कपिल नामनो एक पुत्र जन्म्यो हतो. ते पंदर वर्षनो थयो त्यारे तेना पिता परधाम गया. कपिल लाडपाडमां उछरेलो होवाथी कंइ विशेष विद्वता पाम्यो नहोतो, तेथी एना पितानी जगो कोइ बीजा विद्वानने मळी. काश्यपशास्त्री जे पुंजी कमाइ गया हता ते कमावामां अशक्त एवा कपिले खाइने पुरी करी. श्रीदेवी एक दिवस घरना बारणामां उभी हती त्यां बे चार नोकरो सहित पोताना पतिनी शास्त्रीयपद्वी पामेलो विद्वान जतो तेना जोवामां आव्यो. घणा मानथी जता आ शास्त्रीने जोइने श्रीदेवीने पोतानी पूर्व स्थितिनुं स्मरण थइ आव्युं. ज्यारे मारा पति आ पद्वीपर हता त्यारे हुं केवुं सुख भोगवती हती? ए मारुं सुख तो गयुं परंतु मारो पुत्र पण पुरुं भण्यो नहि. एम विचारमां डोलतां डोलतां तेनी आंखमांथी दड दड आंसु खरवा मंड्यां. एवामां फरतो फरतो कपिल त्यां आवी पहोंच्यो. श्रीदेवीने रडती जोइ तेनुं कारण पूछयुं; कपिलना बहु आग्रहथी श्रीदेवीए जे हतुं ते कही बताव्युं. पछी कपिल बोल्यो: जो मा! हुं बुद्धिशाळी छुं, परंतु मारी बुद्धिनो उपयोग जेवो जोइए तेवो थइ शक्यो नथी. एटले विद्या वगर हुं ए पद्वी पाम्यो नहि. तुं कहे त्यां जइने हवे हुं माराथी बनती विद्या साध्य करुं. श्रीदेवीए खेद साथे कह्युं: ए ताराथी बनी शके नहि, नहि तो आर्यावर्तनी मर्यादापर आवेली सावस्थी नगरीमां इंद्रदत्त नामनो तारा पितानो मित्र रहे छे, ते अनेक विद्यार्थियोने विद्यादान आपे छे; जो ताराथी त्यां

जवाय तो धारेली सिद्धि थाय खरी. एक बे दिवस रोकाइ सज थइ अस्तु कही कपिलजी पंथे पड्या.

अवध वीततां कपिल सावस्थीए शास्त्रीजीने घेर आवी पहोंच्या. प्रणाम करीने पोतानो इतिहास कही बताव्यो. शास्त्रीजीए मित्रपुत्रने विद्यादान देवाने माटे बहु आनंद देखाड्यो, पण कपिल आगळ कंइ पुंजी नहोती के ते तेमांथी खाय अने अभ्यास करी शके; एथी करीने तेने नगरमां याचवा जवुं पडतुं हतुं. याचतां याचतां बपोर थइ जता हता, पछी रसोइ करे अने जमे त्यां सांजनो थोडो भाग रहेतो हतो. एटले कंइ अभ्यास करी शकतो नहोतो. पंडिते तेनुं कारण पूछयुं त्यारे कपिले ते कही बताव्युं. पंडिते तेने एक गृहस्थ पासे तेडी गया. ते गृहस्थे कपिलनी अनुकंपा खातर एने हमेशां भोजन मळे एवी गोठवण एक विधवा ब्राह्मणीने त्यां करी दीधी, जेथी कपिलने ए एक चिंता ओछी थइ.

शिक्षापाठ ४७ कपिलमुनि भाग २.

ए नानी चिंता ओछी थइ त्यां बीजी मोटी जंजाळ उभी थइ. भद्रिक कपिल हवे युवान् थयो हतो, अने जेने त्यां ते जमवा जतो ते विधवा बाइ पण युवान् हती. तेनी साथे तेना घरमां बीजुं कोइ माणस नहोतुं. हमेशनो परस्परनो वातचित्तनो संबंध वध्यो. वधीने हास्यविनोदरुपे थयो, एम करतां करतां बन्नेने प्रीति बंधाइ. कपिल तेनाथी लुब्धायो ! एकांत बहु अनिष्ट चीज छे ! !

विद्या प्राप्त करवानुं ते भूली गयो. गृहस्थ तरफथी मळतां सीधांथी बन्नेनुं मांड पुरुं थतुं हतुं, पण लूगडांलत्तांना वांधा थया. कपिले गृहस्थाश्रम मांडी बेठां जेवुं करी मूक्युं. गमे तेवो छतां

हलु-कर्मी जीव होवाथी संसारनी विशेष लोताळनी तेने माहिती पण नहोती, एथी पैसा केम पेदा करवा ते बिचारो ते जाणतो पण नहोतो. चंचळ स्त्रीए तेने रस्तो बताव्यो के मुंझावामां कंइ वळवानुं नथी, परंतु उपायथी सिद्धि छे. आ गामना राजानो एवो नियम छे के सवारमां पहेलो जइ जे ब्राह्मण आशिर्वाद आपे तेने ते बे मासा सोनुं आपे छे. त्यां जो जइ शको अने प्रथम आशिर्वाद आपी शको तो ते बे मासा सोनुं मळे. कपिले ए वातनी हा कही. आठ दिवस सुधी आंटा खाधा पण वखत वीत्या पछी जाय एटले कंइ वळे नहि. एथी तेणे एक दिवस एवो निश्चय कर्यो के जो हुं चोकमां सुउं तो चीवट राखीने उठाशे. पछी ते चोकमां सुतो, अधरात भांगतां चंद्रनो उदय थयो. कपिले प्रभात समीप जाणीने मुठीओ वाळीने आशिर्वाद देवा माटे दोडतां जवा मांडयुं. रक्षपाळे चोर जाणीने तेने पकडी राख्यो. एक करतां बीजुं थइ पडयुं. प्रभात थयो एटले रक्षपाळे तेने लइ जइने राजानी समक्ष उभो राख्यो. कपिल बेभान जेवो उभो रह्यो, राजाने तेनां चोरनां लक्षण भाश्यां नहि; एथी तेने सघळुं वृत्तांत पूछयुं. चंद्रना प्रकाशने सूर्यसमान गणनारनी भद्रिकतापर राजाने दया आवी. तेनी दरिद्रता टाळवा राजानी इच्छा थइ एथी कपिलने कह्युंः आशिर्वादने माटे थइ तारे जो एटली बधी तरखड थइ पडी छे तो हवे तारी इच्छा पुरतुं तुं मागी ले. हुं तने आपीश. कपिल थोडीवार मूढ जेवो रह्यो. एथी राजाए कह्युंः केम विप्र! कंइ मागता नथी? कपिले उत्तर आप्योः मारुं मन हजु स्थिर थयुं नथी, एटले शुं मागवुं ते सूझतुं नथी. राजाए सामेना बागमां जइ त्यां बेसीने स्वस्थतापूर्वक विचार करी कपिलने मागवानुं कह्युं, एटले कपिल ते बागमां जइने विचार करवा बेठो.

शिक्षापाठ ४८ कपिलमुनि भाग ३.

बे मासा सोनुं लेवानी जेनी इच्छा हती ते कपिल हवे तृष्णा-तरंगमां घसडायो. पांच महोर मागवानी इच्छा करी तो त्यां विचार आव्यो के पांचथी कंई पुरुं थनार नथी, माटे पंचवीश महोर मागवी. ए विचार पण फर्यो. पंचवीश महोरथी कंइ आखुं वर्ष उतराय नहि माटे सो महोर मागवी, त्यां वळी विचार फर्यो. सो महोरे बे वर्ष उतरी वैभव भोगवीए; पाछां दुःखनां दुःख. माटे एक हजार महोरनी याचना करवी ठीक छे; पण एक हजार महोर छोकरां छैयांनां बेचार खर्च आवे के एवुं थाय तो पुरुं पण शुं थाय? माटे दश हजार महोर मागवी के जेथी जींदगी पर्यंत पण चिंता नहीं. त्यां वळी इच्छा फरी. दश हजार महोर खवाई जाय एटले पछी मुडी वगरना थई रहेवुं पडे. माटे एक लाख महोरनी मागणी करुं के जेना व्याजमां बधा वैभव भोगवुं, पण जीव! लक्षाधिपति तो घणाय छे. एमां आपणे नामांकित क्यांथी थवाना? माटे करोड महोर मागवी के जेथी महान् श्रीमंतता कहे-वाय. वळी पाछो रंग फर्यो. महान् श्रीमंततार्थी पण घेर अमल कहेवाय नहि माटे राजानुं अर्धुं राज्य मागवुं; पण जो अर्धुं राज्य मागीश तोय राजा मारा तुल्य गणाशे. अने वळी हुं एनो याचक पण गणाइश. माटे मागवुं तो आखुं राज्य मागवुं. एम ए तृष्णामां डुब्यो, परंतु तुच्छ संसारी एटले पाछो वळयो. भला जीव! आपणे एवी कृतघ्नता शा माटे करवी पडे के जे आपणने इच्छा प्रमाणे आपवा तत्पर थयो तेनुंज राज्य लई लेवुं, अने तेनेज भ्रष्ट करवो? खरुं जोतां तो एमां आपणीज भ्रष्टता छे. माटे अर्धुं राज्य मागवुं, परंतु ए उपाधिए मारे नथी जोइती! त्यारे नाणांनी उपाधि पण क्यां ओछी छे? माटे करोड लाख मूकीने सो बसें महोरज मागी लेवी. जीव! सो बसें महोर हमणां आवशे तो पछी विषय वैभ-

वमांज वखत चाल्यो जशे अने विद्याभ्यास पण धर्यो रहेशे, माटे पांच महोर हमणां तो लई जवी पछीनी वात पछी. अरे! पांच महोरनीए हमणां कंइ जरुर नथी; मात्र बे मासा सोनुं लेवा आव्यो हतो तेज मागी लेवुं. आ तो जीव बहु थई. तृष्णासमुद्रमां तें बहु गळकां खाधां. आखुं राज्य मागतां पण तृष्णा छीपती नहोती. मात्र संतोष अने विवेकथी ते घटाडी तो घटी. ए राजा जो चक्रवर्त्ति होत तो पछी हुं एथी विशेष शुं मागी शकत? अने विशेष ज्यां सुधी न मळत त्यांसुधी मारी तृष्णा समात पण नहि, ज्यां सुधी तृष्णा समात नहि त्यां सुधी हुं सुखी पण न होत. एटलेथी ए मारी तृष्णा टळे नहि तो पछी बे मासाथी करीने क्यांशी टळे? एनो आत्मा सवळीए आव्यो अने ते बोल्यो: हवे मारे ए बे मासानुं पण कंइ काम नथी. बे मासाथी वधीने हुं केटले सुधी पहोंच्यो! सुख तो संतोषमांज छे. तृष्णा ए संसार वृक्षनुं बीज छे. एनो हे जीव, तारे शुं खप छे? विद्या लेतां तुं विषयमां पडी गयो, विषयमां पडवाथी आ उपाधिमां पड्यो, उपाधि वडे करीने अनंत तृष्णा समुद्रना तरंगमां तुं पड्यो. एक उपाधिमांथी आ संसारमां एम अनंत उपाधि वेठवी पडे छे. एथी एनो त्याग करवो उचित छे. सत्य संतोष जेवुं निरुपाधि सुख एके नथी. एम विचारतां विचारतां तृष्णा समाववाथी ते कपिलनां अनेक आवरण क्षय थयां. तेनुं अंतःकरण प्रफुल्लित अने बहु विवेकशील थयुं. विवेकमां ने विवेकमां उत्तम ज्ञानवडे ते स्वात्मनो विचार करी शक्यो. अपूर्व श्रेणिए चढी ते कैवल्यज्ञानने पाम्यो.

तृष्णा केवी कनिष्ठ वस्तु छे! ज्ञानीओ एम कहे छे के तृष्णा आकाशना जेवी अनंत छे, निरंतर ते नवयौवन रहे छे. चाहना जेटलुं मळ्युं एटले चाहनाने वधारी दे छे. संतोष एज मात्र कल्पवृक्ष छे, अने एज मात्र मनोवांच्छितता पूर्ण करे छे.

शिक्षापाठ ४९ तृष्णानी विचित्रता.

मनहर छंद.

(एक गरीबनी वधती गयेली तृष्णा)

हती दीनताइ त्यारे ताकी पटेलाइ अने,
मळी पटेलाइ त्यारे ताकी छे शेठाइने;
सांपडी शेठाइ त्यारे ताकी मंत्रिताइ अने,
आवी मंत्रिताइ त्यारे ताकी नृपताइने;
मळी नृपताइ त्यारे ताकी देवताइ अने,
दीठी देवताइ त्यारे ताकी शंकराइने;
अहो राज्यचंद्रमानो मानो शंकराइ मळी (!)
वधे तृशनाइ तोय जाय न मराइने. १

(२)

करोचली पडी डाढी डाचांतणो दाट वळ्यो,
काळी केशपटी विषे, श्वेतता छवाइ गइ;
सूंघवुं सांभळवुं ने देखवुं ते मांडी वाळ्युं,
तेम दांत आवली ते, खरी के खवाइ गइ;
वळी केड वांकी हाड गयां अंगरंग गयो,
उठवानी आय जतां लाकडी लेवाइ गइ;
अरे ! राज्यचंद्र एम, युवानी हराइ पण,
मनथी न तोय रांड, ममता मराइ गइ. २

(३)

करोडोना करजना, शीरपर डंका वागे,
रोगथी रुंधाइ गयुं, शरीर सूकाइने;

पुरपति पण माथे, पीडवाने ताकी रह्यो,
पेट तणी वेठ पण, शके न पुराइने;
पितृ अने परणी ते, मचावे अनेक धंध,
पुत्र, पुत्री भाखे खाउं खाउं दुःखदाइने;
अरे राज्यचंद्र तोय जीव झावा दावा करे,
जंजाळ छंडाय नहीं तजी तृशनाइने. ३

(४)

थइ क्षीण नाडी अवाचक जेवो रह्यो पडी,
जीवन दीपक पाम्यो केवळ झंखाइने;
छेल्ली इसे पड्यो भाळी भाइए त्यां एम भाख्युं,
हवे टाढी माटी थाय तो तो ठीक भाइने;
हाथने हलावी त्यां तो खीजी बुढे सूचव्युं ए,
बोल्या विना बेश बाळ तारी चतुराइने !
अरे राज्यचंद्र देखो देखो आशापाश केवो ?
जतां गइ नहि डोशे ममता मराइने ! ४

शिक्षापाठ ५० प्रमाद.

धर्मनी अनादरता, उन्माद, आळस, कषाय ए सघळां प्रमादनां लक्षण छे.

भगवाने उत्तराध्ययन् सूत्रमां गौतमने कह्युं के, हे गौतम! मनुष्यनुं आयुष्य डाभनी अणीपर पडेला जळना बिंदु जेवुं छे. जेम ते बिंदुने पडतां वार लागती नथी तेम आ मनुष्यायु जतां वार लागती नथी. ए बोधनी काव्यमां चोथी कडी स्मरणमा अवश्य राखवा जेवी छेः 'समयंगोयम मापमाए'—ए पवित्र वाक्यना

बे अर्थ थाय छे. एक तो हे गौतम ! समय एटले अवसर पामीने प्रमाद न करवो अने बीजो ए के मेषानुमेषमां चाल्या जता असंख्यातमा भागनो जे समय कहेवाय छे तेटलो वखत पण प्रमाद न करवो. कारण देह क्षणभंगुर छे; काळशीकारी माथे धनुष्यबाण चढावीन उभो छे. लीधो के लेशे एम जंजाळ थइ रही छे, त्यां प्रमादथी धर्म कर्त्तव्य करवुं रही जशे.

अति विचिक्षण पुरुषो संसारनी सर्वोपाधि त्यागीने अहोरात्र धर्ममां सावधान थाय छे, पळनो पण प्रमाद करता नथी. विचक्षण पुरुषो अहोरात्रना थोडा भागने पण निरंतर धर्मकर्त्तव्यमां गाळे छे, अने अवसरे अवसरे धर्मकर्त्तव्य करता रहे छे. पण मूढ पुरुपो निद्रा, आहार, मोजशोख अने विकथा तेमज रंगरागमां आयुष्य व्यतित करी नाखे छे. एनुं परिणाम तेओ अधोगति रूप पामे छे.

जेम बने तेम यत्न अने उपयोगथी धर्मने साध्य करवो योग्य छे. साठ घडीना अहोरात्रमां वीशघडी तो निद्रामां गाळीए छीए. बाकीनी चाळीश घडी उपाधि, टेलटप्पा अने रझळवामां गाळीए छीए. ए करतां ए साठ घडीना वखतमांथी बे चार घडी विशुद्ध धर्मकर्त्तव्यने माटे उपयोगमां लइए तो बनी शके एवुं छे; एनुं परिणाम पण केवुं सुंदर थाय !

पळ ए अमूल्य चीज छे, चक्रवर्त्ति पण एक पळ पामवा आखी रिद्धि आपे तोपण ते पामनार नथी. एक पळ व्यर्थ खोवाथी एक भव हारी जवा जेवुं छे. एम तत्वनी द्रष्टिए सिद्ध छे !



शिक्षापाठ ५१ विवेक एटले शुं ?

लघु शिष्योः–भगवन्! आप अमने स्थळे स्थळे कहेता आवो छो के विवेक ए महान् श्रेयस्कर छे, विवेक ए अंधारामां पडेला आत्माने ओळखवानो दीवो छे, विवेक वडे करीने धर्म टके छे ? विवेक नथी त्यां धर्म नथी तो विवेक एटले शुं ? ते अमने कहो.

गुरुः–आयुष्यमन्नो ! सत्यासत्यने तेने स्वरुपे करीने समजवुं तेनुं नाम विवेक.

लघु शिष्योः–सत्यने सत्य अने असत्यने असत्य कहेवानुं तो बधाए समजे छे. त्यारे महाराज। एओ धर्मनुं मूळ पाम्या कहेवाय ?

गुरुः–तमे जे वात कहो छो तेनुं एक दृष्टांत आपो जोइए ?

लघु शिष्योः–अमे पोते कडवाने कडवुंज कहीए छीए, मधुरांने मधुरु कहीए छीए झेरने झेर ने अमृतने अमृत कहीए छीए.

गुरुः–आयुष्यमन्नो ! ए बधां द्रव्य पदार्थ छे; परंतु आत्माने कयी कडवाश, कयी मधुराश, कयुं झेर अने कयुं अमृत छे. ए भावपदार्थोनी एथी कंइ परीक्षा थइ शके ?

लघु शिष्यः–भगवन् ! ए संबंधी तो अमारुं लक्ष पण नथी.

गुरुः–त्यारे एज समजवानुं छे के ज्ञान–दर्शनरूप आत्माना सत्य भाव पदार्थने अज्ञान अने अदर्शनरूप असत् वस्तुए घेरी लीधा छे, एमां एटली बधी मिश्रता थइ गइ छे के परीक्षा करवी अति अति दुर्लभ छे. संसारनां सुखो अनंतिवार आत्माए भोगव्यां छतां, तेमांथी हजु पण मोह टळयो नहीं, अने तेने अमृत जेवो गण्यो ए अविवेक छे. कारण संसार कडवो छे, कडवा विपाकने

आपे छे; तेमज वैराग्य जे ए कडवा विपाकनुं औषध छे, तेने कडवो गण्यो. आ पण अविवेक छे. ज्ञान दर्शनादि गुणो अज्ञानदर्शने घेरी लइ जे मिश्रता करी नांखी छे ते ओळखी भावअमृतमां आववुं एनुं नाम विवेक छे. कहो त्यारे हवे विवेक ए केवी वस्तु ठरी !

लघु शिष्योः—अहो ! विवेक एज धर्मनुं मुळ अने धर्म रक्षक कहेवाय छे ते सत्य छे. आत्म स्वरुपने विवेक विना ओळखी शकाय नहीं ए पण सत्य छे. ज्ञान, शील, धर्म तत्व अने तप ए सघळां विवेक विना उदय पामे नहीं ए आपनुं कहेवुं यथार्थ छे. जे विवेकी नथी ते अज्ञानी अने मंद छे. तेज पुरुष मतभेद अने मिथ्यां दर्शनमां लपटाइ रहे छे. आपनी विवेक संबंधीनी शिक्षा अमे निरंतर मनन करीशुं.

शिक्षापाठ ५२ ज्ञानीओए वैराग्य शा माटे बोध्यो ?

संसारनां स्वरुप संबंधी आगळ केटलुंक कहेवामां आव्युं छे ते तमने लक्षमां हशे.

ज्ञानीओए एने अनंत खेदमय, अनंत दुःखमय, अव्यवस्थित, चळविचळ अने अनित्य कह्यो छे. आ विशेषणो लगाडवा पहेलां एमणे संसारसंबंधी संपूर्ण विचार करेलो जणाय छे. अनंत भवनुं पर्यटन, अनंतकाळनुं अज्ञान, अनंतजीवननो व्याघात, अनंत मरण, अनंतशोक ए वडे करीने संसारचक्रमां आत्मा भम्या करे छे. संसारनी देखाती इंद्रवारणा जेवी सुंदर मोहिनीए आत्माने तटस्थ लीन करी नांख्यो छे. एना जेवुं सुख आत्माने क्यांय भासतुं नथी. मोहिनीथी सत्य सुख अने एनुं स्वरुप जोवानी एणे आकांक्षा पण

करी नथी. पतंगनी जेम दीपक प्रत्ये मोहिनी छे तेम आत्मानी संसार संबंधे मोहिनी छे. ज्ञानीओ ए संसारने क्षणभर पण सुखरूप कहेता नथी. ए संसारनी तल जेटली जग्यो पण झेर विना रही नथी. एक भुंडथी करीने एक चक्रवर्त्ति सुधी भावे करीने सरखापणुं रह्युं छे. एटले चक्रवर्तिनी संसार संबंधमां जेटली मोहिनी छे, तेटलीज बलके तेथी विशेष भुंडने छे. चक्रवर्त्ति जेम समग्र प्रजापर अधिकार भोगवे छे तेम तेनी उपाधि पण भोगवे छे. भुंडने एमांनुं कशुंए भोगववुं पडतुं नथी. अधिकार करतां उलटी उपाधि विशेष छे. चक्रवर्त्तिनो पोतानी पत्नी प्रत्येनो जेटलो प्रेम छे तेटलोज अथवा तेथी विशेष भुंडनो पोतानी भुंडणी प्रत्ये प्रेम रह्यो छे. चक्रवर्त्ति भोगथी जेटलो रस ले छे, तेटलोज रस भुंड पण मानी बेठुं छे. चक्रवर्त्तिनी जेटली वैभवनी बहोळता छे तेटलीज उपाधि छे. भुंडने एना वैभवना प्रमाणमां छे. बन्ने जन्म्यां छे अने बन्ने मरवानां छे. आम अति सूक्ष्म विचारे जोतां क्षणिकताथी, रोगथी, जरा वगेरेथी बन्ने ग्राहित छे. द्रव्ये चक्रवर्त्ति समर्थ छे. महा पुण्यशाळी छे. मुख्यपणे शातावेदनीय भोगवे छे. अने भुंड बिचारुं असातावेदनीय भोगवी रह्युं छे. बन्नेने असाता–साता पण छे, परंतु चक्रवर्त्ति महा समर्थ छे. पण जो ए जीवन पर्यंत मोहांध रह्यो तो सघळी बाजी हारी जवा जेवुं करे छे. भुंडने पण तेमज छे. चक्रवर्त्ति शलाका पुरुष होवाथी भुंडथी ए रुपे एनी तुल्यनाज नथी, परंतु आ स्वरुप छे. भोग भोगववामां बन्ने तुच्छ छे, बन्नेनां शरीर परु मांसादिकनां छे; अशाताथी पराधीन छे संसारनी आ उत्तमोत्तम पद्वी आवी रही तेमां आवुं दुःख, आवी क्षणिकता, आवी तुच्छता, आवुं अंधपणुं ए रह्युं छे तो पछी बीजे सुख शा माटे गणवुं जोइए ? ए सुख नथी छतां सुख गणो तो जे सुख भयवाळां अने क्षणिक छे ते दुःखज छे. अनंत ताप, अनंत शोक,

अनंत दुःख जोइने ज्ञानीओए ए संसारने पुंठ दीधी छे; ते सत्य छे. ए भणी पाछुं वाळी जोवा जेवुं नथी. त्यां दुःख दुःख ने दुःखज छे. दुःखनो ए समुद्र छे.

वैराग्य एज अनंत ःखमां लइ जनार उत्कृष्ट भोमियो छे.

शिक्षापाठ ५३ महावीरशासन.

हमणां जे जिनशासन प्रवर्त्तमान छे ते श्रमण भगवंत महावीरनुं प्रणीत करेलुं छे. भगवान् महावीरने निर्वाण पधार्यां २४०० वर्ष थइ गयां, मगध देशना क्षत्रियकुंड नगरमां सिद्धार्थ रा.नां राणी त्रिशलादेवी क्षत्रियाणीनी कुखे भगवान् महावीर जन्म्या. महावीर भगवानना मोटा भाइनुं नाम नंदीवर्द्धमान हतुं. तेमनी स्त्रीनुं नाम यशोदा हतुं. त्रीश वर्ष तेओ गृहस्थाश्रममां रह्या. एकांतिक विहारे साडाबार वर्ष एक पक्ष तपादिक सम्यकाचारे, एमणे अशेष घनघाती कर्मने बाळीने भस्मिभूत कर्यां; अनुपमेय केवळज्ञान अने केवळदर्शन ऋजुवालिका नदीने किनारे पाम्या. एकंदर बहोतेर वर्षनी लगभग आयु भोगवी सर्व कर्म भस्मिभूत करी सि. स्वरुपने पाम्या. वर्त्तमान चोवीशीना ए छेल्ला जिनेश्वर हता.

एओनुं आ धर्मतीर्थ प्रवर्त्ते छे ते २१००० हजार वर्ष एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी प्रवर्त्तशे; एम भगवतीसूत्रमां प्रवचन छे.

आ काळ दश आश्चर्यथी युक्त होवाथी ए श्री धर्मतीर्थ प्रत्ये अनेक विपत्तिओ आवी गइ छे, आवे छे; अने प्रवचन प्रमाणे आवशे पण खरी.

जैन समुदायमां परस्पर मतभेद बहु पडी गया छे. परस्पर निं.ग्रंथोथी जंजाळ मांडी बेठा छे. मध्यस्थ पुरुषो मतमतांत मा

नहीं पड़तां विवेक विचारे जिनशिक्षानां मूळ तत्वपर आवे छे, उत्तम शीलवान मुनियोपर भाविक रहे छे, अने सत्य एकाग्रताथी पोताना आत्माने दमे छे.

काळप्रभावने लीधे वखते वखते शासन कंइ सामान्य प्रकाशमां आवे छे. पण ते जोइए एवुं प्रफुल्लित न थइ शके.

'वंक जडाय पछिमा' एवुं उत्तराध्ययन सूत्रमां वचन छे, एनो भावार्थ ए छे के छेल्ला तीर्थंकर (महावीरस्वामी) ना शिष्यो वांका अने जड थशे. अने तेनी सत्यता विषे कोइने बोलवुं रहे तेम नथी. आपणे क्यां तत्वनो विचार करीए छीए? क्यां उत्तम शीलनो विचार करीए छीए? नियमित वखत धर्ममां क्यां व्यतित करीए छीए? धर्मतीर्थना उदयने माटे क्यां लक्ष राखीए छीए? क्यां दाझवडे धर्मतत्वने शोधीए छीए? श्रावक कुळमां जन्म्या एथी करीने श्रावक, ए वात आपणे भावे करीने मान्य करवी जोइती नथी; एने माटे जोइता आचार–ज्ञान–शोध के एमांनां कंइ विशेष लक्षणो होय तेने श्रावक मानिये तो ते यथायोग्य छे. द्रव्यादिक केटलाक प्रकारनी सामान्य दया श्रावकने घेर जन्मे छे अने ते पाळे छे. ए वात वखाणवा लायक छे, पण तत्वने कोइकज जाणे छे, जाण्या करतां झाझी शंका करनारा अर्धदग्धो पण छे जाणीने अहंपद करनारा पण छे, परंतु जाणीने तत्वना कांटामां तोळनारा कोइक विरलाज छे. परंपर आम्नायथी केवळ, मनःपर्यव अने परम अवधिज्ञान विच्छेद गयां. द्रष्टिवाद विच्छेद गयुं, सिद्धांतनो घणो भाग पण विच्छेद गयो; मात्र थोडा रहेला भागपर सामान्य समजणथी शंका करवी योग्य नथी. जे शंका थाय ते विशेष जाणनारने पूछवी. त्यांथी मनमानतो उत्तर न मळे तोपण जिनवचननी श्रद्धा चळविचळ करवी योग्य नथी, केमके अनेकांत शैलीना स्वरुपने विरला जाणे छे.

उत्तम अने शांत मुनिओनो समागम, विमळआचार, विवेक तेमज दया, क्षमा आदिनुं सेवन करवुं. तुच्छ बुद्धिथी शंकित थवुं नहीं, एमां आपणुं परम मंगळ छे ए वीसर्जन करवुं नहीं.

शिक्षापाठ ५४ अशुचि कोने कहेवी ?

जिज्ञासुः–मने जैन मुनिओना आचारनी वात बहु रुची छे. एओना जेवो कोइ दर्शनना संतोमां आचार नथी. गमे तेवा शीयाळानी टाढमां अमुक वस्त्रवडे तेओने रेडववुं पडे छे; उनाळामां गमे तेवा ताप तपता छतां पगमां तेओने पगरखां के माथापर छत्री लेवाती नथी. उनी रेतीमां आतापना लेवी पडे छे. याव जीवंत उनुं पाणी पीए छे, गृहस्थने घेर तेओ बेसी शकता नथी. शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळे छे. फुटी बदाम पण पासे राखी शकता नथी. अयोग्य वचन तेथी बोली शकातुं नथी. वाहन तेओ लइ शकता नथी. आवा पवित्र आचारो, खरे ! मोक्षदायक छे. परंतु नववाडमां भगवाने स्नान करवानी ना कही छे ए वात तो मने यथार्थ बेसती नथी.

सत्यः–शा माटे बेसती नथी ?

जिज्ञासुः–कारण एथी अशुचि वधे छे.

सत्यः–कइ अशुचि वधे छे ?

जिज्ञासुः–शरीर मलिन रहे छे ए.

सत्यः–भाइ, शरीरनी मलिनताने अशुचि कहेवी ए वात कंइ विचारपूर्वक नथी. शरीर पोते शानुं बन्युं छे एतो विचार करो. रक्त, पित, मळ, मूत्र, श्लेष्मनो ए भंडार छे ते पर मात्र त्वचा छे; छतां ए पवित्र केम थाय ? वळी साधुए एवुं कंइ संसारी कर्त्तव्य कर्युं न होय के जेथी तेओने स्नान करवानी आवश्यक रहे.

जिज्ञासुः—पण स्नान करवाथी तेओने हानि शुं छे ?

सत्यः—ए तो स्थूळबुद्धिनुंज प्रश्न छे. नहावाथी कामाग्निनी प्रदीप्तता, व्रतनो भंग, परिणामनुं बदलवुं, असंख्याता जंतुनो विनाश, ए सघळी अशुचि उत्पन्न थाय छे अने एथी आत्मा महा-मलीन थाय छे. प्रथम एनो विचार करवो जोइए. जीवहिंसायुक्त शरीरनी जे मलिनता छे ते अशुचि छे. अन्य मलिनताथी तो आत्मानी उज्वळता थाय छे ए तत्वविचारे समजवानुं छे. नहावाथी व्रत भंग थइ आत्मा मलीन थाय छे, अने आत्मानी मलीनता एज अशुचि छे.

जिज्ञासुः—मने तमे बहु सुंदर कारण बताव्युं. सूक्ष्म विचार करतां जिनेश्वरनां कथनथी बोध अने अत्यानंद प्राप्त थाय छे. वारु, गृहस्थाश्रमीओए सांसारिक प्रवर्त्तनथी थयेली अनीच्छित जीवहिंसादियुक्त एवी शरीर संबंधी अशुचि टाळवी जोइए के नहि ?

सत्यः—समजणपूर्वक अशुचि टाळवीज जोइए. जैन जेवुं एके पवित्र दर्शन नथी, यथार्थ पवित्रतानो बोधक ते छे; परंतु शौचा-शौचनुं स्वरुप समजवुं जोइए.

शिक्षापाठ ५५ सामान्य नित्यनियम.

प्रभात पहेलां जागृत थइ नमस्कारमंत्रनुं स्मरण करी मन-विशुद्ध करवुं. पापव्यापारनी वृत्ति रोकी रात्री संबंधी थयेला दोषनुं उपयोगपूर्वक प्रतिक्रमण करवुं.

प्रतिक्रमण कर्या पछी यथावसर भगवाननी उपासना—स्तुति तथा स्वाध्यायथी करी मनने उज्वळ करवुं.

मात पितानो विनय करी संसारीकाममां आत्महितनो लक्ष भूलाय नहीं तेम व्यहारिक कार्यमां प्रवर्त्तन करवुं.

पोते भोजन करतां पहेलां सत्पात्रे दान देवानी परम आतुरता राखी तेवो योग मळतां यथोचित प्रवृत्ति करवी.

आहारविहारादिमां नियम सहित प्रवर्त्तवुं.

सत्शास्त्रना अभ्यासनो नियमित वखत राखवो.

सायंकाळे उपयोगपूर्वक संध्यावश्यक करवुं.

निद्रा नियमितपण लेवी.

सुता पहेलां अढार पापस्थानक, द्वादशव्रतदोष, अने सर्व जीव प्रत्ये क्षमावी पंचपरमेष्टि मंत्रनुं स्मरण करी समाधिपूर्वक शयन करवुं.

आ सामान्य नियमो बहु मंगळकारी छे. जे अहीं संक्षेपमां कह्या छे. विशेष विचारवाथी अने तेम प्रवर्त्तवाथी ते विशेष मंगळ-दायक अने आनंदकारक थशे.

शिक्षापाठ ५६ क्षमापना.

हे भगवान ! हुं बहुं भूली गयो, में तमारां अमूल्य वचनने लक्षमां लीधां नहीं. में तमारां कहेलां अनुपम तत्वनो विचार कर्यो नहीं. तमारां प्रणीत करेलां उत्तम शीलने सेव्युं नहीं. तमारां कहेलां दया, शांति, क्षमा अने पवित्रता में ओळख्यां नहीं. हे भगवान ! हुं भूल्यो, आथड्यो—रझळ्यो अने अनंत संसारनी विटम्बनामां पड्यो छुं. हुं पापी छुं. हुं बहु मदोन्मत्त अने कर्म-रजथी करीने मलिन छुं. हे परमात्मा ! तमारां कहेलां तत्व विना मारो मोक्ष नथी. हुं निरंतर प्रपंचमां पड्यो छुं, अज्ञानथी अंध थयो छुं, मारामां विवेकशक्ति नथी अने हुं मूढ छुं, हुं निराश्रित छुं, अनाथ छुं. निरागी परमात्मा ! हवे हुं तमारुं, तमारा धर्मनुं अने तमारा मुनिनुं शरण ग्रहुं छुं. मारा अपराध क्षय थइ हुं ते सर्व

पापथी मुक्त थवुं ए मारी अभिलाषा छे. आगळ करेलां पापोनो हुं हवे पश्चाताप करुं छुं. जेम जेम हुं सूक्ष्म विचारथी उंडो उतरुं छुं तेम तेम तमारा तत्वना चमत्कारो मारा स्वरुपनो प्रकाश करे छे. तमे निरागी, निर्विकारी, सत्चिदानंदस्वरुप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो. हुं मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षीए क्षमा चाहुं छुं. एक पळ पण तमारां कहेलां तत्वनी शंका न थाय, तमारा कहेला रस्तामां अहोरात्र हुं रहुं एज मारी आकांक्षा अने वृत्ति थाओ! हे सर्वज्ञ भगवान! तमने हुं विशेष शुं कहुं? तमाराथी कंइ अजाण्युं नथी. मात्र पश्चातापथी हुं कर्मजन्य पापनी क्षमा इच्छुं छुं—ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

शिक्षापाठ ५७ वैराग्य ए धर्मनुं स्वरुप छे.

एक वस्त्र लोहीनी मलिनताथी रंगायुं तेने जो लोहीथी धोइए तो ते उजळुं थई शके नहि; पण वधारे रंगाय छे. जो पाणीथी ए वस्त्रने धोइए तो ते मलिनता जवानो संभव छे. आ द्रष्टांतपरथी आत्मापर विचार लइए. अनादिकाळथी आत्मा संसाररुपी लोहीथी मलिन थयो छे. मलिनता प्रदेशे प्रदेशे व्यापि रही छे! ए मलिनता आपणे विषय शृंगारथी टाळवी धारीए तो टळी शके नहि. लोहीथी जेम लोही धोवातुं नथी, तेम शृंगारथी करीने विषयजन्य आत्ममलिनता टळनार नथी ए जाणे निश्चयरुप छे. आ जगत्मां अनेक धर्ममतो चाले छे ते संबंधी अपक्षपाते विचार करतां आगळथी आटलुं विचारवुं अवश्यनुं छे के ज्यां स्त्रीओ भोगववानो उपदेश कर्यो होय, लक्ष्मीलीलानी शिक्षा आपी होय; रंग, राग गुलतान अने एशाराम करवानुं तत्व बताव्युं होय त्यां आपणा

आत्मानी सत् शांति नथी; कारण ए धर्ममत गणीए तो आखो संसार धर्ममतयुक्तज छे. प्रत्येक गृहस्थनुं घर एज योजनाथी भरपूर होय छे. छोकरांछैयां, स्त्री, रंग राग तान त्यां जाम्युं पड्युं होय छे अने ते घर धर्ममंदिर कहेवुं, तो पछी अधर्मस्थानक कयुं? अने जेम वर्त्तिए छीए तेम वर्त्तवाथी खोटुं पण शुं? कोइ एम कहे के पेलां धर्ममंदिरमां तो प्रभुनी भक्ति थइ शके छे तो तेओने माटे खेदपूर्वक आटलोज उत्तर देवानो छे के ते परमात्मतत्व अने वैराग्यमय भक्तिने जाणता नथी. गमे तेम हो पण आपणे आपणा मूळ विचारपर आववुं जोइए. तत्वज्ञानीनी द्रष्टिए आत्मा संसारमां विषयादिक मलिनताथी पर्यटन करे छे. ते मलिनतानो क्षय विशुद्ध भाव जळथी होवो जोइए. अर्हतना तत्वरुप साबु अने वैराग्यरुपी जळ वडे, उत्तम आचाररुप पथ्थरपर, आत्मवस्त्रने धोनार निर्ग्रंथ गुरु छे.

आमां जो वैराग्यजळ न होय तो बीजां बधां साहित्यो कंइ करी शकतां नथी, माटे वैराग्यने धर्मनुं स्वरुप कही शकीए. अर्हतप्रणीत तत्व वैराग्यज बोध छे, तो तेज धर्मनुं स्वरुप एम गणवुं.

शिक्षापाठ ५८ धर्मना मतभेद भाग १.

आ जगतमां अनेक प्रकारथी धर्मना मत पडेला छे. तेवा मतभेद अनादिकाळथी छे, ए न्यायसिद्ध छे. पण ए मत भेदो देश काळादि योगे कंइ कंइ रुपांतर पामे खरा. ए संबंधी केटलोक विचार करीए.

केटलाक परस्पर मळता अने केटलाक परस्पर विरुद्ध छे, केटलाक केवळ नास्तिकना पाथरेला पण छे. केटलाक सामान्य

नीतिने धर्म कहे छे, केटलाक ज्ञाननेज धर्म कहे छे, केटलाक अज्ञाननेज धर्ममत कहे छे, केटलाक भक्तिने कहे छे, केटलाक क्रियाने कहे छे, केटलाक विनयने कहे छे अने केटलाक शरीरने साचववुं एनेज धर्ममत कहे छे.

ए धर्ममत स्थापकोए एम बोध कर्यो जणाय छे के अमे जे कहीए छीए ते सर्वज्ञवाणीरुप छे; के सत्य छे, बाकीना सघळा मतो असत्य अने कुतर्कवादी छे; तथा परस्पर ते मत वादीओए योग्य के अयोग्य खंडन कर्युं छे. वेदांतना उपदेशक एज बोधे छे, सांख्यनो पण एज बोध छे, बौधनो पण एज बोध छे, न्यायमत-वाळानो पण एज बोध छे, वैशेषिकनो एज बोध छे, शक्ति पंथीनो एज बोध छे; वैष्णवादिकनो एज बोध छे. इस्लामीनो एज बोध छे; अने एज रीते क्राइस्टनो एम बोध छे के आ अमारुं कथन तमने सर्व सिद्धि आपशे. त्यारे आपणे हवे शुं विचार करवो ?

वादी प्रतिवादी बन्ने साचा होता नथी, तेम बन्ने खोटा होता नथी. बहु तो वादी कंइक वधारे साचो, अने प्रतिवादी कंइक ओछो खोटो होय. अथवा प्रतिवादी कंईक वधारे साचो, अने वादी कंईक ओछो खोटो होय. केवळ बन्नेनी वात खोटी होवी न जोइए. आम विचार करतां तो एक धर्ममत साचो ठरे, अने बाकीना खोटा ठरे.

जिज्ञासु—ए एक आश्चर्यकारक वात छे. सर्वने असत्य के सर्वने सत्य केम कही शकाय ? जो सर्वने असत्य एम कहीए तो आपणे नास्तिक ठरीए, अने धर्मनी सच्चाइ जाय. आ तो निश्चय छे के धर्मनी सच्चाइ छे तेम जगत्पर तेनी अवश्य छे. एक धर्ममत सत्य अने बाकीना सर्व असत्य एम कहीए तो ते वात सिद्ध करी बता-ववी जोइए. सर्व सत्य कहीए तो तो ए रेतीनी जेवी बात भींत

करी, कारण के तो आटला बधा मतभेद केम पडे ? जो कंइ पण मतभेद न होय तो पछी जुदा जुदा पोतपोताना मतो स्थापवा शा माटे यत्न करे ? एम अन्योन्यना विरोधथी थोडीवार अटकवुं पडे छे.

तोपण ते संबंधी अत्रे कंइ समाधान करीशुं. ए समाधान सत्य अने मध्यस्थभावनानी द्रष्टिथी कर्युं छे. एकांतिक के मतांतिक द्रष्टिथी कर्युं नथी. पक्षपाती के अविवेकी नथी, उत्तम अने विचारवा जेवुं छे. देखावे ए सामान्य लागशे, परंतु सूक्ष्म विचारथी बहु भेदवाळुं लागशे.

शिक्षापाठ ५९ धर्मना मतभेद भाग २.

आटलुं तो तमारे स्पष्ट मानवुं के गमे ते एक धर्म आ लोकपर संपूर्ण सत्यता धरावे छे. हवे एक दर्शनने सत्य कहेतां बाकीना धर्ममतने केवळ असत्य कहेवा पडे, पण हुं एम कहीं न शकुं. शुद्ध आत्मज्ञानदाता निश्चयनयवडे तो ते असत्यरुप ठरे, परंतु व्यवहारनये ते असत्य कही शकाय नहीं. एक सत्य अने बाकीना अपूर्ण अने सदोष छे एम कहुं छुं. तेमज केटलांक कुतर्कवादी अने नास्तिक छे ते केवळ असत्य छे, परंतु जेओ परलोक संबंधी के पाप संबंधी कंइ पण बोध के भय बतावे छे ते जातना धर्ममतने अपूर्ण अने सदोष कही शकाय छे. एक दर्शन जे निर्दोष अने पूर्ण कहेवानुं छे ते विषेनी वात हमणा एक बाजु राखीए.

हवे तमने शंका थशे के सदोष अने अपूर्ण एवुं कथन एना प्रवर्त्तके शा माटे बोध्युं हशे ? तेनुं समाधान थवुं जोइए. एनुं समाधान एम छे के ते धर्ममतवाळाओनी ज्यांसुधी बुद्धिनी गति पहोंची त्यां सुधी तेमणे विचारो कर्या. अनुमान, तर्क अने उप-

मादिक आधारवडे तेओने जे कथन सिद्ध जणायुं ते प्रत्यक्षरूपे जाणे सिद्ध छे एवुं तेमणे दर्शाव्युं. जे पक्ष लीधो तेमां मुख्य एकांतिक वाद लीधो. भक्ति, विश्वास, नीति, ज्ञान, क्रिया आदि एक पक्षने विशेष लीधो, एथी बीजा मानवा योग्य विषयो तेमणे दूषित करी दीधा. वळी जे विषयो तेमणे वर्णव्या ते सर्व भाव भेदे तेओए कंइ जाण्या नहोता, पण पोतानी बुद्धि अनुसारे बहु वर्णव्या. तार्किक सिद्धांत द्रष्टांतादिकथी सामान्य बुद्धिवाळा आगळ के जडभरत आगळ तेओए सिद्ध करी बताव्यो. कीर्त्ति, लोकहित, के भगवान मनावानी आकांक्षा एमांनी एकादि पण एमना मननी भ्रमना होवाथी अत्युग्रउद्यमादिथी तेओ जय पाम्या. केटलाके शृंगार अने लोकेच्छित साधनोथी मनुष्यनां मन हरण कर्यां. दुनियां मोहमां तो मूळे डुबी पडी छे, एटले ए इच्छित दर्शनथी गाडररूपे थइने तेओए राजी थइ तेनुं कहेवुं मान्य राख्युं. केटलाके नीति, तथा कंइ वैराग्यादि गुण देखी इत्यादिकथी ते कथन मान्य राख्युं. प्रवर्त्तकनी बुद्धि तेओ करतां विशेष होवाथी तेने पछी भगवानरूपज मानी लीधा. केटलाके वैराग्यथी धर्ममत फेलावी पाछळथी केटलांक सुखशीलियां साधननो बोध खोशी पोताना मतनी वृद्धि करी. पोतानो मत स्थापन करवानी महान् भ्रमनाए अने पोतानी अपूर्णता इत्यादिक गमे ते कारणथी बीजानुं कहेलुं पोताने न रूच्युं एटले तेणे जूदोज राह काढ्यो. आम अनेक मत-मतांतरनी जाळ थती गइ. चार पांच पेढी एकनो एक धर्म मत रह्यो एटले पछी ते कुळधर्म थइ पड्यो. एम स्थळे स्थळे थतुं गयुं.



शिक्षापाठ ६० धर्मना मतभेद भाग ३.

जो एक दर्शन पूर्ण अने सत्य न होय तो बीजा धर्म मतने अपूर्ण अने असत्य कोइ प्रमाणथी कही शकाय नहीं; ए माटे थइने जे एक दर्शन पूर्ण अने सत्य छे तेनां तत्वप्रमाणथी बीजा मतोनी अपूर्णता अने एकांतिकता जोइए.

ए बीजा धर्ममतोमां तत्वज्ञान संबंधी यथार्थ सूक्ष्म विचारो नथी. केटलाक जगत्कर्त्तानो बोध करे छे, पण जगत्कर्त्ता प्रमाणथी सिद्ध थइ शकतो नथी. केटलाक ज्ञानथी मोक्ष छे एम कहे छे ते एकांतिक छे तेमज क्रियाथी मोक्ष छे एम कहेनारा पण एकांतिक छे. ज्ञान, क्रिया ए बन्नेथी मोक्ष कहेनारा तेना यथार्थ स्वरुपने जाणता नथी अने ए बन्नेना भेद श्रेणिबंध नथी कही शक्या एज एमनी सर्वज्ञतानी खामी जणाइ आवे छे. ए धर्ममतस्थापको सत्देवतत्वमां कहेलां अष्टादश दूषणोथी रहित नहोता एम एओए उपदेशेलां शास्त्रो अथवा तेमना चरित्रोपरथी पण तत्वनी द्रष्टिए जोतां देखाय छे. केटलाक मतोमां हिंसा, अब्रह्मचर्य ई० अपवित्र आचरणनो बोध छे ते तो सहजमां अपूर्ण अने सरागीना स्थापेलां जोवामां आवे छे. कोइए एमां सर्वव्यापक मोक्ष, कोइए कंइ नहीं ए रुप मोक्ष, कोइए साकारमोक्ष अने कोइए अमूक काळसुधी रही पतित थवुं ए रुप मोक्ष मान्यो छे; पण एमांथी कोइ वात तेओनी सप्रमाण थइ शकती नथी. एओना विचारोनुं अपूर्णपणुं निस्पृह तत्ववेत्ताओए दर्शाव्युं छे ते यथावस्थित जाणवुं योग्य छे.

वेद शीवायना बीजा मतोना प्रवर्त्तकोनां चरित्रो अने विचारो इत्यादिक जाणवाथी ते मतो अपूर्ण छे एम जणाई आवे छे, वर्त्तमानमां जे वेदो छे ते घणा प्राचीन ग्रंथो छे तेथी ते मतनुं प्राची-

नपणुं छे, परंतु ते पण हिंसाए करीने दूषित होवाथी अपूर्ण छे, तेमज सरागीनां वाक्य छे एम स्पष्ट जणाय छे.

जे पूर्ण दर्शन विषे अत्रे कहेवानुं छे ते जैन एटले निरागीनां स्थापन करेलां दर्शन विषे छे. एना बोधदाता सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी हता; काळभेद छे तोपण ए वात सिद्धांतिक जणाय छे. दया, ब्रह्मचर्य, शील, विवेक, वैराग्य, ज्ञान, क्रियादि एना जेवां पूर्ण एकेए वर्णव्यां नथी. तेनी साथे शुद्ध आत्मज्ञान, तेनी कोटिओ, जीवनां च्यवन, जन्म, गति, विगति, योनिद्वार, प्रदेश, काळ, तेनां स्वरुप ए विषे एवो सूक्ष्म बोध छे के जे वडे तेनी सर्वज्ञतानी निःशंकता थाय. काळभेदे परंपराम्नायथी केवळ ज्ञानादि ज्ञानो जोवामां नथी आवतां, छतां जे जे जिनेश्वरनां रहेलां सिद्धांतिक वचनो छे ते अखंड छे. तेओना केटलाक सिद्धांतो एवा सुक्ष्म छे के जे अकेक विचारतां आखी जींदगी वही जाय.

जिनेश्वरनां कहेलां धर्मतत्वथी कोइ पण प्राणीने लेश खेद उत्पन्न थतो नथी. सर्व आत्मानी रक्षा अने सर्वात्मशक्तिनो प्रकाश एमां रह्यो छे. ए भेदो वांचवाथी, समजवाथी, अने ते पर अति अति सूक्ष्म विचार करवाथी आत्मशक्ति प्रकाश पामी जैनदर्शननी सर्वोत्कृष्टपणानी हा कहेवरावे छे. बहु मननथी सर्व धर्ममत जाणी पछी तुलना करनारने आ कथन अवश्य सिद्ध थशे.

निर्दोष दर्शननां मूळतत्वो अने सदोष दर्शननां मूळतत्वो विषे बीजे प्रसंगे विस्तारथी कहीशुं.

शिक्षापाठ ६१ सुख विषे विचार भाग १.

एक ब्राह्मण दरिद्रावस्थाथी बहु पीडातो हतो. तेणे कंटाळीने छेवटे देवनुं उपासन करी लक्ष्मी मेळववानो निश्चय कर्यो. पोते विद्वान् होवाथी उपासन करवा पहेलां विचार कर्यो के कदापि

देव तो कोइ तुष्ट थशे; पण पछी ते आगळ सुख कयुं मागवुं ? तप करी पछी मागवानुं कंइ सूजे नहि, अथवा न्यूनाधिक सूजे ता करल तप पण निरर्थक जाय; माटे एक वखत आखा देशमां प्रवास करवो. संसा ना महत्पुरुषोनां धाम, वैभव अने सुख जोवां. एम निश्चय करी ते प्रवासमां नीकळी पड्यो. भारतनां जे जे रमणिय अने रीद्धिमान शहेरो हतां ते जोयां. युक्तिप्रयुक्तिए राजाधिराजनां अंतःपुर, सुख अने वैभव जोयां. श्रीमंतोना आवास, वहिवट, बागबगीचा अने कुटुंब परिवार जोया; पण एथी तेनुं कोइ रीते मन मान्युं नहि. कोइने स्त्रीनुं दुःख, कोइने पतिनुं दुःख, कोइने अज्ञानथी दुःख, कोइने वहालांना वियोगनुं दुःख, कोइने निर्धनतानुं दुःख, कोइने लक्ष्मानी उपाधिनुं दुःख, कोइने शरीर संबंधी दुःख, कोइने पुत्रनुं दुःख, कोइने शत्रुनुं दुःख, कोइने जडतानुं दुःख, कोइने माबापनुं दुःख, कोइने वैधव्य दुःख, कोइने कुटुंबनुं दुःख, काइने पोतानां नीच कुळनुं दुःख, कोइने प्रीतिनुं दुःख, कोइने इर्ष्यानुं दुःख, कोइने हानिनुं दुःख; एम एक, बे विशेष के बधां दुःख स्थळे स्थळे ते विप्रना जोवामां आव्यां. एथी करीने एनुं मन कोई स्थळे मान्युं नहि; ज्यां जुए त्यां दुःख तो खरुंज. कोइ स्थळे संपूर्ण सुख तेना जोवामां आव्युं नहि. हवे त्यारे शुं मागवुं ? एम विचारतां विचारतां एक महा धनाढ्यनी प्रशंसा सांभळीने ते द्वारिकामां आव्यो. द्वारिकां महा रीद्धिमान, वैभवयुक्त, बागबगीचावडे करीने सुशोभित अने वस्तीथी भरपूर शहेर तेने लाग्युं. सुंदर अने भव्य आवासो जोतो, अने पूछतो पूछतो ते पेला महा धनाढ्यने घेर गयो. श्रीमंत मुखग्रहमां बेठा हता. तेणे अतिथि जाणीने ब्राह्मणने सन्मान आप्युं, कुशळता पूछी; अने तेओने माटे भोजननी योजना करावी. जरा वार जवा दई धीरजथी शठ ब्राह्मणने पूछयुं: आपनुं आगमनकारण जो मने कहेवा जेवुं

होय तो कहो. ब्राह्मणे कह्युंः हमणा आप क्षमा राखो, आपनो सघळी जातनो वैभव, धाम, बागबगीचा इत्यादि मने देखाडवुं पडशे; ए जोया पछी आगमनकारण कहीश. शेठे एनुं कंइ मर्मरुप कारण जाणीने कह्युंः भले, आनंदपूर्वक आपनी इच्छा प्रमाणे करो. जम्या पछी ब्राह्मणे शेठने पोते साथे आवीने धामादिक बतावववा विनंति करी. धनाढ्ये ते मान्य राखी, अने पोते साथे जई वागबगीचा, धाम, वैभव ए सघळुं देखाडयुं. शेठनी स्त्री अने पुत्रो पण त्यां ब्राह्मणना जोवामां आव्यां. तेओए योग्यतापूर्वक ते ब्राह्मणनो सत्कार कर्यो. एओनां रुप, विनय अने स्वच्छता जोइने तेमज तेओनी मधुरवाणी सांभळीने ब्राह्मण राजी थयो; पछी तेनी दुकाननो वहिवट जोयो. तेमां सोएक वहिवटिया त्यां बेठेला जोया. तेओ पण मायाळु, विनयी अने नम्र ते ब्राह्मणना जोवामां आव्या. एथी ते बहु संतुष्ट थयो. एनुं मन अहीं कंइक संतोषायुं. सुखी तो जगत्मां आज जणाय छे एम तेने लाग्युं.

शिक्षापाठ ६२ सुख विषे विचार भाग २.

केवां एनां सुंदर घर छे! केवी सुंदर तेनी स्वच्छता अने जाळवणी छे! केवी शाणी अने मनोज्ञा तेनी सुशीळ स्त्री छे! केवा तेना कांतिमान अने कह्यागरा पुत्रो छे! केवुं संपीलुं तेनुं कुटुंब छे! लक्ष्मीनी महेर पण एने त्यां केवी छे! आखा भारतमां एना जेवो बीजो कोइ सुखी नथी. हवे तप करीने जो हुं मागुं तो आ महाधनाढ्य जेवुंज सघळुं मागुं, बीजी चाहना करुं नहीं.

दिवस वीती गयो अने रात्रि थइ. सुवानो वखत थयो. धनाढ्य अने ब्राह्मण एकांतमां बेठा हता, पछी धनाढ्ये विप्रने आगमन कारण कहेवा विनंति करी.

विप्रः—हुं घेरथी एवो विचार करी नीकळ्यो हतो के बधाथी वधारे सुखी कोण छे ते जोवुं, अने तप करीने पछी एना जेवुं सुख संपादन करवुं. आखा भारत ने तेनां सघळां रमणीय स्थळो जोयां, परंतु कोइ राजाधिराजने त्यां पण मने संपूर्ण सुख जोवामां आव्युं नहि. ज्यां जोयुं त्यां आधि, व्याधि अने उपाधि जोवामां आवी. आप भणी आवतां आपनी प्रशंसा सांभळी एटले हुं अहीं आव्यो अने संतोष पण पाम्यो. आपना जेवी रीद्धि, सत्पुत्र, कमाइ, स्त्री, कुटुंब, घर वगेरे मारा जोवामां क्यांय आव्युं नथी. आप पोते पण धर्मशील, सद्‌गुणी अने जिनेश्वरना उत्तम उपासक छो. एथी हुं एम मानुं छुं के आपना जेवुं सुख बीजे नथी. भारतमां आप विशेष सुखी छो. उपासना करीने कदापि देवकने याचुं तो आपना जेवी सुखस्थिति याचुं.

धनाढ्यः—पंडितजी ! आप एक बहु मर्मभरेला विचारथी नीकळ्या छो, एटले अवश्य आपने जेम छे तेम स्वानुभवी वात कहुं छुं; पछी जेम तमारी इच्छा थाय तेम करजो. मारे त्यां आपे जे जे सुख जोयां ते ते सुख भारतसंबंधमां क्यांय नथी एम आपे कह्युं तो तेम हशे, पण खरुं ए मने संभवतुं नथी; मारो सिद्धांत एवो छे के जगत्‌मां कोइ स्थळे वास्तविक सुख नथी. जगत् दुःखथी करीने दाझतुं छे तमे मने सुखी जुओ छो परंतु वास्तविक रीते हुं सुखी नथी.

विप्रः—आपनुं आ कहेवुं कोइ अनुभवसिद्ध अने मार्मिक हशे. में अनेक शास्त्रो जोयां छे, छतां मर्मपूर्वक विचारो आवा लक्षमां लेवा परिश्रमज लीधो नथी. तेम मने एवो अनुभव सर्वने माटे थइने थयो नथी. हवे आपने शुं दुःख छे ? ते मने कहो.

धनाढ्यः—पंडितजी ! आपनी इच्छा छे तो हुं कहुं छुं. ते लक्षपूर्वक मनन करवा जेवुं छे, अने ए उपरथी कंइ रस्तो पामवा जेवुं छे.

शिक्षापाठ ६३ सुख विषे विचार भाग ३.

जे स्थिति हमणां मारी आप जुओ छो तेवी स्थिति लक्ष्मी, कुटुंब अने स्त्री संबंधमां आगळ पण हती. जे वखतथी हुं वात करुं छुं, ते वखतने लगभग वीश वर्ष थयां. व्यापार, अने वैभवनी बहोळाश ए सघळुं वहिवट अवळो पडवाथी घटवा मंडयुं. कोट्यावधि कहेवातो हुं उपराचापरी खोटना भार वहन करवाथी लक्ष्मी वगरनो मात्र त्रण वर्षमां थइ पड्यो. ज्यां केवळ सवळुं धारीने नांख्युं हतुं त्यां अवळुं पडयुं. एवामां मारी स्त्री पण गुजरी गइ. ते वखतमां मने कंइ संतान नहोतुं. जबरी खोटोने लीधे मारे अहींथी नीकळी जवुं पडयुं. मारां कुटुंबीओए थती रक्षा करी, परंतु ते आभ फाट्यानुं थीगडुं हतुं. अन्नने अने दांतने वेर थयानी स्थितिए, हुं बहु आगळ नीकळी पड्यो. ज्यारे हुं त्यांथी नीकळ्यो त्यारे मारां कुटुंबीओ मने रोकी राखवा मंड्यां के तें गामनो दरवाजो पण दीठो नथी माटे तने जवा दइ शकाय नहि. तारुं कोमळ शरीर कंइ पण करी शके नहि, अने तुं त्यां जा अने सुखी था तो पछी आवे पण नहि; माटे ए विचार तारे मांडी वाळवो. घणा प्रकारथी तेओने समजावी, सारी स्थितिमां आवीश त्यारे अवश्य अहीं आवीश. एम वचन दइ जावाबंदर हुं पर्यटने नीकळी पड्यो.

प्रारब्ध पाछां वळवानी तैयारी थइ. दैवयोगे मारीकने एक दमडी पण रही नहोती. एक के बे महीना उदरपोषण चाले तेवुं साधन रह्युं नहोतुं, छतां जावामां हुं गयो; त्यां मारी बुद्धिए प्रारब्ध खीलव्यां. जे वहाणमां हुं बेठो हतो ते वहाणना नाविके मारी चंचळता अने नम्रता जोइने पोताना शेठ आगळ मारां

दुःखनी वात करी. ते शेठे मने बोलावी अमुक काममां गोठव्यो, जेमां हुं मारा पोषणथी चोगणुं पेदा करतो हतो. ए वेपारमां मारुं चित्त ज्यारे स्थिर थयुं त्यारे भारतसाथे ए वेपार वधारवा में प्रयत्न कर्युं; अने तेमां फाव्यो, बे वर्षमां पांच लाख जेटली कमाइ थइ. पछी शेठ पासेथी राजी खुशीथी आज्ञा लइ में केटलोक माल खरीदी द्वारिकां भणी आववानुं कयु. थोडे काळे त्यां आवी पहोंच्यो, त्यारे बहु लोक सन्मान आपवा मने सामा आव्या हता. हुं मारां कुटुंबीओने आनंदभावथी जइ मळ्यो. तेओ मारा भाग्यनी प्रशंसा करवा लाग्या. जावेथी लीधेला माले मने एकना पांच कराव्या. पंडितजी ! त्यां केटलाक प्रकारथी मारे पाप करवां पड्यां हतां; पुरुं खावा पण हुं पाम्यो नहोतो; परंतु एकवार लक्ष्मी साध्य करत्रानो जे प्रतिज्ञाभाव कर्यो हतो ते प्रारब्धं योगथी पळ्यो. जे दुःखदायक स्थितिमां हुं हतो ते दुःखमां शुं खामी हती ? स्त्री, पुत्र ए तो जाणे नहोतांज, माबाप आगळथी परलोक पाम्यां हतां. कुटुंबीओना वियोगवडे अने विना दमडीए जावे जे वखते हुं गयो ते वखतनी स्थिति अज्ञानदृष्टिथी आंखमां आंसु आणी दे तेवी छे; आ वखते पण धर्ममां लक्ष राख्युं हतुं. दिवसनो अमुक भाग तेमां रोकतो हतो, ते लक्ष्मी के एवी लालचे नहीं; परंतु संसारदुःखथी ए तारनार साधन छे एम गणीने. मोतनो भय क्षण पण दूर नथी, माटे ए कर्त्तव्य जेम बने तेम त्वराथी करी लेवुं, ए मारी मुख्य नीति हती. दुराचारथी कंइ सुख नथी, मननी तृप्ति नथी, अने आत्मानी मलिनता छे. ए तत्व भणी में मारुं लक्ष दोरेलुं हतुं.



शिक्षापाठ ६४ सुख विषे विचार भाग ४.

अहीं आव्या पछी हुं सारां ठेकाणांनी कन्या पाम्यो. ते पण सुलक्षणी अने मर्यादाशील नीवडी, ए वडे करीने मारे त्रण पुत्र थया. वहिवट प्रबळ होवाथी अने नाणुं नाणांने वधारतुं होवाथी दश वर्षमां हुं महा कोट्याधिपति थइ पड्यो. पुत्रनां नीति, विचार, अने बुद्धि उत्तम रहेवा में बहु सुंदर साधनो गोठव्यां. जेथी तेओ आ स्थिति पाम्या छे. मारां कुटुंबीओने योग्य योग्य स्थळ गोठवी तेओनी स्थितिने सुधरती करी, दुकानना में अमुक नियमो बांध्या. उत्तम धामनो आरंभ पण करी लीधो. आ फक्त एक ममत्व खातर कर्युं. गयेलुं पाछुं मेळव्युं, अने कुळ परंपरानुं नामांकितपणुं जतुं अटकाव्युं, एम कहेवरावववा माटे में आ सघळुं कर्युं; एने हुं सुख मानतो नथी. जो के हुं बीजा करतां सुखी छुं, तोपण ए शाता-वेदनी छे. सत्सुख नथी. जगत्मां बहुधा करीने अशातावेदनी छे. में धर्ममां मारो काळ गाळवानो नियम राख्यो छे; शास्त्रनां मनन, सत्पुरुषोना समागम, यमनियम, एक महीनामां बार दिवस ब्रह्म-चर्य, बनतुं गुप्तदान, सर्व व्यवहार संबंधीनी उपाधिमांथी केटलोक भाग बहुं अंशे में त्याग्यो छे. पुत्रोने व्यवहारमां यथायोग्य करीने हुं निर्ग्रंथ थवानी इच्छा राखुं छुं. हमणां निर्ग्रंथ थइ शकुं तेम नथी, एमां संसारमोहिनी के एवुं कारण नथी; परंतु ते पण धर्मसंबंधी कारण छे. गृहस्थ धर्मनां आचरण बहु कनिष्ठ थइ गयां छे, अने मुनियो ते सुधारी शकता नथी. गृहस्थ गृहस्थने विशेष बोध करी शके, आचरणथी पण असर करी शके. एटला माटे थइने धर्म-संबंधे गृहस्थवर्गने हुं घणे भागे बोधी यमनियममां आणुंछुं. दर-सप्ताहिके आपणे त्यां पांचसें जेटला सद्गृहस्थोनी सभा भराय

छे. आठ दिवसनो नवो अनुभव अने बाकीनो आगळनो धर्मानुभव एमने बे त्रण मुहुर्त बोधुं छुं, मारी स्त्री धर्मशास्त्रनो केटलोक बोध पामेली होवाथी ते पण स्त्रीवर्गने उत्तम यमनियमनो बोध करी सप्ताहिक सभा भरे छे. पुत्रो पण शास्त्रनो बनतो परिचय राखे छे. विद्वानोनुं सन्मान, अतिथिनो विनय, अने सामान्य सत्यता–एकज भाव–एवा नियमो बहुधा मारा अनुचरो पण सेवे छे. एओ बधा एथी शाता भोगवी शके छे. लक्ष्मीनी साथे मारा नीतिधर्म, सद्गुण, विनय एणे जनसमुदायने बहु सारी असर करी छे. राजासहित पण मारी नीतिवात अंगीकार करे तेवुं थयुं छे. आ सघळुं आत्मप्रशंसा माटे हुं कहेतो नथी, ए आपे स्मृतिमां राखवुं; मात्र आपना पूछेला खुलासा दाखल आ सघळुं संक्षेपमां कहेतो जउं छुं.

शिक्षापाठ ६५ सुख विषे विचार भाग ५.

आ सघळां उपरथी हुं सुखी छुं एम आपने लागी शकशे, अने सामान्य विचारे मने बहु सुखी मानो तो मानी शकाय तेम छे. धर्म, शील अने नीतिथी तेमज शास्त्रावधानथी मने जे आनंद उपजे छे ते अवर्णनिय छे. पण तत्व दृष्टिथी हुं सुखी न मनाउं. ज्यां सुधी सर्व प्रकारे बाह्य अने अभ्यंतर परिग्रह में त्याग्यो नथी, त्यां सुधी राग दोषनो भाव छे. जो के ते बहु अंशे छे. नथी पण छे, तो त्यां उपाधि पण छे. सर्वसंग परित्याग करवानी मारी संपूर्ण आकांक्षा छे, पण ज्यां सुधी तेम थयुं नथी त्यां सुधी गणातां हजु कोइ प्रियजननो वियोग, व्यवहारमां हानि, कुटुंबीनुं दुःख ए थोडे अंशे पण उपाधि आपी शके. पोताना देहपर मोत शिवाय पण नाना प्रकारना रोगनो संभव छे. माटे केवळ निर्ग्रंथ, बाह्यां-

भ्यतर परिग्रहनो त्याग, अल्पारंभनो त्याग ए सघळुं नथी थयुं त्यां सुधी हुं मने केवळ सुखी मानतो नथी. हवे आपने तत्वनी द्रष्टिए विचारतां मालम पडशे के लक्ष्मी, स्त्री, के कुटुंब एवडे सुख नथी. अने एने सुख गणुं तो ज्यारे मारी स्थिति पतित थइ हती त्यारे ए सुख क्यां गयुं हतुं ? जेनो वियोग छे, जे क्षणभंगुर छे अने ज्यां अव्याबाधपणुं नथी ते संपूर्ण के वास्तविक सुख नथी. एटला माटे थइने हुं मने सुखी कही शकतो नथी. हुं बहु विचारी विचारी व्यापार वहिवट करतो हतो तोपण मारे आरंभोपाधि, अनीति अने लेश पण कपट सेववुं पडयुं नथी, एम तो नथीज. अनेक प्रकारना आरंभ, अने कपट मारे सेववां पड्यां हतां. आप जो धारता होके देवोपासनथी लक्ष्मी प्राप्त करवी, तो ते जो पूण्य न होय तो कोइ काले मळनार नथी. पूण्यथी पामेली लक्ष्मी महारंभ कपट अने मानप्रमुख वधारवां ते महापापनां कारण छें, पाप नरकमां नाखे छे. पापथी, आत्मा महान् मनुष्यदेह एळे गुमावी दे छे. एक तो जाणे पुण्यने खाइ जवां, बाकी वळी पापनुं बंधन करवुं, लक्ष्मीनी अने ते वडे आखा संसारनी उपाधि भोगववी ते हुं धारुं छुं के विवेकी आत्माने मान्य न होय. में जे कारणथी लक्ष्मी उपार्जन करी हती, ते कारण में आगळ आपने जणाव्युं हतुं. जेम आपनी इच्छा होय तेम करो. आप विद्वान छो. हुं विद्वानने चाहुं छुं. आपनी अभिलाषा होय तो धर्मध्यानमां प्रसस्त थइ सहकुटुंब अहीं भले रहो. आपनी उपजीविकानी सरळ योजना जेम कहो तेम हुं रुचिपूर्वक करावी आपुं. अहीं शास्त्राध्ययन अने सत्वस्तुनो उपदेश करो. मिथ्यारंभोपाधिनी लोलुप्तामां हुं धारुं छुं के न पडो, पछी आपनी जेवी ईच्छा.

पंडितः-आपे आपना अनुभवनी बहु मनन करवा जेवी

आख्यायिका कही. आप अवश्य कोइ महात्मा छो. पूण्यानुबंधी-पुण्यवान जीव छो, विवेकी छो, आपनी विचारशक्ति अद्भूत छे; हुं दरिद्रताथी कंटाळीने जे इच्छा राखतो हतो ते एकांतिक हती. आवा सर्व प्रकारना विवेकी विचार में कर्या नहोता. आवो अनुभव—आवी विवेकशक्ति हुं गमे तेवो विद्वान छुं छतां मारामां नथी, ए वात हुं सत्यज कहुं छुं. आप मारे माटे जे योजना दर्शावी ते माटे आपनो बहु उपकार मानुं छुं; अने नम्रतापूर्वक ए हुं अंगिकार करवा हर्ष बतावुं छुं. हुं उपाधिने चाहतो नथी. लक्ष्मीनो फंद उपाधिज आपे छे. आपनुं अनुभवसिद्ध कथन मने बहु रुच्युं छे. संसार बळतोज छे. एमां सुख नथी. आपे निरुपाधि मुनिसुखनी प्रशंसा कही ते सत्य छे. ते सन्मार्ग परिणामे सर्वोपाधि, आधि व्याधिथी तेमज सर्व अज्ञानभावथी रहित एवा शाश्वत मोक्षनो हेतु छे.

शिक्षापाठ ६६ सुख विषे विचार भाग ६.

धनाढ्यः—आपने मारी वात रुची एथी हुं निराभिमानपूर्वक आनंद पामुं छुं. आपने माटे हुं योग्य योजना करीश. मारा सामान्य विचारो कथानुरूप अहीं कहेवानी हुं आज्ञा लउं छुं.

जेओ मात्र लक्ष्मीने उपार्जन करवामां कपट, लोभ अने मायामां मुंझाया पड्या छे ते बहु दुःखी छे. तेनो ते पुरो उपयोग के अधुरो उपयोग करी शकता नथी. मात्र उपाधिज भोगवे छे. ते असंख्यात पाप करे छे. काळ अचानक लइने उपाडी जाय छे. अधोगति पामी ते जीव अनंतसंसार वधारे छे. मळेलो मनुष्य देह निर्माल्य करी नाखे छे जेथी ते निरंतर दुःखीज छे.

जेओए पोतानां उपजीविका जेटलां साधनमात्र अल्पारंभथी राख्यां छे, शुद्ध एक पत्निव्रत, संतोष, परात्मानी रक्षा, यम, नियम, परोपकार, अल्पराग, अल्पद्रव्यमाया अने सत्य तेमज शास्त्राध्ययन राखेल छे, सत्पुरुषोने सेवे छे, निर्ग्रंथतानो मनोरथ राख्यो छे, बहु प्रकारे करीने संसारथी जे त्यागी जेवा छे, जेमां वैराग्य अने विवेक उत्कृष्ट छे तेवा पुरूषो पवित्रतामां सुखपूर्वक काळ निर्गमन करे छे.

सर्व प्रकारना आरंभ अने परिग्रहथी जेओ रहित थया छे. द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी जेओ अप्रतिबंधपणे विचरे छे, शत्रु, मित्र प्रत्ये समान द्रष्टिवाळा अने शुद्ध आत्मध्यानमां जेमनो काळ निर्गमन थाय छे, अथवा स्वाध्याय ध्यानमां लीन छे. जितेंद्रिय अने जित कषाय एवा ते निर्ग्रंथो परम सुखी छे.

सर्व घनघाती कर्मनो क्षय जेमणे कर्यो छे, चार कर्म पातळां जेनां पड्यां छे, जे मुक्त छे, जे अनंतज्ञानी अने अनंतदर्शि छे ते तो संपूर्ण सुखीज छे. मोक्षमां तेओ अनंत जीवनना अनंत सुखमां सर्व कर्म विरक्तताथी विराजे छे.

आम सत्पुरुषोए कहेलो मत मने मान्य छे. पहेलो तो मने त्याज्य छे. बीजो हमणां मान्य छे; अने घणे भागे ए ग्रहण करवानो मारो बोध छे. त्रीजो बहु मान्य छे. अने चोथो तो सर्वमान्य अने सच्चिदानंद स्वरुप छे.

एम पंडितजी आपनी अने मारी सुख संबंधी वातचित थई. प्रसंगोपात ते वात चर्चता जइशुं. तेपर विचार करीशुं. आ विचारो आपने कह्याथी मने बहु आनंद थयो छे. आप तेवा विचारने अनुकूळ थया एथी वळी आनंदमां वृद्धि थई छे. एम परस्पर वातचित करतां करतां हर्षभेर पछी तेओ समाधिभावथी शयन करी गया.

जे विवेकीओ आ सुख संबंधी विचार करशे तेओ बहु तत्व अने आत्मश्रेणिनी उत्कृष्टताने पामशे. एमां कहेलां अल्पारंभी, निरारंभी अने सर्वमुक्त लक्षणो लक्षपूर्वक मनन करवा जेवां छे. जेम बने तेम अल्पारंभी थई समभावथी जनसमुदायनां हित भणी वळवुं. परोपकार, दया, शांति, क्षमा अने पवित्रतानुं सेवन करवुं ए बहु सुखदायक छे. निर्ग्रंथता विषे तो विशेष कहेवानुं नथी. मुक्तात्मा अनंत सुखमयज छे.

शिक्षापाठ ६७ अमूल्य तत्व विचार.

हरिगीत छंद.

बहु पूण्यकेरा पुंजथी शुभ देह मानवनो मळ्यो,
तोये अरे! भवचक्रनो आंटो नहिं एके टळ्यो;
सुख प्राप्त करतां सुख टळे छे लेश ए लक्षे लहो,
क्षण क्षण भयंकर भाव मरणे कां अहो राची रहो? १

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, शुं वध्युं ते तो कहो,
शुं कुटुंब के परिवारथी वधवापणुं, ए नय ग्रहो;
वधवापणुं संसारनुं नर देहने हारी जवो,
एनो विचार नहीं अहोहो! एक पळ तमने हवो!!! २

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, ल्यो गमे त्यांथी भले;
ए दिव्य शक्तिमान जेथी जंजिरेथी नीकळे!!
परवस्तुमां नहि मुंझवो, एनी दया मुजने रही;
ए त्यागवा सिद्धांत के पश्चात दुःख ते सुख नहि. ३

हुं कोण छुं? क्यांथी थयो? शुं स्वरुप छे मारुं खरुं?
कोना संबंधे वळगणा छे? राखुं के ए परहरुं?
एना विचार विवेकपूर्वक शांत भावे जो कर्या;
तो सर्व आत्मिकज्ञानना सिद्धांत तत्व अनुभव्यां. ४

ते-प्राप्त करवा वचन कोनुं सत्य केवळ मानवुं?
निर्दोष नरनुं कथन मानो "तेह" जेणे अनुभव्युं;
रे! आत्म तारो! आत्म तारो! शीघ्र एने ओळखो;
सर्वात्ममां समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो. ५

शिक्षापाठ ६८ जितेंद्रियता.

ज्यां सुधी जीभ स्वादिष्ट भोजन चाहे छे; ज्यां सुधी नासिका सुगंधी चाहे छे; ज्यां सुधी कान वारांगना आदिनां गायन अने वाजिंत्र चाहे छे; ज्यां सुधी आंख वनोपवन जोवानुं लक्ष राखे छे; ज्यां सुधी त्वचा सुगंधीलेपन चाहे छे, त्यां सुधी, ते मनुष्य निरोगी निर्ग्रंथ, निःपरिग्रही, निरारंभी अने ब्रह्मचारी थई शकतो नथी. मनने वश करवुं ए सर्वोत्तम छे. एना वडे सघळी इंद्रियो वश करी शकाय छे. मन जीतवुं बहु दुर्घट छे. एक समयमां असंख्यात योजन चालनार अश्व ते मन छे. एने थकाववुं बहु दुर्लभ छे. एनी गति चपळ अने न झाली शकाय तेवी छे. महा ज्ञानीओए ज्ञानरुपी लगामवडे करीने एने स्थंभित राखी सर्व जय कर्यो छे.

उत्तराध्ययन सूत्रमां नमिराज महर्षिए शक्रेंद्रप्रत्ये एम कह्युं के दश लाख सुभटने जीतनार कइक पड्या छे; परंतु स्वात्माने जीतनारा बहु दुर्लभ छे; अने ते दश लाख सुभटने जीतनार करतां अत्युत्तम छे.

मनज सर्वोपाधिनी जन्मदाता भूमिका छे. मनज बंध अने मोक्षनुं कारण छे. मनज सर्व संसारनी मोहिनी रुप छे. ए वश थतां आत्मस्वरुपने पामवुं लेश मात्र दुल्लभ नथी.

मनवडे इंद्रियोनी लोलुप्ता छे. भोजन, वाजिंत्र, सुगंधी, स्त्रीनुं निरीक्षण, सुंदर विलेपन ए सघळुं मनज मागे छे. ए मोहिनी आडे ते धर्मने संभारवा पण देतुं नथी. संभार्या पछी सावधान थवा देतुं नथी. सावधान थया पछी पतितता करवामां प्रवृत्त थाय छे. एमां नथी फावतुं त्यारे सावधानीमां कंइ न्यूनता पहोंचाडे छे. जेओ ए न्यूनता पण न पामतां अडग रहीने ते मनने जीते छे तेओ सर्वथा सिद्धिने पामे छे.

मन कोइथीज अकस्मात जीती शकाय छे, नहि तो गृहस्थाश्रमे अभ्यास करीने जीताय छे; ए अभ्यास निर्ग्रंथतामां बहु थइ शके छे छतां सामान्य परिचय करवा मांगिए तो तेनो मुख्य मार्ग आ छे के ते जे दुरेच्छा करे तेने भूली जवी तेम करवुं नहि. ते ज्यारे शब्दस्पर्शादि विलास इच्छे त्यारे आपवां नहि. टुंकामां आपणे एथी दोरावुं नहि पण आपणे एने दोरवुं; मोक्षमार्ग चिंतव्यामां रोकवुं. जितेंद्रियता विना सर्व प्रकारनी उपाधि उभीज रही छे. त्यागे न त्याग्या जेवो थाय छे, लोक लज्जाए तेने सेववो पडे छे. माटे अभ्यासे करीने पण मनने स्वाधीनतामां लई अवश्य आत्महित करवुं.

शिक्षापाठ ६९ ब्रह्मचर्यनी नववाड.

ज्ञानीओए थोडा शब्दोमां केवा भेद अने केवुं स्वरुप बतावेल छे! ए वडे केटली बधी आत्मोन्नति थाय छे! ब्रह्मचर्य जेवा गंभीर विषयनुं स्वरुप संक्षेपमां अति चमत्कारिक रीते

आप्युं छे. ब्रह्मचर्यरूपी एक सुंदर झाड अने तेने रक्षा करनारी जे नव विधियो तेने वाडनुं रुप आपी आचार पाळवामां विशेष स्मृति रही शके एवी सरळता करी छे. ए नव वाड जेम छे तेम अहीं कही जउं छु.

१ वसति-ब्रह्मचारी साधुए स्त्री, पशु के पडंग एथी संयुक्त वसतिमां रहेवुं नहीं. स्त्री बे प्रकारनी छे;-मनुष्यिणी अने देवांगना. ए प्रत्येकना पाछा बे बे भेद छे. एकतो मूळ अने बीजी स्त्रीनी मूर्ति के चित्र. एमांथी गमे ते प्रकारनी स्त्री ज्यां होय त्यां ब्रह्मचा। ि साधुए न रहेवुं, केमके ए विकारहे, छे. पशु एटले तिर्य ंणी. गाय भेंस इत्यादिक जे स्थळे होय ते स्थळे न रहेवुं; अने पडंग एटले नपुंसक एनो वास होय त्यां पण न रहेवुं. एवा प्रका ना वास ब्रह्मचर्यनी हानि करे छे. तेओना कामचेष्टा हावभाव इत्यादिक विकारो मनने भ्रष्ट करे छे.

२ कथा.-मात्र एकली स्त्रियोनेज के एकज स्त्रीने धर्मोपदेश ब्रह्मचारीए न करवो. कथा ए मोहनी उत्पत्ति रुप छे. ब्रह्मचारीए स्त्रीना रुप कामविलास संबंधी ग्रंथो वांचवा नहीं, तेमज जेथी चित्त चळे एवा प्रकारनी गमे ते शृंगार संबंधी कथा ब्रह्मचारीए करवी नहीं.

३ आसन.-स्त्रियोनी साथे एक आसने न बेसवुं, तेमज ज्यां स्त्री बेठी होय त्यां बे घडी सुधीमां ब्रह्मचारीए न बेसवुं. ए स्त्रियोनी स्मृतिनुं कारण छे, एथी विकारनी उत्पत्ति थाय छे. एम भगवाने कह्युं छे.

४ इंद्रियनिरीक्षण-स्त्रीओनां अंगोपांग ब्रह्मचारी साधुए न जोवां, न निरखवां. एनां अमुक अंगपर द्रष्टि एकाग्र थवाथी विकारनी उत्पत्ति थाय छे.

५ कुडयांतर–भींत, कनात के आटानो अंतरपट राखी स्त्री–पुरुष ज्यां मैथुन सेवे त्यां ब्रह्मचारीए रहेवुं नहि. कारण शब्द, चेष्टादिक विकारनां कारण छे.

६ पूर्वक्रीडा–पोते गृहस्थावासमां गमे तेवी जातना शृंगारथी विषयक्रीडा करी होय तेनी स्मृति करवी नहीं; तेम करवाथी ब्रह्मचर्य भंग थाय छे.

७ प्रणीत–दूध, दहीं, घृतादि मधुरा अने चीकाशवाळा पदार्थोनो बहुधा आहार न करवो. एथी वीर्यनी वृद्धि अने उन्माद थाय छे अने तेथी कामनी उत्पत्ति थाय छे. माटे ब्रह्मचारीए तेम करवुं नहीं.

८ अतिमात्राहार–पेट भरीने अतिमात्रआहार करवो नहीं; तेम अति मात्रानी उत्पत्ति थाय तेम करवुं नहीं. एथी पण विकार वधे छे.

९ विभूषण–स्नान, विलेपन करवां नहि, तेमज पुष्पादिक ब्रह्मचारीए ग्रहण करवुं नहि. एथी ब्रह्मचर्यने हानि उत्पन्न थाय छे.

एम विशुद्ध ब्रह्मचर्यने माटे भगवंते नव वाड कही छे. बहुधा ए तमारा सांभळवामां आवी हशे; परंतु गृहस्थावासमां अमुक अमुक दिवस ब्रह्मचर्य धारण करवामां अभ्यासीओने लक्षमां रहेवा अहीं आगळ कंइक समजणपूर्वक कही छे.

शिक्षापाठ ७० सनत्कुमार भाग १.

चक्रवर्त्तीना वैभवमां शी खामी होय ? सनत्कुमार ए चक्रवर्त्ती हतो. तेनां वर्ण अने रुप अत्युत्तम हतां. एक वेळा सुधर्मसभामां ते रुपनी स्तुति थइ; कोइ बे देवोने ते वात रुची नहीं; पछी तेओ ते शंका टाळवाने विप्ररुप सनत्कुमारनां अंतःपुरमां

गया. सनत्कुमारनो देह ते वेळा खेळथी भर्यो हतो. तेने अंग मर्दनादिक पदार्थोनुं मात्र विलेपन हतुं. तेणे एक नानुं पंचीयुं पहेर्युं हतुं, अने ते स्नान-मज्जन करवा माटे बेठा हता. विप्ररूपे आवेला देवता तेनुं मनोहर मुख, कंचनवर्णि काया, अने चंद्र जेवी कांति जोइने बहु आनंद पाम्या, अने माथुं धुणाव्युं. आ जोइने चक्रवर्त्तीए पूछयुं: तमे माथुं शा माटे धुणाव्युं ? देवोए कह्युं, अमे तमारुं रुप अने वर्ण निरखवा माटे बहु अभिलाषी हता. स्थळे स्थळे तमारा वर्ण रुपनी स्तुति सांभळी हती; आजे अमे ते प्रत्यक्ष जोयुं, जेथी अमने पूर्ण आनंद उपज्यो. माथुं धुणाव्युं एनुं कारण एके जेवुं लोकोमां कहेवाय छे तेवुंज रुप छे. एथी विशेष छे पण ओछुं नथी. सनत्कुमार स्वरुपवर्णनी स्तुतिथी प्रभुत्व लावी बोल्यो, तमे आ वेळा मारुं रुप जोयुं ते भले, परंतु हुं राजसभामां वस्त्रालंकार धारण करी, केवळ सज्ज थइने ज्यारे सिंहासनपर बेसुं छुं त्यारे, मारुं रुप अने मारो वर्ण जोवा योग्य छे. अत्यारे तो हुं खेळभरी कायाए बेठो छुं. जो ते वेळा तमे मारां रुपवर्ण जुओ तो अद्भुत चमत्कारने पामो अने चकित थई जाओ. देवोए कह्युं: त्यारे पछी अमे राजसभामां आवीशुं; एम कहीने त्यांथी चाल्या गया. सनत्कुमारे त्यार पछी उत्तम वस्त्रालंकारो धारण कर्यां. अनेक उपचारथी जेम पोतानी काया विशेष आश्चर्यता उपजावे तेम करीने ते राजसभामां आवी सिंहासनपर बेठो. आजुबाजु समर्थ मंत्रियो, सुभटो, विद्वानो अने अन्य सभासदो योग्य आसने बेसी गया हता. राजेश्वर चामर छत्रथी विझाता अने खमा खमाथी वधावातां विशेष शोभी रह्या छे, त्यां पेला देवताओ पाछा विप्ररुपे आव्या. अद्भूत रुपवर्णथी आनंद पामवाने बदले जाणे खेद पाम्या छे एवा स्वरुपमां तेओए माथुं धुणाव्युं. चक्रवर्त्तीए पूछयुं, अहो ब्राह्मणो ! गइ वेळा करतां आ वेळा तमे

जूदा रुपमां माथुं धुणाव्युं एनुं शुं कारण छे? ते मने कहो. अवधज्ञानी- सारे विषे कह्युं के हे महाराजा! ते रुपमां अने आ रुपमां भूमी आकाशनो फेर पडी गयो छे. चक्रवर्त्तीए ते स्पष्ट समजाववाने कह्युं. ब्राह्मणोए कह्युं, अधिराज! तमारी काया प्रथम अमृततुल्य हती. आ वेळा झेर तुल्य छे. ज्यारे अमृततुल्य अंग हतुं त्यारे आनंद पाम्या, अने आ वेळा झेरतुल्य छे त्यारे खेद पाम्या. अमे कहीए छीए ते वातनी सिद्धता करवी होय तो तमे तांबुल थुंको, तत्काळ ते पर मांखी बेसशे अने ते परलोक पहोंची जशे.

शिक्षापाठ ७१ सनत्कुमार भाग २.

सनत्कुमारे ए परीक्षा करी तो सत्य ठरी. पूर्वित कर्मनां पापनो जे भाग तेमां आ कायाना मद संबंधीनुं मेळवण थवाथी ए चक्रवर्त्तिनी काया झेरमय थइ गइ हती. विनाशी अने अशुचिमय कायाना आवा प्रपंच जोइने सनत्कुमारने अंतःकरणमां वैराग्य उत्पन्न थयो. आ संसार केवळ तजवा योग्य छे. आवीने आवी अशुचि स्त्री, पुत्र, मित्रादिकनां शरीरमां रही छे. ए सघळुं मोहमान करवा योग्य नथी, एम विचारीने ते छ खंडनी प्रभुता त्यागी चाली नीकळ्या. साधुरुपे ज्यारे विचरता हता त्यारे तेओने महारोग उत्पन्न थयो. तेनां सत्यत्वनी परीक्षा लेवाने कोइ देव त्यां वैदरुपे आव्यो. साधुने कह्युं, हुं बहु कुशळ राजवैद छुं. तमारी काया रोगनो भोग थयेली छे. जो इच्छा होय तो तत्काळ हुं ते टाळी आपुं. साधु बोल्या, हे वैद! कर्मरुपी रोग महोन्मत्त छे; ए रोग टाळवानी तमारी जो समर्थता होय तो भले मारो ए रोग टाळो, ए समर्थता न होय तो आ रोग भले रह्यो. देवता बोल्यो, ए रोग टाळवानी समर्थता नथी. साधुए पोतानी लब्धिनां परिपूर्ण

प्रबळवडे थुंकवाळी अंगुलि करी ते रोगने खरडी के तत्काळ ते रोग नाश थयो; अने काया पाछी हती तेवी बनी गइ. पछी ते वेळा देवे पोतानुं स्वरुप प्रकाश्युं; धन्यवाद गाइ वंदन करी पोताने स्थानक गयो.

रक्तपीत जेवा सदैव लोही परुथी गद्‌गदूता महारोगनी उत्पत्ति जे कायामां छे; पळमां वणसी जवानो जेनो स्वभाव छे; जे प्रत्येक रोमे पोणा बब्बे रोगवाळी होइ रोगनो भंडार छे, अन्न वगेरेनी न्यूनाधिकताथी जे प्रत्येक कायामां देखाव दे छे, मळमूत्र, नर्क, हाड, मांस, परु अने श्लेष्मथी जेनुं बंधारण टक्युं छे, त्वचाथी मात्र जेनी मनोहरता छे ते कायानो मोह खरे विभ्रमज छे. सनत्कुमारे जेनुं लेशमात्र मान कर्युं ते पण जेथी संखायुं नहीं ते कायामां अहो पामर ! तुं शुं मोहे छे ? ए मोह मंगळदायक नथी.

शिक्षापाठ ७२ बत्रिस योग.

सत्पुरुषो नीचेना बत्रिश योगनो संग्रह करी आत्माने उज्वळ करवानुं कहे छे.

१. मोक्षसाधकयोग माटे शिष्ये आचार्य प्रत्ये आलोचना करवी.

२. आलोचना बीजा पासे प्रकाशवी नहीं.

३. आपत्तिकाळे पण धर्मनुं द्रढपणुं त्यागवुं नहीं.

४. लोक, परलोकनां सुखनां फळनी वांछना विना तप करवुं.

५. शिक्षा मळी ते प्रमाणे यत्नाथी वर्त्तवुं; अने नवी शिक्षा विवेकथी ग्रहण करवी.

६. ममत्वनो त्याग करवो.

७. गुप्त तप करवुं.

८. निर्लोभता राखवी.

९. परिषह उपसर्गने जीतवा.

१०. सरळ चित्त राखवुं.
११. आत्मसंयम शुद्ध पाळवो.
१२. समकित शुद्ध राखवुं.
१३. चित्तनी एकाग्र समाधि राखवी.
१४. कपटरहित आचार पाळवो.
१५. विनय करवा योग्य पुरुषोनो यथायोग्य विनय करवो.
१६. संतोषथी करीने तृष्णानी मर्यादा टुंकी करी नांखवी.
१७. वैराग्यभावनामां निमग्न रहेवुं.
१८. मायारहित वर्त्तवुं.
१९. शुद्ध करणीमां सावधान थवुं.
२०. सम्वरने आदरवो अने पापने रोकवां.
२१. पोताना दोष सम्भावपूर्वक टाळवा.
२२. सर्व प्रकारना विषयथी विरक्त रहेवुं.
२३. मूळ गुणे पंचमहाव्रत्त विशुद्ध पाळवां.
२४. उत्तर गुणे पंचमहाव्रत्तने विशुद्ध पाळवां.
२५. उत्साहपूर्वक कार्योत्सर्ग करवो.
२६. प्रमादरहित ज्ञान ध्यानमां प्रवर्त्तन करवुं.
२७. हमेशां आत्मचारित्रमां सूक्ष्म उपयोगथी वर्त्तवुं.
२८. ध्यान, जीतेंद्रियताअर्थे एकाग्रतापूर्वक करवुं.
२९. मरणांत दुःखथी पण भय पामवो नहीं.
३०. स्त्रियादिकना संगने त्यागवो.
३१. प्रायश्चित विशुद्धि करवी.
३२. मरणकाळे आराधना करवी.

ए अकेका योग अमूल्य छे. सघळा संग्रह करनार परिणामे अनंत सुखने पामे छे.

शिक्षापाठ ७३ मोक्ष सुख.

आ जगत् मंडळपर केटलीक एवी वस्तुओ अने मनेच्छा रही छे के जे केटलाक अंशे जाणता छतां कही शकाती नथी. छतां ए वस्तुओ कंइ संपूर्ण शाश्वत के अनंत भेदवाळी नथी. एवी वस्तुनुं ज्यारे वर्णन न थइ शके त्यारे अनंत सुखमय मोक्ष सबंधीतो उपमा क्यांथीज मळे ? भगवानने गौतमस्वामीए मोक्षना अनंत सुखविषे प्रश्न कर्युं त्यारे भगवाने उत्तरमां कह्युं, गौतम ! ए अनंत-सुख हुं जाणुं छउं; पण ते कही शकाय एवी अहीं आगळ कंइ उपमा नथी. जगत्मां ए सुखना तुल्य कोइपण वस्तु के सुख नथी, एम वदी एक भीलनुं द्रष्टांत नीचेना भावमां आप्युं हतुं.

एक जंगलमां एक भद्रिकभील तेनां बाळबच्चां सहीत रहेतो हतो. शहेर वगेरेनी समृद्धिनी उपाधिनुं तेने लेश भान पण नहोतुं. एक दिवस कोइ राजा अश्वक्रीडा माटे फरतो फरतो त्यां नीकळी आव्यो; तेने बहु तृषा लागी हती; जेथी करीने सानवडे भील आगळ पाणी माग्युं. भीले पाणी आप्युं. शीतळ जलथी राजा संतोषायो. पोताने भील तरफथी मळेलां अमूल्य जळदाननो प्रत्यु-पकार करवा माटे भीलने समजावीने साथे लीधो. नगरमां आव्या पछी तेणे भीलने तेनी जींदगीमां नहीं जोयेली वस्तुमां राख्यो. सुंदर महेलमां, कने अनेक अनुचरो; मनोहर छत्रपलंग, अने स्वादिष्ट भोजनथी मंदमंद पवनमां, सुगंधी विलेपनमां तेने आनंद आनंद करी आप्यो. विविध जातिना हीरामाणेक, मौक्तिक, मणिरत्न अने रंग बेरंगी अमूल्य चीजो निरंतर ते भीलने जोवा माटे मोकल्यां करे बागबगीचामां फरवा हरवा मोकले. एम राजा तेने सुख आप्यां करतो हतो. कोइ रात्रे बधां सूइ रह्यां हतां, त्यारे ते भीलने बाळबच्चां सांभरी आव्यां एटले ते त्यांथी कंइ लीधा

कर्यावगर एकाएक नीकळी पड्यो. जइने पोतानां कुटुंबीने मळ्यो. ते बधांये मळीने पूछयुं के तुं क्यां हतो ? भीले कह्युं, बहु सुखमां; त्यां में बहु वखाणवा लायक वस्तुओ जोइ.

कुटुंबीओ–पण ते केवी ? ते तो अमने कहे.

भील–शुं कहुं, अहीं एवी एके वस्तुज नथी.

कुटुंबीओ–एम होय के ? आ शंखलां, छींप, कोडां केवां मजानां पड्यां छे; त्यां कोइ एवी जोवालायक वस्तु हती ?

भील–नहीं, भाइ, एवी चीज तो अहीं एके नथी. एना सोमा भागनी के हजारमा भागनी पण मनोहर चीज अहीं नथी.

कुटुंबीओ–त्यारे तो तुं बोल्याविना बेठो रहे. तने भ्रमणा थइ छे; आथी ते पछी सारुं शुं हशे ?

हे गौतम ! जेम ए भील राजवैभवसुख भोगवी आव्यो हतो; तेमज जाणतो हतो; छतां उपमा योग्य वस्तु नहीं मळवाथी ते कंइ कही शकतो नहोतो. तेम अनुपमेय मोक्षने सच्चिदानंद स्वरूपमय निर्विकारी मोक्षनां सुखना असंख्यातमा भागने पण योग्य उपमेय नहीं मळवाथी हुं तने कही शकतो नथी.

मोक्षनां स्वरूपविषे शंका करनारा तो कुतर्कवादी छे; एओने क्षणिक सुखसंबंधी विचार आडे सत्सुखनो विचार क्यांथी आवे ? कोइ आत्मिकज्ञानहीन एम पण कहे छे के आथी कोइ विशेष सुखनुं साधन त्यां रह्युं नहि एटले अनंत अव्याबाध सुख कही दे छे, आ एनुं कथन विवेकी नथी. निद्रा प्रत्येक मानवीने प्रिय छे; पण तेमां तेओ कंइ जाणी के देखी शकता नथी; अने जाणवामां आवे तो मात्र स्वप्नोपाधिनुं मिथ्यापणुं आवे; जेनी कंइ असरपण थाय ए स्वप्ना वगरनी निंद्रा जेमां सूक्ष्मस्थूळ सर्व जाणी अने देखी शकाय; अने निरुपाधिथी शांत उंघ लइ शकाय तो तेनुं ते वर्णन शुं करी शके ? एने उपमा पण शी आपे ? आ तो

स्थूळ द्रष्टांत छे; पण बालविवेकी ए परथी कंइ विचार करी शके ए माटे कह्युं छे.

भीलनुं द्रष्टांत, समजाववा रुपे भाषाभेद फेरफारथी तमने कही बताव्युं.

शिक्षापाठ ७४ धर्मध्यान भाग १.

भगवाने चार प्रकारनां ध्यान कह्यां छे. आर्त्त, रौद्र, धर्म अने शुक्ल. पहेलां बे ध्यान त्यागवा योग्य छे. पाछळनां बे ध्यान आत्मसार्थकरुप छे. श्रुतज्ञानना भेद जाणवा माटे, शास्त्र विचारमां कुशळ थवा माटे, निर्ग्रंथप्रवचननुं तत्त्व पामवा माटे, सत्पुरुषोए सेववा योग्य, विचारवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य धर्मध्यानना मुख्य सोळ भेद छे. पहेलां चार भेद कहुं छुं. १ आणाविजये (आज्ञाविचय). २ आवायविजय (अपायविचय). ३ विवागविजये (विपाकविचय). सठांणविजय (संस्थानविचय). १ आज्ञाविचय. आज्ञा एटले सर्वज्ञ भगवाने धर्मतत्त्व संबंधी जे जे कह्युं छे ते ते सत्य छे; एमां शंका करवा जेवुं नथी; काळनी हीनताथी; उत्तम ज्ञानना विच्छेद जवाथी; बुद्धिनी मंदताथी के एवां अन्य कोइ कारणथी मारा समजवामां ते तत्त्व आवतुं नथी. परंतु अर्हंत भगवंते अंश मात्र पण माया युक्त के असत्य कह्युं नथीज, कारण एओ निरागी, त्यागी, अने निस्पृही हता. मृषा कहेवानुं कंइ कारण एमने हतुं नहीं. तेम एओ सर्वदर्शी होवाथी अज्ञानथी पण मृषा कहे नहीं, ज्यां अज्ञानज नथी, त्यां ए संबंधी मृषा क्यांथी होय? एवुं जे चिंतन करवुं ते 'आज्ञाविचय' नामनो प्रथम भेद छे. २ अपायविचय. राग, द्वेष, काम, क्रोध ए वगेरेथीज जीवने जे दुःख उत्पन्न थाय छे तेथीज तेने भवमां भटकवुं

पडे छे. तेनुं जे चिंतवन करवुं ते ' अपायविचय ' नामे बीजो भेद छे. अपाय एटले दुःख. ३ विपाकविचय. हुं जे जे क्षणे जे जे दुःख सहन करुं छुं, भवाटविमां पर्यटन करुं छुं, अज्ञानादिक पामुं छुं, ते सघळुं कर्मनां फळना उदय वडे छे; एम चिंतववुं ते धर्मध्याननो त्रीजो 'कर्मविपाक' चिंतन भेद छे. ४ संस्थानविचय. त्रणलोकनुं स्वरुप चिंतववुं ते. लोकस्वरुप सुप्रतिष्टिकने आकारे छे. जीव अजीवे करीने संपूर्ण भरपुर छे. असंख्यात योजननी कोटानुकोटीए त्रिच्छो लोक छे. ज्यां असंख्याता द्वीप–समुद्र छे. असंख्याता ज्योतिष्यि, वाणव्यंतरादिकना निवास छे. उत्पाद, व्यय अने ध्रुवतानी विचित्रता एमां लागी पडी छे. अढीद्दीपमां जघन्य तीर्थंकर २०, उत्कृष्टा एकसो सितेर होय. तेओ तथा केवळी भगवान अने निर्ग्रंथ मुनिराज विचरे छे, तेओने "वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, समाणेमि, कल्लाणं, मंगळं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामि" एम तेमज त्यां वसतां श्रावक, श्राविकानां गुणग्राम करीए. ते त्रिछालोकथकी असंख्यात गुणो अधिक उर्द्ध लोक छे. त्यां अनेक प्रकारना देवताओना निवास छे. पछी इषत् प्राग्भारा छे. ते पछी मुक्तात्माओ विराजे छे. तेने " वंदामि, यावत् पज्जुवासामि " ते उर्द्ध लोकथी कंइक विशेष अधो लोक छे, त्यां अनंत दुःखथी भरेला नर्कावास अने भुवन पतिनां भुवनादिक छे. ए त्रण लोकनां सर्व स्थानक आ आत्माए सम्यक्त्वरहितकरणीथी अनंतिवार जन्म मरण करी स्पर्शि मूक्यां छे, एम जे चिंतन करवुं ते संस्थान विचय नामे धर्मध्याननो चोथो भेद छे. ए चार भेद विचारीने सम्यक्त्वसहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करवी. जेथी ए अनंत जन्म मरण टळे. ए धर्मध्यानना चार भेद स्मरणमां राखवा.

शिक्षापाठ ७५ धर्मध्यान भाग २.

धर्मध्याननां चार लक्षण कहुं छुं, आज्ञारुचि—एटले वीतराग भगवाननी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे ते. २. निसर्ग रुचि—आत्मा स्वाभाकिपणे जातिस्मरणादिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म धरवानी रुचि पामे तेने निसर्ग रुचि कही छे. ३ सूत्र रुचि. श्रुतज्ञान, अने अनंत तत्वना भेदने माटे भाखेलां भगवाननां पवित्र—वचनोनुं जेमां गुंथन थयुं छे, ते सूत्र श्रवण करवा, मनन करवा, अने भावथी पठन करवानी रुचि उपजे ते सुत्र रुचि. ४ उपदेशरुचि. अज्ञाने करीने उपार्जेलां कर्म ज्ञाने करीने खपावीए, तेमज ज्ञानवडे करीने नवां कर्म न बांधीए. मिथ्यात्वे करीने उपार्ज्यां कर्म ते सम्यग्भावथी खपावीए, सम्यग्भावथी नवां कर्म न बांधीए. अवैराग्य करीने उपार्ज्यां कर्म ते वैराग्ये करीने खपावीए अने वैराग्यवडे करीने पाछां नवां कर्म न बांधीए. कषाये करी उपार्ज्यां कर्म ते कषाय टाळीने खपावीए, एथी नवां कर्म न बांधीए. अशुभ योगे करी उपार्ज्यां कर्म ते शुभ योगेकरी खपावीए, शुभ योगेकरी नवां कर्म न बांधीए. पांच इंद्रियना स्वादरुप आश्रये करी उपार्ज्यां कर्म ते संवरे करी खपावीए. तपरुप संवरे करी नवां कर्म न बांधीए. ते माटे अज्ञानादिक आश्रवमार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवरमार्ग ग्रहण करवा माटे तीर्थंकर भगवंतनो उपदेश सांभळवानी रुचि उपजे तेने उपदेश रुचि कहीए. ए धर्मध्याननां चार लक्षण कहेवायां.

धर्मध्याननां चार आलंबन कहुं छुं. १ वांचना २ पृच्छना ३ परावर्त्तना ४ धर्मकथा. वांचना एटले विनय सहित निर्जरा तथा ज्ञान पामवाने माटे सूत्र सिद्धांतना मर्मना जाणनार गुरु के सत्पुरुष

समीपे सूत्र तत्त्वनुं वांचन लइए तेनुं नाम वांचनाआलंबन. २ पृच्छणा—अपूर्व ज्ञान पामवा माटे, जिनेश्वर भगवंतनो मार्ग दीपाववाने तथा शंकाशल्य निवारवाने माटे तेमज अन्यना तत्त्वनी मध्यस्थ परीक्षाने माटे यथायोग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए तेने पृच्छना कहीए. ३ परावर्त्तना—पूर्वे जिनभाषित सूत्रार्थ जे भण्या होइए ते स्मरणमां रहेवा माटे, निर्जरा ने अर्थे शुद्ध उपयोग सहित शुद्ध सूत्रार्थनी वारंवार सज्झाय करीए तेनुं नाम परावर्त्तनालंबन. ४ धर्मकथा—वीतराग भगवाने जे भाव जेवा प्रणीत कर्या छे ते भाव. तेवा लइने, ग्रहीने, विशेष करीने, निश्चय करीने, शंका, कंखा अने वितिगिछारहितपणे, पोतानी निर्जराने अर्थे सभा मध्ये ते भाव प्रणीत करीए के जेथी सांभळनार, सद्दहनार बन्ने भगवंतनी आज्ञाना आराधक थाय. ए धर्मकथालंबन कहिए. ए धर्मध्यानमां चार आलंबन कहेवायां. धर्मध्याननी चार अनुप्रेक्षा कहुं छुं. १ एकत्वानुप्रेक्षा, २ अनित्यानुप्रेक्षा, ३ अशरणानुप्रेक्षा, ४ संसारानुप्रेक्षा. ए चारेनो बोध बारे भावनाना पाठमां कहेवाइ गयो छे, ते तमने स्मरणमां हशे.

शिक्षापाठ ७६ धर्मध्यान भाग ३.

धर्मध्यान पूर्वाचार्योए अने आधुनिक मुनीश्वरोए पण विस्तारपूर्वक बहु समजाव्युं छे. ए ध्यानवडे करीने आत्मा मुनित्वभावमां निरंतर प्रवेश करे छे.

जे जे नियमो एटले भेद, लक्षण, आलंबन अने अनुप्रेक्षा कह्यां ते बहु मनन करवा जेवा छे. अन्य मुनीश्वरोना कहेवा प्रमाणे में सामान्य भाषामां ते तमने कह्या; ए साथे निरंतर लक्ष राखवानी आवश्यकता छे के एमांथी आपणे कयो भेद पाम्या,

अथवा कया भेदभणी भावना राखी छे ? ए सोळ भेदमांनो गमे ते भेद हितकारी अने उपयोगी छे; परंतु जेवा अनुक्रमथी लेवो जोइए ते अनुक्रमथी लेवाय तो ते विशेष आत्मलाभनुं कारण थइ पडे.

सूत्रसिद्धांतनां अध्ययनो केटलाक मुखपाठे करे छे; तेना अर्थ, तेमां कहेलां मूळतत्त्वो भणी जो तेओ लक्ष पहोंचाडे तो कंइक सूक्ष्मभेद पामी शके. केळनां पत्रमां, पत्रनी जेम चमत्कृति छे तेम सूत्रार्थने माटे छे. ए उपर विचार करतां निर्मळ अने केवळ दयामय मार्गनो जे वीतरागप्रणीत तत्त्वबोध तेनुं बीज अंतःकरणमां उगी नीकळशे. ते अनेक प्रकारनां शास्त्रावलोकनथी, प्रश्नोत्तरथी, विचारथी अने सत्पुरुषना समागमथी पोषण पामीने वृद्धि थई वृक्षरुपे थशे. जे पछी निर्जरा अने आत्मप्रकाशरुप फळ आपशे.

श्रवण, मनन अने निदिध्यासनना प्रकारो वेदांतवादियोए बताव्या छे; पण जेवा आ धर्मध्यानना पृथक् पृथक् सोळ भेद कह्या छे तेवा तत्त्वपूर्वक भेद कोई स्थळे नथी, ए अपूर्व छे. एमांथी शास्त्रने श्रवण करवानो, मनन करवानो, विचारवानो, अन्यने बोध करवानो, शंकाकंखा टाळवानो, धर्मकथा करवानो, एकत्व विचारवानो, अनित्यता विचारवानो, अशरणता विचारवानो, वैराग्य पामवानो, संसारनां अनंत दुःख मनन करवानो, अने वीतराग भगवंतनी आज्ञावडे करीने आखा लोकालोकना विचार करवानो अपूर्व उत्साह मळे छे. भेदे भेदे करीने एना पाछा अनेक भाव समजाव्या छे.

एमांना केटलाक भाव समजवाथी तप, शांति, क्षमा, दया, वैराग्य अने ज्ञाननो बहु बहु उदय थशे.

तमे कदापि ए सोळ भेदनुं पठन करी गया हशो तो पण फरी फरी तेनुं पुनरावर्त्तन करजो.

शिक्षापाठ ७७ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग १.

जेवडे वस्तुनुं स्वरुप जाणीए ते ज्ञान. ज्ञान शब्दनो आ अर्थ छे. हवे यथामति विचारवानुं छे के ए ज्ञाननी कंइ आवश्यकता छे ? जो आवश्यकता छे तो ते प्राप्तिनां कंइ साधन छे ? जो साधन छे तो तेने अनुकुळ देशकाल भाव छे ? जो देशकाळादिक अनुकुळ छे तो क्यां सुधी अनुकुळ छे ? विशेष विचारमां ए ज्ञानना भेद केटला छे ? जाणवारुप छे शुं ? एना वळी भेद केटला छे ? जाणवानां साधन कयां कयां छे ? कयी कयी वाटे ते साधनो प्राप्त कराय छे ? ए ज्ञाननो उपयोग के परिणाम शुं छे ? ए जाणवुं अवश्यनुं छे.

१. ज्ञाननी शी आवश्यकता छे ? ते विषे प्रथम विचार करीए. आ चतुर्दश रज्जवात्मक लोकमां, चतुर्गतिमां अनादिकाळथी सकर्मस्थितिमां आ आत्मानुं पर्यटन छे. मेषानुमेष पण सुखनो ज्यां भाव नथी एवां नर्कनिगोदादिक स्थानक आ आत्माए बहु बहु काळ वारंवार सेवन कर्यां छे; असह्य दुःखोने पुनः पुनः अने कहो तो अनंतिवार सहन कर्यां छे. ए उतापथी निरंतर तपतो आत्मा मात्र स्वकर्मविपाकथी पर्यटन करे छे. पर्यटननुं कारण अनंत दुःखद ज्ञानावरणादि कर्मो छे, जेवडे करीने आत्मा स्वस्वरुपने पामी शकतो नथी; अने विषयादिक मोहबंधनने स्वस्वरुप मानी रह्यो छे. ए सघळांनुं परिणाम मात्र उपर कह्युं तेज छे के अनंत दुःख अनंत भावे करीने सहेवुं; गमे तेटलुं अप्रिय, गमे तेटलुं खेददायक अने गमे तेटलुं रौद्र छतां जे दुःख अनंतकाळथी अनंतिवार सहन करवुं पड्युं; ते दुःख मात्र सह्युं ते अज्ञानादिक कर्मथी, माटे ए अज्ञानादिक टाळवा माटे ज्ञाननी परिपूर्ण आवश्यकता छे.

शिक्षापाठ ७८ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग २.

२ हवे ज्ञानप्राप्तिनां साधनो विषे कंइ विचार करीए. अपूर्ण पर्याप्तिवडे परिपूर्ण आत्मज्ञान साध्य थतुं नथी ए माटे थइने छ पर्याप्तियुक्त जे देह ते आत्मज्ञान साध्य करी शके. एवो देह ते एक मानवदेह छे. आ स्थळे प्रश्न उठशे के मानवदेह पामेला अनेक आत्माओ छे, तो ते सघळा आत्मज्ञान कां पामता नथी? एना उत्तरमां आपणे मानी शकीशुं के जेओ संपूर्ण आत्मज्ञानने पाम्या छे तेओनां पवित्र वचनामृतनी तेओने श्रुति नहीं होय. श्रुतिविना संस्कार नथी. जो संस्कार नथी तो पछी श्रद्धा क्यांथी होय? अने ज्यां ए एके नथी त्यां ज्ञानप्राप्ति शानी होय? ए माटे मानवदेहनी साथे सर्वज्ञवचनामृतनी प्राप्ति अने तेनी श्रद्धा ए पण साधनरुप छे. सर्वज्ञवचनामृत अकर्म भूमि के केवळ अनार्य भूमिमां मळतां नथी तो पछी मानवदेह शुं उपयोगनो? ए माटे थइने सकर्म आर्यभूमि ए पण साधनरुप छे. तत्वनी श्रद्धा उपजवा अने बोध थवा माटे निर्ग्रंथ गुरुनी आवश्यकता छे. द्रव्ये करीने जे कुल मिथ्यात्वि छे, ते कुळमां थयेलो जन्म पण आत्मज्ञान प्राप्तिनी हानि रुपज छे. कारण धर्ममत भेद ए अति दुःखदायक छे. परंपराथी पूर्वजोए ग्रहण करेलुं जे दर्शन तेमांज सत्यभावना बंधाय छे, एथी करीने पण आत्मज्ञान अटके छे. ए माटे भलुं कुळ पण जरुरनुं छे. ए सघळां प्राप्त करवा माटे थइने भाग्यशाळी थवुं तेमां सद्पुण्य एटले पुण्यानुबंधी पुण्य इत्यादिक उत्तम साधनो छे. ए द्वितीय साधन भेद कह्यो.

३ जो साधन छे तो तेने अनुकुळ देश काळ छे? ए त्रीजा भेदना विचार करीए. भारतमां महाविदेह इ० कर्म भूमि अने

तेमां पण आर्यभूमि ए देश भावे अनुकूळ छे. जिज्ञासु भव्य! तमे सघळा आ काळे भारतमां छो, माटे भारत देश अनुकूळ छे. काळभाव प्रमाणे मति अने श्रुत प्राप्त करी शकाय एटली अनुकूळता छे. कारण आ दुःषमपंचम काळमां परमावधि, मनःपर्यव अने केवळ ए पवित्र ज्ञान विच्छेद छे. एटले काळनी परिपूर्ण अनुकूळता नथी.

४ देशकाळादि जो अनुकूळ छे तो क्यां सुधी छे? एनो उत्तर शेष रहेलुं सिद्धांतिक मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, सामान्यमतथी ज्ञान काळभावे एकवीश हजार वर्ष रहेवानुं तेमांथी अढी सहस्र गयां, बाकी साडाअढार हजार वर्ष रह्यां; एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी काळनी अनुकूळता छे. देशकाळ ते लेइने परिपूर्ण अनुकूळ छे.

शिक्षापाठ ७९ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ३.

हवे विशेष विचार करीए.

१. आवश्यकता शी छे? ए महद् विचारनुं आवर्त्तन पुनः विशेषताथी करीए. मुख्य अवश्य स्वस्वरूपस्थितिनी श्रेणिए चढवुं ए छे अनंत दुःखनो नाश, दुःखना नाशथी आत्मानुं श्रेयिक सुख ए हेतु छे केमके सुख निरंतर आत्माने प्रियज छे; पण जे स्वस्वरुपिक सुख छे ते. देशकाळ भावने लेइने श्रद्धा, ज्ञान इ० उत्पन्न करवानी आवश्यकता अने सम्यग् भाव सहित उच्चगति, त्यांथी महाविदेहमां मानवदेहे जन्म, त्यां सम्यग् भावनी पुनः उन्नति; तत्त्वज्ञाननी विशुद्धता अने वृद्धि; छेवटे परिपूर्ण आत्मसाधन ज्ञान अने तेनुं सत्य परिणाम केवळ सर्व दुःखनो अभाव एटले अखंड, अनुपम अनंत शाश्वत पवित्र मोक्षनी प्राप्ति ए सघळां माटे ज्ञाननी आवश्यकता छे!

२. ज्ञानना भेद केटला छे एनो विचार कहुं छुं. ए ज्ञानना भेद अनंत छे. पण सामान्य द्रष्टि समजी शके एटला माटे सर्वज्ञ भगवाने मुख्य पांच भेद कह्या छे ते जेम छे तेम कहुं छुं. प्रथम मति द्वितीय श्रुत, तृतीय अवध, चतुर्थ मनःपर्यव अने पांचमुं संपूर्ण स्वरुप केवळ. एना पाछा प्रतिभेद छे तेनी वळी अतींद्रिय स्वरुपे अनंत भंगजाळ छे.

३. शुं जाणवारुप छे? एनो हवे विचार करीए. वस्तुनुं स्वरुप जाणवुं तेनुं नाम ज्यारे ज्ञान; त्यारे वस्तुओ तो अनंत छे एने कयी पंक्तिथी जाणवी? सर्वज्ञ थया पछी सर्वदर्शिताथी ते सत्पुरुष, ते अनंत वस्तुनुं स्वरुप सर्व भेदे करीने जाणे छे अने देखे छे; परंतु तेओ ए सर्वज्ञ श्रेणिने पाम्या ते कयी कयी वस्तुने जाणवाथी? अनंत श्रेणिओ ज्यांसुधी जाणी नथी त्यांसुधी कयी वस्तुने जाणता जाणता ते अनंत वस्तुओने अनंत रुपे जाणीए? ए शंकानुं समाधान हवे करीए. जे अनंतवस्तुओ मानी ते अनंत भंगे करीने छे. परंतु मुख्य वस्तुत्व स्वरुपे तेनी बे श्रेणीओ छे. जीव अने अजीव. विशेष वस्तुत्व स्वरुपे नवतत्त्व किंवा षड्द्रव्यनी श्रेणिओ जाणवा रुप थइ पडे छे. जे पंक्तिए चढतां चढतां सर्व भावे जणाइ लोकालोक स्वरुप हस्तामलकवत् जाणी देखी शकाय छे. एटला माटे थइने जाणवारुप पदार्थ ते जीव अने अजीव छे ए जाणवा रुप मुख्य बे श्रेणिओ कहेवाइ.

शिक्षापाठ ८० ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ४.

४. एना उप भेद संक्षेपमां कहुं छुं. ए चैतन्य लक्षणे एक रुप छे. देहस्वरुपे अने द्रव्य स्वरुपे अनंतानु अनंत छे. देहस्वरुपे तेना इंद्रियादिक जाणवा रुप छे; तेनी गति, विगति इत्यादिक

जाणवा रुप छे; तेनी संसर्ग ऋद्धि जाणवा रुप छे; तेमज अजीव तेना रुपी अरुपी पुद्गल आकाशादिक विचित्र भाव काळचक्र इ० जाणवा रुप छे. जीवाजीव जाणवानी प्रकारांतरे सर्वज्ञ सर्वदर्शीए नव श्रेणि रुप नवतत्त्व कह्यां छे.

जीव,	अजीव,	पुण्य,
पाप,	आश्रव,	संवर,
निर्जरा,	बंध,	मोक्ष.

एमांना केटलांक ग्राह्यरुप, केटलांक जाणवारुप केटलांक त्यागवा रुप छे. सघळां ए तत्त्वो जाणवा रुप तो छेज.

५. जाणवानां साधन–सामान्य विचारमां ए साधनो जो के जाण्यां छे, तो पण विशेष कंइक जाणीए, भगवाननी आज्ञा अने तेनुं शुद्ध स्वरुप यथातथ जाणवुं. स्वयं कोइकज जाणे छे. नहीं तो निर्ग्रंथज्ञानी गुरु जणावी शके, निरागी ज्ञाता सर्वोत्तम छे. एटला माटे श्रद्धानुं बीज रोपनार के तेने पोषनार गुरु ए साधन रुप छे; ए साधनादिकने माटे संसारनी निवृत्ति एटले शम, दम ब्रह्मचर्यादिक अन्य साधनो छे. ए साधनो प्राप्त करवानी वाट कहीए तो पण चाले.

६. ए ज्ञाननो उपयोग के परिणामनां उत्तरनो आशय उपर आवी गयो छे; पण काळभेदे कंइ कहेवानुं छे. अने ते एटलुंज के दिवसमां बे घडीनो वखत पण नियमित राखीने जिनेश्वर भगवानना कहेला तत्त्वबोधनी पर्यटना करो. वीतरागना एक सिद्धांतिक शब्दपरथी ज्ञानावरणीनो बहु क्षयोपशम थशे एम हुं विवेकथी कहुं छुं.



शिक्षापाठ ८१ पंचमकाळ.

काळचक्रना विचारो अवश्य करीने जाणवा योग्य छे. जिनेश्वरे ए काळचक्रना बे मुख्य भेद कह्या छे. १ उत्सर्पिणी, २ अवसर्पिणी. अकेका भेदना छ छ आरा छे. आधुनिक वर्त्तन करी रहेलो आरो पंचमकाळ कहेवाय छे, अने ते अवसर्पिणी काळनो पांचमो आरो छे. अवसर्पिणी एटले उतरतो काळ; ए उतरता काळना पांचमा आरामां केवुं वर्त्तन आ भरतक्षेत्रे थवुं जोइए तेने माटे सत्पुरुषोए केटलाक विचारो जणाव्या छे; ते अवश्य जाणवा जेवा छे.

एओ पंचमकाळनुं स्वरुप मुख्य आ भावमां कहे छे. निर्ग्रंथ-प्रवचनपरथी मनुष्योनी श्रद्धा क्षीण थती जशे. धर्मनां मूळतत्त्वोमां मतमतांतर वधशे. पाखंडी अने प्रपंची मतोनुं मंडन थशे. जनसमूहनी रुचि अधर्म भणी वळशे. सत्यदया हळवे हळवे पराभव पामशे. मोहादिक दोषोनी वृद्धि थती जशे. दंभी अने पापिष्ट गुरुओ पूज्यरुप थशे. दुष्टवृत्तिनां मनुष्यो पोताना फंदमां फावी जशे. मीठा पण धूर्त्तवक्ता पवित्र मनाशे. शुद्ध ब्रह्मचर्यादिक शीलयुक्त पुरुषो मलिन कहेवाशे. आत्मिकज्ञानना भेदो हणाता जशे; हेतु वगरनी क्रिया वधती जशे. अज्ञानक्रिया बहुधा सेवाशे; व्याकुळ करे एवा विषयोनां साधनो वधतां जशे. एकांतिक पक्षो सत्ताधिश थशे. शृंगारथी धर्म मनाशे.

खरा क्षत्रियो विना भूमि शोकग्रस्त थशे. निर्माल्य राजवंशीओ वेश्याना विलासमां मोह पामशे; धर्म, कर्म, अने खरी राजनीति भूली जशे; अन्यायने जन्म आपशे. जेम लुटाशे तेम प्रजाने लूटशे. पोते पापिष्ट आचरणो सेवी प्रजा आगळ ते पळावता जशे. राज-

बीजने नामे शून्यता आवती जशे. नीच मंत्रियोनी महत्ता वधती जशे. एओ दीनप्रजाने चुसीने भंडार भरवानो राजाने उपदेश आपशे. शीयळभंग करवानो धर्म राजाने अंगीकार करावशे. शौर्यादिक सद्गुणोनो नाश करावशे. मृगयादिक पापमां अंध बनावशे. राज्याधिकारीओ पोताना अधिकारथी हजारगुणी अहंपदता राखशे. विप्रो लालचु अने लोभी थइ जशे. सद्विद्याने दाटी देशे; संसारी साधनोने धर्म ठरावशे. वैश्यो मायावि, केवळ स्वार्थि अने कठोर हृदयना थता जशे. समग्र मनुष्यवर्गनी सद्-वृत्तियो घटती जशे. अकृत अने भयंकर कृत्यो करतां तेओनी वृत्ति अटकशे नहीं. विवेक, विनय, सरळता इ० सद्गुणो घटता जशे. अनुकंपाने नामे हीनता थशे. माता करतां पत्निमां प्रेम वधशे; पिता करतां पुत्रमां प्रेम वधशे; पातिव्रत्त्य नियमपूर्वक पाळनारी सुंदरीओ घटी जशे. स्नानथी पवित्रता गणाशे; धनथी उत्तमकूळ गणाशे. गुरुथी शिष्यो अवळा चालशे. भूमिनो रस घटी जशे. संक्षेपमां कहेवानो भावार्थ के उत्तम वस्तुनी क्षीणता छे, अने कनिष्ठ वस्तुनो उदय छे. पंचमकाळनुं स्वरुप आमांनुं प्रत्यक्ष सूचवन पण केटलुं बधुं करे छे !

मनुष्य सद्धर्मतत्त्वमां परिपूर्ण श्रद्धावान नहीं थइ शके, संपूर्ण तत्त्वज्ञान नहीं पामी शके; जंबुस्वामीना निर्वाण पछी दश निर्वाणी वस्तु आ भरतक्षेत्रथी व्यवछेद गइ.

पंचमकाळनुं आवुं स्वरुप जाणीने विवेकी पुरुषो तत्त्वने ग्रहण करशे, काळानुसार धर्मतत्त्वश्रद्धा पामीने उच्चगति साधी परिणामे मोक्ष साधशे. निग्रंथप्रवचन, निग्रंथ गुरु इ० धर्मतत्त्व पामवामां साधनो छे. एनी आराधनाथी कर्मनी विराधना छे.

शिक्षापाठ ८२ तत्त्वावबोध भाग १.

दश वैकालिक सूत्रमां कथन छे के जेणे जीवाजीवना भाव नथी जाण्या ते अबुध संयममां स्थिर केम रही शकशे ? ए वचनामृतनुं तात्पर्य एम छे के तमे आत्मा, अनात्मानां स्वरुपने जाणो, ए जाणवानी परिपूर्ण अवश्य छे.

आत्मा अनात्मानुं सत्य स्वरुप निर्ग्रंथप्रवचनमांथीज प्राप्त थइ शके छे. अनेक अन्य मतोमां ए बे तत्त्वो विषे विचारो दर्शाव्या छे. पण ते यथार्थ नथी. महा प्रज्ञावंत आचार्योए करेलां विवेचन सहित प्रकारांतरे कहेलां मुख्य नवतत्त्वने विवेकबुद्धिथी जे ज्ञेय करे छे, ते सत्पुरुष आत्मस्वरुपने ओळखी शके छे.

स्याद्वादशैली अनुपम, अने अनंत भावभेदथी भरेली छे, ए शैलीने परिपूर्ण तो सर्वज्ञ अने सर्वदर्शीज जाणी शके; छतां एओनां वचनामृतानुसार आगम उपयोगथी यथामति नव तत्त्वनुं स्वरुप जाणवुं अवश्यनुं छे. ए नवतत्त्व प्रिय श्रद्धा भावे जाणवाथी परम विवेकबुद्धि, शुद्ध सम्यक्त्व अने प्रभाविक आत्मज्ञाननो उदय थाय छे. नव तत्त्वमां लोकालोकनुं संपूर्ण स्वरुप आवी जाय छे. जे प्रमाणे जेनी बुद्धिनी गति छे, ते प्रमाणे तेओ तत्त्वज्ञान संबंधी द्रष्टि पहोंचाडे छे, अने भावानुसार तेओना आत्मानी उज्वळता थाय छे. ते वडे तेओ आत्मज्ञाननो निर्मळ रस अनुभवे छे. जेनुं तत्वज्ञान उत्तम अने सूक्ष्म छे, तेमज सुशीलयुक्त जे तत्वज्ञानने सेवे छे ते पुरुष महद्भागी छे.

ए नवतत्वनां नाम आगळना शिक्षापाठमां हुं कही गयो छुं, एनुं विशेष स्वरुप प्रज्ञावंत आचार्योना महान् ग्रंथोथी अवश्य मेळ-

ववुं; कारण सिद्धांतमां जे जे कह्युं छे, ते ते विशेष भेदथी समजवा माटे सहायभूत प्रज्ञावंत आचार्यविरचित ग्रंथो छे. ए गुरुगम्यरुप पण छे. नय, निक्षेपा अने प्रमाणभेद नवतत्वनां ज्ञानमां अवश्यनां छे, अने तेनी यथार्थ समजण ए प्रज्ञावंतोए आपी छे.

शिक्षापाठ ८३ तत्त्वावबोध भाग २.

सर्वज्ञ भगवाने लोकालोकना संपूर्ण भाव जाण्या अने जोया तेनो उपदेश भव्य लोकोने कर्यो. भगवाने अनंत ज्ञानवडे करीने लोकालोकनां स्वरुप विषेना अनंत भेद जाण्या हता; परंतु सामान्य मानवियोने उपदेशथी श्रेणिए चढवा मुख्य देखाता नव पदार्थ तेओए दर्शाव्या. एथी लोकालोकना सर्व भावनो एमां समावेश थइ जाय छे. निर्ग्रंथप्रवचननो जे जे सूक्ष्म बोध छे, ते तत्वनी द्रष्टिए नवतत्वमां समाइ जाय छे; तेमज सघळा धर्ममतोना सूक्ष्म विचार ए नवतत्व विज्ञानना एक देशमां आवी जाय छे. आत्मानी जे अनंत शक्तियो ढंकाइ रही छे तेने प्रकाशित करवा अर्हंत भगवाननो पवित्र बोध छे; ए अनंत शक्तियो त्यारे प्रफुल्लित थइ शके के ज्यारे नवतत्व विज्ञानमां पारावार ज्ञानी थाय.

सूक्ष्म द्वादशांगी ज्ञान पण ए नवतत्व स्वरुप ज्ञानने सहायरुप छे. भिन्न भिन्न प्रकारे ए नवतत्वस्वरुप ज्ञाननो बोध करे छे; एथी आ निःशंक मानवा योग्य छे के नवतत्व जेणे अनंतभाव भेदे जाण्यां ते सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थयो.

ए नवतत्व त्रिपदीने भावे लेवा योग्य छे. हेय, ज्ञेय अने उपादेय एटले त्याग करवा योग्य, जाणवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य एम त्रण भेद नवतत्व स्वरुपना विचारमां रहेला छे.

प्रश्नः–जे त्यागवारुप छे तेने जाणीने करवुं शुं ? जे गाम न जवुं तेनो मार्ग शा माटे पूछवो ?

उत्तरः–ए तमारी शंका सहजमां समाधान थइ शके तेवी छे. त्यागवारुप पण जाणवा अवश्य छे. सर्वज्ञ पण सर्व प्रकारना प्रपंचने जाणी रह्या छे. त्यागवारुप वस्तुने जाणवानुं मूळतत्व आ छे के जो ते जाणी न होय तो अत्याज्य गणी कोइ वखत सेवी जवाय; एक गामथी बीजे पहोंचतां सुधी वाटमां जे जे गाम आववानां होय तेनो रस्तो पण पूछवो पडे छे; नहीं तो ज्यां जवानुं छे त्यां न पहोंची शकाय. ए गाम जेम पूछ्यां पण त्यां वास कया नहीं. तेम पापादिक तत्वो जाणवां पण ग्रहण करवां नहीं. जेम वाटमां आवतां गामनो त्याग कर्यो तेम तेनो पण त्याग करवो अवश्यनो छे.

शिक्षापाठ ८४ तत्त्वावबोध भाग ३.

नवतत्वनुं काळभेदे जे सत्पुरुषो गुरुगम्यताथी श्रवण, मनन अने निदिध्यासनपूर्वक ज्ञान ले छे, ते सत्पुरुषो महा पुण्यशाळी तेमज धन्यवादने पात्र छे. प्रत्येक सुज्ञपुरुषोने मारो विनयभावभूषित एज बोध छे के नवतत्वने स्वबुद्धयानुसार यथार्थ जाणवां.

महावीर भगवंतनां शासनमां बहु मतमतांतर पडी गयां छे, तेनुं मुख्य कारण तत्वज्ञान भणीथी उपास्यक वर्गनुं लक्ष गयुं ए छे मात्र क्रियाभावपर राचता रह्या; जेनुं परिणाम दृष्टिगोचर छे. अंग्रेजोनी शोधमां आवेली पृथ्विनी वस्ति एक अबज अने चाळीश करोडनी गणाई छे; तेमां सर्व गच्छनी मळीने जैनप्रजा मात्र वीश लाख छे. ए प्रजा ते श्रमणोपासक छे. एमांथी हुं धारुंछुं के नव-

तत्वने पठनरूपे बेहजार पुरुषो पण मांड जाणता हशे, मनन अने विचारपूर्वक तो आंगळीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण नहीं हशे. ज्यारे आवी पतित स्थिति तत्वज्ञान संबंधी थइ गइ छे त्यारेज मतमतांतर वधी पड्या छे. एक लौकिक कथन छे के "सो शाणे एक मत तेम" अनेक तत्वविचारक पुरुषोना मतमां भिन्नता बहुधा आवती नथी.

ए नवतत्व विचार संबंधी प्रत्येक मुनिओने मारी विज्ञप्ति छे के विवेक अने गुरुगम्यताथी एनुं ज्ञान विशेष वृद्धिमान करवुं; एथी तेओनां पवित्र पंचमहाव्रत द्रढ थशे; जिनेश्वरनां वचनामृतना अनुपम आनंदनी प्रसादि मळशे; मुनित्व आचार पाळवामां सरळ थइ पडशे. ज्ञान अने क्रिया विशुद्ध रहेवाथी सम्यक्त्वनो उदय थशे; परिणामे भवांत थइ जशे.

शिक्षापाठ ८५ तत्वावबोध भाग ४.

जे जे श्रमणोपासक नवतत्व पठनरूपे पण जाणता नथी तेओए ते अवश्य जाणवां. जाण्या पछी बहु मनन करवां. समजाय तेटला गंभिर आशय गुरुगम्यताथी सद्भावे करीने समजवा. एथी आत्मज्ञान उज्वळता पामशे, अने यमनियमादिकनुं बहु पालन थशे.

नवतत्व एटले तेनुं एक सामान्यगुंथनयुक्त पुस्तक होय ते नहीं; परंतु जे जे स्थळे जे जे विचारो ज्ञानीओए प्रणीत कर्या छे, ते ते विचारो नवतत्वमांना अमुक एक बे के विशेष तत्वना होय छे. केवळी भगवाने ए श्रेणिओथी सकळ जगत्मंडळ दर्शावी दीधुं छे, एथी जेम जेम नयादि भेदथी ए तत्वज्ञान मळशे तेम तेम अपूर्व आनंद अने निर्मळतानी प्राप्ति थशे; मात्र विवेक, गुरुगम्यता अने

अप्रमाद जोइए. ए नवतत्वज्ञान मने बहु प्रिय छे. एना रसानुभवियो पण मने सदैव प्रिय छे.

काळभेदे करीने आ वखते मात्र मति अने श्रुत ए बे ज्ञान भरतक्षेत्रे विद्यमान छे; बाकीनां त्रण ज्ञान व्यवच्छेद छे; छतां जेम जेम पूर्णश्रद्धाभावथी ए नवतत्वज्ञानना विचारोनी गुफामां उतराय छे, तेम तेम तेना अंदर अद्भुत आत्मप्रकाश, आनंद, समर्थ तत्त्वज्ञाननी स्फूरणा, उत्तम विनोद अने गंभिर चळकाट दिंग् करी दइ शुद्ध सम्यक् ज्ञानना ते विचारो बहु उदय करे छे. स्याद्वादवचनामृतना अनंत सुंदर आशय समजवानी शक्ति आ काळमां आ क्षेत्रथी विच्छेद गयेली छतां ते परत्वे जे जे सुंदर आशयो समजाय छे ते ते आशयो अति अति गंभिर तत्त्वथी भरेला छे. पुनः पुनः ते आशयो मनन कराय तो चार्वाकमतिना चंचळ मनुष्यने पण सद्धर्ममां स्थिर करी दे तेवा छे. संक्षेपमां सर्व प्रकारनी सिद्धि, पवित्रता, महाशील, निर्मळ उंडा अने गंभिर विचार, स्वच्छ वैराग्यनी भेट ए तत्त्वज्ञानथी मळे छे.

शिक्षापाठ ८६ तत्वावबोध भाग ५.

एकवार एक समर्थ विद्वान साथे निर्ग्रंथप्रवचननी चमत्कृति संबंधी वातचित थइ; तेना संबंधमां ते विद्वाने जणाव्युं के आटलुं हुं मान्य राखुं छुं के महावीर ए एक समर्थ तत्वज्ञानी पुरुष हता; एमणे जे बोध कर्यो छे, ते झीली लइ प्रज्ञावंत पुरुषोए अंग उपांगनी योजना करी छे; तेना जे विचारो छे ते चमत्कृति भरेला छे; परंतु ए उपरथी लोकालोकनुं ज्ञान एमां रह्युं छे एम हुं कही न शकुं. एम छतां जो तमे कंइ ए संबंधी प्रमाण आपता हो तो

हुं ए वातनी कंइ श्रद्धा लावी शकुं. एना उत्तरमां में एम कह्युं के हुं कंइ जैन वचनामृतने यथार्थ तो शुं पण विशेष भेदे करीने पण जाणतो नथी; पण जे सामान्य भावे जाणुं छुं एथी पण प्रमाण आपी शकुं खरो. पछी नवतत्त्वविज्ञान संबंधी वातचित नीकळी. में कह्युं: एमां आखी सृष्टिनुं ज्ञान आवी जाय छे, परंतु यथार्थ समजवानी शक्ति जोइए. पछी तेओए ए कथननुं प्रमाण माग्युं, त्यारे आठ कर्म में कही बताव्यां; तेनी साथे एम सूचव्युं के ए शिवाय एनाथी भिन्न भाव दर्शावे एवुं नवमुं कर्म शोधी आपो; पापनी अने पुण्यनी प्रकृतियो कहीने कह्युं. आ शिवाय एक पण वधारे प्रकृति शोधी आपो. एम कहेतां अनुक्रमे वात लीधी. प्रथम जीवना भेद कही पूछ्युं एमां कंइ न्यूनाधिक कहेवा मांगो छो? अजीवद्रव्यना भेद कही पूछ्युं. कंइ विशेषता कहो छो? एम नव तत्त्वसंबंधी वातचित थइ त्यारे तेओए थोडीवार विचार करीने कह्युं: आतो महावीरनी कहेवानी अद्भुत चमत्कृति छे के जीवनो एक नवो भेद मळतो नथी, तेम पापपुण्यादिकनी एक प्रकृति विशेष मळती नथी; अने नवमुं कर्म पण मळतुं नथी. आवां आवां तत्त्वज्ञाननां सिद्धांतो जैनमां छे ए मारुं लक्ष नहोतुं. आमां आखी सृष्टिनुं तत्त्वज्ञान केटलेक अंशे आवी शके खरुं.

शिक्षापाठ ८७ तत्वावबोध भाग ६.

एनो उत्तर आ भणीथी एम थयो के हजु आप आटलुं कहो छो ते पण जैनना तत्त्वविचारो आपना हृदये आव्या नथी त्यां सुधी; परंतु हुं मध्यस्थताथी सत्य कहुं छुं के एमां जे विशुद्धज्ञान बताव्युं छे ते क्यांय नथी; अने सर्व मतोए जे ज्ञान बताव्युं छे

ते महावीरना तत्त्वज्ञानना एक भागमां आवी जाय छे. एनुं कथन स्याद्वाद छे, एक पक्षी नथी.

तमे कह्युं के केटलेक अंशे सृष्टिनुं तत्वज्ञान एमां आवी शके खरुं; परंतु ए मिश्रवचन छे. अमारी समज।-वानी अल्पज्ञताथी एम बने खरुं, परंतु एथी ए तत्वोमां कंइ अपूर्णता छे एम तो नथीज. आ कंइ पक्षपाती कथन नथी. विचार करी आखी सृष्टिमांथी ए शिवायनुं एक दशमुं तत्व शोधतां कोइ काळे ते मळनार नथी. ए संबंधी प्रसंगोपात आपणे ज्यारे वातचित अने मध्यस्थ चर्चा थाय त्यारे निःशंकता थाय.

उत्तरमां तेओए कह्युं के आ उपरथी मने एम तो निःशंकता छे के जैन अद्भुत दर्शन छे. श्रेणिपूर्वक तमे मने केटलाक नव-तत्वमा भाग कही बताव्या एथी हुं एम बेधडक कही शकुं छुं के महावीर गुप्तभेदने पामेला पुरुष हता. एम सहजसाज वात करीने " उपन्नेवा, " विघनेवा " " धुवेवा " ए लब्धिवाक्य मने तेओए कह्युं. ते कही बताव्या पछी तेओए एम जणाव्युं के आ शब्दोना सामान्य अर्थमां तो कंइ चमत्कृति देखाती नथी; उपजवुं, नाश थवुं अने अचळता, एम ए त्रण शब्दोना अर्थ छे. परंतु श्रीमान गणधरोए तो एम दर्शित कर्युं छे के ए वचनो गुरुमुखथी श्रवण करतां आगळना भाविक शिष्योने द्वादशांगीनुं आशयभरित ज्ञान थतुं हतुं ? ए माटे में कंइक विचारो पहोंचाडी जोया छतां मने तो एम लाग्युं के ए बनवुं असंभवित छे, कारण अति अति सूक्ष्म मानेलुं सिद्धांतिक ज्ञान एमां क्यांथी समाय ? ए संबंधी तमे कंइ लक्ष पहोंचाडी शकशो ?



शिक्षापाठ ८८ तत्त्वावबोध भाग ७.

उत्तरमां में कह्युं के आ काळमां त्रण महाज्ञान भारतथी विच्छेद छे; तेम छतां हुं कंइ सर्वज्ञ के महाप्रज्ञावंत नथी छतां मारुं जेटलुं सामान्य लक्ष पहोंचे तेटलुं पहोंचाडी कंइ समाधान करी शकीश एम मने संभव रहे छे. त्यारे तेमणे कह्युंः जो तेम संभव थतो होय तो ए त्रिपदी जीवपर "ना" ने "हा" विचारे उतरो. ते एम के जीव शुं उत्पत्तिरुप छे ? तो के ना. जीव शुं विघ्नतारुप छे ? तो के ना. जीव शुं ध्रुवतारुप छे ? तो के ना. आम एक वखत उतारो अने बीजी वखत जीव शुं उत्पत्तिरुप छे ? तो के हा. जीव शुं विघ्नतारुप छे ? तो के हा. जीव शुं ध्रुवतारुप छे ? तो के हा. आम उतारो. आ विचारो आखा मंडळे एकत्र करी योज्या छे. ए जो यथार्थ कही न शकाय तो अनेक प्रकारथी दूषण आवी शके. विघ्नरुपे होय ए वस्तु ध्रुव रुपे होय नहीं, ए पहेली शंका. जो उत्पत्ति, विघ्नता अने ध्रवता नथी तो जीव कयां प्रमाणथी सिद्ध करशो ? ए बीजी शंका. विघ्नता अने ध्रुवताने परस्पर विरोधाभास ए त्रीजी शंका. जीव केवळ ध्रुव छे तो उत्पत्तिमां हा कही ए असत्य. ए चोथो विरोध. उत्पन्न जीवनो ध्रुव भाव कहो तो उत्पन्न कोणे कर्यो ? ए पांचमी शंका अने विरोध. अनादिपणुं जतुं रहे छे ए छट्ठी शंका. केवळ ध्रुव विघ्नरुपे छे एम कहो तो चार्वाकमिश्र वचन थयुं ए सातमो दोष. उत्पत्ति अने विघ्नरुप कहेशो तो केवळ चार्वाकनो सिद्धांत ए आठमो दोष. उत्पत्तिनी ना, विघ्नतानी ना अने ध्रुवतानी ना कही पछी त्रणेनी हा कही एना वळी पाछा छ दोष. एटले सर्वाळे चौद दोष. केवळ ध्रुवता जतां तीर्थंकरनां वचन त्रुटी जाय ए

पंदरमो दोष. उत्पत्ति ध्रुवता लेतां कर्त्तानी सिद्धि थाय जेथी सर्वज्ञ वचन त्रुटी जाय ए सोळमो दोष. उत्पत्ति विघ्नतारुपे पापपुण्यादिकनो अभाव एटले धर्माधर्म सघळुं गयुं ए सत्तरमो दोष. उत्पत्ति, विघ्नता अने सामान्य स्थितिथी (केवळ अचळ नहीं) त्रिगुणात्मक माया सिद्ध थाय छे ए अढारमो दोष.

शिक्षापाठ ८९ तत्त्वावबोध भाग ८.

एटला दोष ए कथनो सिद्ध न थतां आवे छे. एक जैनमुनिए मने अने मारा मित्रमंडळने एम कह्युं हतुं के जैनसप्तभंगी नय अपूर्व छे, अने एथी सर्व पदार्थ सिद्ध थाय छे. नास्ति, अस्तिना एमां अगम्यभेद रह्या छे. आ कथन सांभळी अमे बधा घेर आव्या पछी योजना करतां करतां आ लब्धिवाक्यनी जीवपर योजना करी. हुं धारुं छुं के एवी नास्ति अस्तिना बन्ने भाव जीवपर नहि उतरी शके. लब्धिवाक्यो पण क्लेशरुप थइ पडशे. तोपण ए भणी मारी कंइ तिरस्कारनी द्रष्टि नथी.

आना उत्तरमां अमे कह्युं के आपे जे नास्ति अने अस्ति नय जीवपर उतारवा धार्यो ते सनिक्षेप शैलीथी नथी, एटले वखते एमांथी एकांतिक पक्ष लेइ जवाय; तेम वळी हुं कंइ स्याद्वाद शैलीनो यथार्थ जाणनार नथी, मंदमतिथी लेश भाग जाणुं छुं. नास्ति अस्ति नय पण आपे यथार्थ शैली पूर्वक उतार्यो नथी. एटले हुं तर्कथी जे उत्तर दइ शकुं ते आप सांभळो.

उत्पत्तिमां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "जीव अनादि अनंत छे."

विघ्नतामां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "एनो कोइ काळे नाश नथी."

ध्रुवतामां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "एक देहमां ते सदैवने माटे रहेनार नथी."

शिक्षापाठ ९० तत्त्वावबोध भाग ९.

उत्पत्तिमां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "जीवनो मोक्ष थया सुधी एक देहमांथी च्यवन पामी ते बीजा देहमां उपजे छे."

विघ्नतामां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "ते जे देहमांथी आव्यो त्यांथी विघ्न पाम्यो; वा क्षण क्षण प्रति एनी आत्मिक ऋद्धि विषयादिक मरणवडे रुंधाई रही छे, ए रुपे विघ्नता योजी शकाय छे."

ध्रुवतामां "हा" एवी जे योजना कही छे ते एम यथार्थ थइ शके के "द्रव्ये करी जीव कोइ काळे नाशरुप नथी, त्रिकाळ सिद्ध छे."

हवे एथी करीने एटले ए अपेक्षाओ लक्षमां राखतां योजेला दोष पण हुं धारुं छुं के टळी जशे.

१. जीव विघ्नरुपे नथी माटे ध्रुवता सिद्ध थइ. ए पहेलो दोष टळ्यो.

२. उत्पत्ति, विघ्नता अने ध्रुवता ए भिन्न भिन्न न्याये सिद्ध थइ; एटले जीवनुं सत्यत्व सिद्ध थयुं ए बीजो दोष गयो.

३. जीवनां सत्यस्वरुपे ध्रुवता सिद्ध थइ एटले विघ्नता गइ. ए त्रीजो दोष गयो.

४. द्रव्य भावे जीवनी उत्पत्ति असिद्ध थइ ए चोथो दोष गयो.

५. अनादि जीव सिद्ध थयो एटले उत्पत्ति संबंधीनो पांचमो दोष गयो.

६. उत्पत्ति असिद्ध थइ एटले कर्त्ता संबंधीनो छट्ठो दोष गयो.

७. *ध्रुवता साथे विघ्नता लेतां अबाध थयुं* एटले चार्वाक मिश्रवचननो सातमो दोष गयो.

८. उत्पत्ति अने विघ्नता प्रथक् प्रथक् देहे सिद्ध थइ माटे केवळ चार्वाकसिद्धांत ए नामनो आठमो दोष गयो.

१४. शंकानो परस्परनो विरोधाभास जतां चौद सुधीना दोष गया.

१५. अनादि अनंतता सिद्ध थतां स्याद्वादवचन सत्य थयुं ए पंदरमो दोष गयो.

१६. कर्त्ता नथी ए सिद्ध थतां जिनवचननी सत्यता रही ए सोळमो दोष गयो.

१७. धर्माधर्म, देहादिक पुनरावर्त्तन सिद्ध थतां सत्तरमो दोष गयो.

१८. ए सर्व वात सिद्ध थतां त्रिगुणात्मक माया असिद्ध थइ ए अढारमो दोष गयो.

शिक्षापाठ ९१ तत्त्वावबोध भाग १०.

आपनी योजेली योजना हुं धारुं छुं के आथी समाधान पामी हशे. आ कंइ यथार्थ शैली उतारी नथी, तोपण एमां कंइ पण विनोद मळी शके तेम छे. ए उपर विशेष विवेचनने माटे बोहोळो वखत जोइए एटले वधारे कहेतो नथी; पण एक बे टुंकी वात आपने कहेवानी छे ते जो आ समाधान योग्य थयुं होय तो कहुं.

पछी तेओ तरफथी मनमानतो उत्तर मल्यो, अने एक बे वात जे कहेवानी होय तें सहर्ष कहो एम तेओए कह्युं.

पछी में मारी वात संजीवन करी लब्धि संबंधी कह्युं. आप ए लब्धि संबंधी शंका करो के एने क्लेशरुप कहो तो ए वचनोने अन्याय मळे छे. एमां अति अति उज्वळ आत्मिक शक्ति गुरुगम्यता अने वैराग्य जोइए छीए. ज्यां सुधी तेम नथी, त्यां सुधी लब्धि विषे शंका रहे खरी; पण हुं धारुं छुं के आ वेळा ए संबंधी कहेला बे बोल निरर्थक नहीं जाय. ते ए के जेम आ योजना नास्ति अस्तिपर योजी जोइ, तेम एमां पण बहु सूक्ष्म विचार करवाना छे. देहे देहनी पृथक् पृथक् उत्पत्ति, च्यवन, विश्राम, गर्भाधान, पर्याप्ति, इंद्रिय, सत्ता, ज्ञान, संज्ञा आयुष्य विषय इ. अनेक कर्मप्रकृति प्रत्येक भेदे लेतां जे विचारो ए लब्धिथी नीकळे ते अपूर्व छे. ज्यां सुधी लक्ष पहोंचे त्यां सुधी सघळा विचार करे छे. परंतु द्रव्यार्थिक भावार्थिक नये आखी सृष्टिनुं ज्ञान ए त्रण शब्दोमां रह्युं छे, तेनो विचार कोइज करे छे; ते सद्गुरु मुखनी पवित्र लब्धिरुपे ज्यारे आवे त्यारे द्वादशांगी ज्ञान शा माटे न थाय? जगत् एम कहेतांज मनुष्य एक घर, एक वास, एक गाम, एक शेहेर, एक देश, एक खंड एक पृथ्वि ए सघळुं मूकी दइ असंख्यात द्वीप समुद्रादिथी भरपूर वस्तु केम समजी जाय छे? एनुं कारण मात्र एटलुंज के ते ए शब्दनी बहोळताने समज्युं छे, किंवा एनुं लक्ष एवी अमुक बहोळताए पहोंच्युं छे; जेथी जगत् एम कहेतां एवडो मोटो मर्म समजी शके छे; तेमज ऋजु अने सरळ सत्पात्र शिष्यो निर्ग्रंथ गुरुथी ए त्रण शब्दोनी गम्यता लइ द्वादशांगी ज्ञान पामता हता. आवी रीते ते लब्धि अल्पज्ञता छतां विवेके जोतां क्लेशरुप पण नथी.

शिक्षापाठ ९२ तत्त्वावबोध भाग ११.

एमज नवतत्त्व संबंधी छे. जे मध्य वयना क्षत्रियपुत्रे "जगत्" अनादि छे, एम बेधडक कही कर्त्ताने उडाड्यो हशे, ते ते पुरुषे शुं कंइ [illegible] गुप्त भेद विना कर्युं हशे? तेम एनी निर्दोषता विषे ज्यारे आप वांचशो त्यारे निश्चय एवो विचार करशो के ए परमेश्वर हता. कर्त्ता नहोता अने जगत् अनादि हतुं तो तेम कह्युं. एना अपक्षपाति अने केवळ तत्वमय विचारो आपे अवश्य विशोधवा योग्य छे. जैन दर्शनना अवर्णवादीओ जैनने नथी जाणता एटले एने अन्याय आपे छे, ते ममत्वथी अधोगति सेवशे.

आ पछी केटलीक वातचित थइ. प्रसंगोपात ए तत्व विचारवानुं वचन लइने सहर्ष अमारुं त्यांथी उठवुं थयुं.

तत्त्वावबोधना संबंधमां आ कथन कहेवायुं. अनंतभेदथी भरेला ए तत्त्व विचारो काळभेदथी जेटला ज्ञेय थाय तेटला जाणवा; ग्राह्य थाय तेटला ग्रहवा; अने त्याज्य देखाय तेटला त्यागवा.

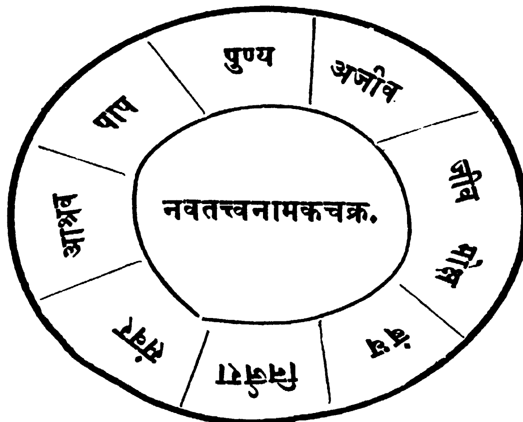
ए तत्वोने जे यथार्थ जाणे छे; ते अनंत चतुष्टयिथी विराजमान थाय छे ए सत्य समजवुं; ए नवतत्वनां क्रमवार नाम मूकवामां पण अरधुं सूचवन जीवने मोक्षनी निकटतानुं जणाय छे!

शिक्षापाठ ९३ तत्त्वावबोध भाग १२.

एतो तमारा लक्षमां छे के जीव अजीव ए अनुक्रमथी छेवटे मोक्ष नाम आवे छे. हवे ते एक पछी एक मूकी जइए तो जीव अने मोक्षने अनुक्रमे आद्यंत रहेवुं पडशे.

जीव.
अजीव.
पुण्य.
पाप.
आश्रव.
संवर.
निर्जरा.
बंध.
मोक्ष.

आगळ कहेवायुं छे के, ए नाम मूकवामां जीव अने मोक्षने निकटता छे. छतां आ निकटता तो न थइ? पण जीव अने अजीवने निकटता थइ. वस्तुतः एम नथी. अज्ञानवडे तो ए बन्नेनेज निकटता रही छे; पण ज्ञानवडे जीव अने मोक्षने निकटता रही छे जेमकेः—



हवे जुओ ए बन्नेने कंइ निकटता आवी छे? हा कहेली निकटता आवी गइ छे. पण ए निकटता तो द्रव्यरुप छे. ज्यारे

भावे निकटता आवे त्यारे सर्व सिद्धि थाय. ए द्रव्य निकटतानुं साधन सत्परमात्मतत्व, सद्‌गुरुतत्व अने सद्धर्मतत्व ओळखी सर्द्दहवुं ए छे. भावनिकटता एटले केवळ एकज रुप थवा ज्ञान, दर्शन अने चारित्र साधनरुप छे.

ए चक्रथी एवी पण आशंका थाय के ज्यारे बन्ने निकट छे त्यारे शुं बाकीनां त्यागवां ? उत्तरमां कहेवानुं के जो सर्व त्यागी शकता हो तो त्यागी द्यो, एटले मोक्षरुपज थशो. नहि तो हेय, ज्ञेय, उपादेयनो बोध ल्यो, एटले आत्मसिद्धि प्राप्त थशे.

शिक्षापाठ ९४ तत्त्वावबोध भाग १३.

जे जे कहेवायुं छे ते ते कंइ केवळ जैनकुळथी जन्म पामेला पुरुषने माटे नथी, परंतु सर्वने माटे छे. तेम आ पण निःशंक मानजो के जे कंइ कहेवाय छे ते अपक्षपाते अने परमार्थबुद्धिथी कहेवाय छे.

तमने जे धर्मतत्व कहेवानुं छे, ते पक्षपात के स्वार्थबुद्धिथी कहेवानुं अमने कंइ प्रयोजन नथी; पक्षपात के स्वार्थथी तमने अधर्मतत्व बोधी अमे अधोगतिने शा माटे साधिये ? वारंवार तमने निर्ग्रंथनां वचनामृतो माटे कहेवाय छे, तेनुं कारण ते वचनामृतो तत्वमां परिपूर्ण छे, ते छे. जिनेश्वरोने एवुं कोइ पण कारण नहोतुं के ते निमित्ते तेओ मृषा के पक्षपाती बोधे; तेम एओ अज्ञानी नहता, के एथी मृषा बोधाइ जवाय. आशंका करशो के ए अज्ञानी नहोता ए शा उपरथी जणाय ? तो तेना उत्तरमां एओना पवित्र सिद्धांतोनां रहस्यने मनन करवानुं कहिये छीए. अने एम जे करश ते तो पुनः आशंका लेश पण नहीं करे. जैनमत प्रवर्त्तका प्रति अमारे

कंइ राग बुद्धि नथी, के ए माटे पक्षपाते अमे कंइ पण तमने कहिये; तेमज अन्यमत प्रवर्त्तकोप्रति अमारे कंइ वैरबुद्धि नथी के मिथ्या एनुं खंडन करिये. बन्नेमां अमे तो मंदमति मध्यस्थरुप छिए. बहु बहु मननथी अने अमारी मति ज्यां सुधी पहोंची त्यां सुधीना विचारथी अमे विनयथी कहीये छीए, के प्रिय भव्यो! जैन जेवुं एके पूर्ण अने पवित्र दर्शन नथी, वीतराग जेवो एके देव नथी, तरीने अनंत दुःखथी पार पामवुं होय तो ए सर्वज्ञ दर्शनरुप कल्पवृक्षने सेवो.

शिक्षापाठ ९५ तत्त्वावबोध भाग १४.

जैन ए एटली बधी सूक्ष्म विचा संकळनाथी भरेलुं दर्शन छे के एमां प्रवेश करतां पण बहु वखत जोइए. उपर उपरथी के कोइ प्रतिपक्षीना कहेवाथी अमुक वस्तु संबंधी अभिप्राय बांधवो के आपवो ए विवेकीनुं कर्त्तव्य नथी. एक तळाव संपूर्ण भर्युं होय, तेनुं जळ उपरथी समान लागे छे; पण जेम जेम आगळ चालीए छीए तेम तेम वधारे वधारे उंडापणुं आवतुं जाय छे; छतां उपर तो जळ सपाटज रहे छे; तेम जगत्‌ना सघळा धर्ममतो एक तळाव रुप छे, तेने उपरथी सामान्य सपाटी जोइने सरखा कही देवा ए उचित नथी. एम कहेनारा तत्त्वने पामेला पण नथी. जैनना अकेका पवित्र सिद्धांतपर विचार करतां आयुष्य पूर्ण थाय, तो पण पार पमाय नहीं तेम रह्युं छे. बाकीना सघळा धर्म-मतोना विचार जिनप्रणीत वचनामृतसिंधु आगळ एक बिंदुरुप पण नथी. जैनमत जेणे जाण्यो, अने सेव्यो ते केवळ निरागी अने सर्वज्ञ थइ जाय छे. एना प्रवर्त्तको केवा पवित्र पुरुषो हता!

एना सिद्धांतो केवा अखंड संपूर्ण अने ्यामय छे ! एमां दूषण तो कांइ छेज नहि ! केवळ निर्दोष तो मात्र जेनुं दर्शन छे ! एवो एके पारमार्थिक विषय नथी के जे जैनमां नहीं होय अने एवुं एके तत्त्व नथी के जे जैनमां नथी; एक विषयने अनंतभेदे परिपूर्ण कहेनार ते जैनदर्शन छे. प्रयोजन भूततत्त्व एना जेवुं क्यांय नथी. एक देहमां बे आत्मा नथी; तेम आखी सृष्टिमां बे जन एटले जैननी तूल्य बीजुं दर्शन नथी. आम कहेवानुं कारण शुं ? ते मात्र तेनी परिपूर्णता, निरागीता, सत्यता अने जगद् हितैषिता.

शिक्षापाठ ९६ तत्त्वावबोध भाग १५.

न्यायपूर्वक आटलुं अमारे पण मान्य राखवुं जोइए के ज्यारे एकदर्शनने परिपूर्ण कही वात सिद्ध करवी होय त्यारे प्रतिपक्षनी मध्यस्थ बुद्धिथी अपूर्णता दर्शाववी जोइए. पण ए बे वातपर विवेचन करवा जेटली अहीं जग्यो नथी; तो पण थोडुं थोडुं कहेता आव्या छीए. मुख्यत्वे कहेवानुं के ए वात जेने रुचिकर थती न होय के असंभवित लागती होय तेणे जैनतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो अने अन्य तत्त्वविज्ञानी शास्त्रो मध्यस्थ बुद्धिथी मनन करी न्यायने कांटे तोलन करवुं. ए उपरथी अवश्य एटलुं महावाक्य नीकळशे, के जे आगळ नगारापर डांडी ठोकीने कहेवायुं हतुं ते खरुं छे.

जगत् गाडरियो प्रवाह छे. धर्मना मतभेद संबंधीना शिक्षापाठमां दर्शाव्या प्रमाणे अनेक धर्ममतनी जाल लागी पडी छे. विशुद्ध आत्मा कोइकज थाय छे. विवेकथी तत्त्वने कोइक्ज शोधे छे. एटले जैन तत्त्वने अन्यदर्शनियो शा माटे जाणता नथी ए खेद के आशंका करवा जेवुंज नथी.

छतां अमने बहु आश्चर्य लागे छे के केवळ शुद्ध परमात्मतत्त्वने पामेला, सकळ दूषणरहित, मृषा कहवा.ं जेने कंइ निमित्त नथी एवा पुरुषनां कहेलां पवित्र दर्शनने पोते तो जाण्युं नहि, पोताना आत्मानुं हित तो कर्युं नहीं, पण अविवेकथी मतभेदमां आवी जइ केवळ निर्दोष अने पवित्र दर्शनन कहेनाराओए नास्तिक शा माटे कह्युं हशे ? पण ए कहेनारा एनां तत्त्वने जाणता नहोता. वळी एनां तत्त्वने जाणवाथी पोतानी श्रद्धा फरशे, त्यारे लोको पछी पोताना आगळ कहेला मतने गांठशे नहीं; जे लौकिक मतमां पोतानी आजीविका रही छे, एवा वेदादिनी महत्ता घटाडवाथी पोतानी महत्ता घटशे; पातानुं मिथ्या स्थापित करेलुं परमेश्वर पद चालशे नहीं. एथी जैनतत्वमां प्रवेश करवानी रुचिने मूळथीज बंध करवा लोकोने एवी भ्रमभुरकी आपी के जैन नास्तिक छे. लोको तो बिचारा गभरुगाडर छे; एटले पछी विचार पण क्यांथी करे ? ए कहेवुं केटलुं मृषा अने अनर्थकारक छे ते जेणे वीतराग प्रणीत सिद्धांतो विवेकथी जाण्या छे, ते जाणे. अमारुं कहेवुं मंद बुद्धिओ वखते पक्षपातमां लई जाय.

शिक्षापाठ ९७ तत्त्वावबोध भाग १६.

पवित्र जैन दर्शनने नास्तिक कहेवरावनाराओ एक मिथ्या दलीलथी फाववा इच्छे छे, के जैनदर्शन आ जगत्‌ना कर्त्ता परमेश्वरने मानतुं नथी. अने जगत्कर्त्ता परमेश्वरने जे नथी मानता ते तो नास्तिकज छे, एवी मानी लीधेली वात भद्रिकजनोने शीघ्र चोंटी रहे छे. कारण तेओमां यथार्थ विचार करवानी प्रेरणा नथी. पण जो ए उपरथी एम विचारवामां आवे के त्यारे जैन

जगत्‌ने अनादि अनंत कहे छे ते कया न्यायथी कहे छे ? जगत्‌-कर्त्ता नथी एम कहेवामां एमनुं निमित्त शुं छे ? एम एक पछी एक भेदरूप विचारथी तेओ जैननी पवित्रतापर आवी शके. जगत् रचवानी परमेश्वरने अवश्य शी हती ? रच्युं तो सुख दुःख मूकवानुं कारण शुं हतुं ? रचीने मोत शा माटे मूक्युं ? ए लीला कोने बताववी हती ? रच्युं तो कयां कर्मथी रच्युं ? ते पहेलां रचवानी इच्छा कां नहोती ? इश्वर कोण ? जगत्‌ना पदार्थ कोण ? अने इच्छा कोण ? रच्युं तो जगत्‌मां एकज धर्मनुं प्रवर्त्तन राखवुं हतुं; आम भ्रमणामां नाखवानी अवश्य शी हती ? कदापि एम मानो के ए विचारानी भूल थइ हशे ! क्षमा करीए ! पण एवुं दोढ डहापण क्यांथी सूज्युं के एनेज मूळथी उखेडनार एवा महावीर जेवा पुरुषोने जन्म आप्यो ? एवानां कहेलां दर्शनने जगत्‌मां विद्यमानता कां आपी ? पोताना पगपर हाथे करीने कुहाडो मारवानी एने शुं अवश्य हती ? एक तो जाणे ए प्रकारे विचार, अने बाकी बीजा प्रकारे ए विचार के जैनदर्शन प्रवर्त्तकोने एनाथी कंइ द्वेष हतो ? जगत्‌कर्त्ता होत तो एम कहेवाथी एओना लाभने कंइ हानि पहोंचती हती ? जगत्‌कर्त्ता नथी, जगत् अनादि अनंत छे; एम कहेवामां एमने कंइ महत्ता मळी जती हती ? आवा अनेक विचारो विचारतां जणाइ आवशे के जगत्‌नुं स्वरुप छे तेमज ते पवित्र पुरुषोए कह्युं छे. एमां भिन्नभाव कहेवानुं एमने लेशमात्र प्रयोजन नहोतुं. सूक्ष्ममां सूक्ष्म जंतुनी रक्षा जेणे प्रणीत करी छे, एक रजकणथी करीने आखा जगत्‌ना विचारो जेणे सर्व भेदे कह्या छे तेवा पुरुषोनां पवित्र दर्शनने नास्तिक कहेनारा कयी गतिने पामशे ए विचारतां दया आवे छे !



शिक्षापाठ ९८ तत्त्वावबोध भाग १७.

जे न्यायथी जय मेळवी शकतो नथी; ते पछी गाळो भांड छे; तेम पवित्र जैनना अखंड तत्वासिद्धांतो शंकराचार्य, दयानंद संन्यासी वगरे ज्यारे तोडी न शक्या त्यारे पछी जैन नास्तिक है, सो चार्वाकमेंसे उत्पन्न हुआ है एम कहेवा मांड्युं. पण ए स्थळे कोइ प्रश्न करे, के महाराज ! ए विवेचन तमे पछी करो. एवा शब्दो कहेवामां कंइ वखत विवेक के ज्ञान जोइतुं नथी; पण आनो उत्तर आपो के जैनवेदथी कयी वस्तुमां उतरतो छे. एनुं ज्ञान, एनो बोध, एनुं रहस्य, अने एनुं सत्शील केवुं छे ते एकवार कहो ? आपना वेद विचारो कयी बाबतमां जैनथी चढे छे ? आम ज्यारे मर्मस्थानपर आवे त्यारे मौनता शीवाय तेओ पासे बीजुं कंइ साधन रहे नहीं. जे सत्पुरुषोनां वचनामृत अने योगबळथी आ सृष्टिमां सत्यदया, तत्त्वज्ञान अने महाशील उदय पामे छे, ते पुरुषो करतां जे पुरुषो शृंगारमां राच्या पड्या छे, सामान्य तत्त्वज्ञानने पण नथी जाणता, जेनो आचार पण पूर्ण नथी, तेने चढता कहेवा,—परमेश्वरने नामे स्थापवा अने सत्यस्वरुपनी अवर्ण भाषा बोलवी, परमात्म स्वरुप पामेलाने नास्तिक कहेवा, ए एमनी केटली बधी कर्मनी बहोलतानुं सूचवन करे छे ? परंतु जगत् मोहांध छे; मतभेद छे त्यां अंधारुं छे. ममत्व के राग छे त्यां सत्य तत्त्व नथी. ए वात आपणे शा माटे न विचारवी ?

हुं एक मुख्य वात तमने कहुं छुं के जे ममत्वरहितनी अने न्यायनी छे. ते ए छे के गमे ते दर्शनने तमे मानो; गमे तो पछी तमारी द्रष्टिमां आवे तेम जैनने कहो, सर्व दर्शननां शास्त्रतत्त्वने जुओ तेम जैनतत्त्वने पण जुओ. स्वतंत्र आत्मिकशक्तिए जे योग्य

लागे ते अंगीकार करो. मारुं के बीजा गमे तेनुं भले एकदम तमे मान्य न करो पण तत्त्वने विचारो !

शिक्षापाठ ९९ समाजनी अगत्य.

आंग्लभौमियो संसारसंबंधी अनेक कळा कौशल्यमां शाथी विजय पाम्या छे ? ए विचार करतां आपणने तत्काल जणाशे के तेओनो बहु उत्साह अने ए उत्साहमां अनेकनुं मळवुं. कळाकौशल्यना ए उत्साही काममां ए अनेक पुरुषोनी उभी थएली सभा के समाजे परिणाम शुं मेळव्युं ? तो उत्तरमां एम आवशे के लक्ष्मी, कीर्त्ति अने अधिकार. ए एमनां उदाहरण उपरथी ए जातिनां कळाकौशल्यो शोधवानो हुं अहीं बोध करतो नथी, परंतु सर्वज्ञ भगवाननुं कहेलुं गुप्त तत्त्व प्रमाद स्थितिमां आवी पड्युं छे, तेने प्रकाशित करवा तथा पूर्वाचार्योनां गुंथेलां महान शास्त्रो एकत्र करवा, पडेला गच्छना मतमतांतरने टाळवा; तेमज धर्मविद्याने प्रफुल्लित करवा सदाचरणी श्रीमंत अने धीमंत बन्नेए मळीने एक महान समाज स्थापन करवानी अवश्य छे, एम दर्शावुं छुं. पवित्र स्याद्वादमतनुं ढंकायलुं तत्त्व प्रसिद्धिमां आणवा ज्यां सुधी प्रयोजन नथी, त्यां सुधी शासननी उन्नति पण नथी. लक्ष्मी, कीर्त्ति अने अधिकार संसारी कळाकौशल्यथी मळे छे, परंतु आ धर्मकळाकौशल्यथी तो सर्व सिद्धि सांपडशे. महान् समाजना अंतर्गत उपसमाज स्थापवा वाडामां बेसी रहेवा करतां मतमतांतर तजी एम करवुं उचित छे. हुं इच्छुं छुं के ते कृतनी सिद्धि थइ जैनांतर्गच्छ मतभेद टळो; सत्य वस्तु उपर मनुष्यमंडळनुं लक्ष आवो; अने ममत्व जाओ !

शिक्षापाठ १०० मनोनिग्रहनां विघ्न.

वारंवार जे बोध करवामां आव्यो छे तेमांथी मुख्य तात्पर्य नीकळे छे ते ए छे के आत्माने तारो अने तारवा माटे तत्त्वज्ञाननो प्रकाश करो; तथा सत्शीलने सेवो. ए प्राप्त करवा जे जे मार्ग दर्शाव्या ते ते मार्ग मनोनिग्रहताने आधीन छे. मनोनिग्रहता थवा लक्षनी बहोळता करवी जरुरनी छे. ए बहोळतामां विघ्नरुप नीचेना दोष छे.

१ आळस.	११ तुच्छवस्तुथी आनंद.
२ अनियमित उंघ.	१२ रसगारवलुब्धता.
३ विशेष आहार.	१३ अतिभोग.
४ उन्माद प्रकृति.	१४ पारकुं अनिष्ट इच्छवुं.
५ मायाप्रपंच.	१५ कारणविनानुं रळवुं.
६ अनियमित काम.	१६ झाझानो स्नेह.
७ अकरणीयविलास.	१७ अयोग्यस्थळे जवुं.
८ मान.	१८ एके उत्तम नियम साध्य न करवो.
९ मर्यादाउपरांतकाम.	
१० आपवडाइ.	

ज्यां सुधी आ अष्टादश विघ्नथी मननो संबंध छे, त्यां सुधी अष्टादश पापस्थानक क्षय थवानां नथी. आ अष्टादश दोष जवाथी मनोनिग्रहता अने धारेली सिद्धि थइ शके छे. ए दोष ज्यांसुधी मनथी निकटता धरावे छे त्यां सुधी कोइपण मनुष्य आत्मसार्थक करवानो नथी. अति भोगने स्थळे सामान्य भोग नहीं, पण केवळभोग त्यागवृत्त जेणे धर्युं छे, तेमज ए एके दोषनुं मूळ जेना हृदयमां नथी ते सत्पुरुष महद्भागी छे.

शिक्षापाठ १०१ स्मृतिमां राखवायोग्य महावाक्यो.

१. एक भेदे नियम एज आ जगत्नो प्रवर्त्तक छे.

२. जे मनुष्य सत्पुरुषोनां चरित्ररहस्यने पामे छे ते मनुष्य परमेश्वर थाय छे.

३ चंचळ चित्त एज सर्व विषम दुःखनुं मुळियुं छे.

४ झाझानो मेळाप अने थोडा साथे अति समागम ए बन्ने समान दुःखदायक छे.

५ समस्वभाविनुं मळवुं एने ज्ञानीओ एकांत कहे छे.

६ इंद्रियो तमने जीते अने सुख मानो ते करतां तेने तमे जीतवामांज सुख, आनंद अने परमपद प्राप्त करशो.

७ रागविना संसार नथी अने संसारविना राग नथी.

८ युवावयनो सर्व संग परित्याग परमपदने आपे छे.

९ ते वस्तुना विचारमां पहोंचो के जे वस्तु अतींद्रिय स्वरुप छे.

१० गुणीना गुणमां अनुरक्त थाओ.

शिक्षापाठ १०२ विविध प्रश्नो भाग १.

आजे तमने हुं केटलांक प्रश्नो निर्ग्रंथप्रवचनानुसार उत्तर आपवा माटे पूछुं छुं. कहो धर्मनी अगत्य शी छे ?

उ.–अनादि काळथी आत्मानी कर्मजाळ टाळवा माटे.

प्र.–जीव पहेलो के कर्म ?

उ.–बन्ने अनादि छेज. जीव पहेलो होय तो ए विमळ वस्तुने मळ वळगवा कंइ निमित्त जोइए. कर्म पहेलां कहो तो जीव विना कर्म कर्यां कोणे ? ए न्यायथी बन्ने अनादि छेज.

प्र.–जीव रुपी के अरुपी ?

उ.–रुपी पण खरो, अने अरुपी पण खरो.

प्र.–रुपी कया न्यायथी अने अरुपी कया न्यायथी ते कहो ?

उ.–देह निमित्ते रुपी अने स्वस्वरुपे अरुपी.

प्र.–देह निमित्त शाथी छे ?

उ.–स्वकर्मना विपाकथी.

प्र.–कर्मनी मुख्य प्रकृतियो केटली छे ?

उ.–आठ.

प्र.–कयी कयी ?

उ.–ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनीय, मोहनीय, नाम, गोत्र, आयुष्य अने अंतराय.

प्र.–ए आठे कर्मनी सामान्य समज कहो ?

उ.–ज्ञानावरणी एटले आत्मानी ज्ञान संबंधीनी जे अनंतशक्ति छे तेने आच्छादन थइ जवुं ते. दर्शनावरणी एटले आत्मानी जे अनंत दर्शनशक्ति छे तेने आच्छादन थइ जवुं ते. वेदनीय एटले देहनिमित्ते शाता आशाता बे प्रकारनां वेदनीय कर्म एथी अव्याबाध सुखरुप आत्मानी शक्ति रोकाइ रहेवी ते. मोहनीय कर्म एटले आत्मचारित्र रुप शक्ति रोकाइ रहेवी ते. नामकर्म एटले अमूर्त्तिरुप दिव्य शक्ति रोकाइ रहेवी ते. गोत्रकर्म एटले अटल अवगाहनारुप आत्मिकशक्ति रोकाइ रहेवी ते. आयुकर्म

एटले अक्षय स्थिति गुण रोकाइ रहेवो ते. अंतराय कर्म एटले अनंत दान, लाभ, वीर्य, भोगोपभोग शक्ति रोकाइ रहेवी ते.

शिक्षापाठ १०३ विविध प्रश्नो भाग २.

प्र.–ए कर्मो टळवाथी आत्मा क्यां जाय छे ?

उ.–अनंत अने शाश्वत मोक्षमां.

प्र.–आ आत्मानो मोक्ष कोइवार थयो छे ?

उ.–ना.

प्र.–कारण ?

उ.–मोक्ष थयेलो आत्मा कर्ममल रहित छे. एथी पुनर्जन्म एने नथी.

प्र.–केवळीनां लक्षण शुं ?

उ.–चार घनघाती कर्मनो क्षय करी शेष चार कर्मने पातळां पाडी जे पुरुष त्रयोदश गुणस्थानकवर्त्ति विहार करे छे ते.

प्र.–गुणस्थानक केटलां ?

उ.–चौद.

प्र.–तेनां नाम कहो ?

उ.–१ मिथ्यात्वगुणस्थानक. २ सास्वादनगुणस्थानक. ३ मिश्रगुणस्थानक. ४ अविरतिसम्यगद्रष्टि गुणस्थानक. ५ देश-विरतिगुणस्थानक. ६ प्रमत्तसंयत्तगुणस्थानक. ७ अप्रमत्तसंयत-गुणस्थानक. ८ अपूर्वकरणगुणस्थानक. ९ अनिवृत्तिबादरगुण-स्थानक. १० सूक्ष्मसंपरायगुणस्थानक. ११ उपशांतमोहगुण-स्थानक. १२ क्षीणमोहगुणस्थानक. १३ सयोगीकेवळीगुणस्थानक. १४ अयोगीकेवळीगुणस्थानक.

शिक्षापाठ १०४ विविध प्रश्नो भाग ३.

प्र.—केवली अने तीर्थंकर ए बन्नेमां फेर शो ?

उ.—केवली अने तीर्थंकर शक्तिमां समान छे; परंतु तीर्थंकरे पूर्वे तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्युं छे, तेथी विशेषमां बार गुण अने अनेक अतिशय प्राप्त करे छे.

प्र.—तीर्थंकर पर्यटन करीने शा माटे उपदेश आपे छे ? ए तो निरागी छे ?

उ.—तीर्थंकरनामकर्म जे पूर्वे बांध्युं छे ते वेदवा माटे तेओने अवश्य तेम करवुं पडे छे.

प्र.—हमणां प्रवर्त्ते छे ते शासन कोनुं छे ?

उ.—श्रमण भगवन् महावीरनुं.

प्र.—महावीर पहेलां जैनदर्शन हतुं ?

उ.—हा.

प्र.—ते कोणे उत्पन्न कर्युं हतुं ?

उ.—ते पहेलाना तीर्थंकरोए.

प्र.—तेओना अने महावीरना उपदेशमां कंइ भिन्नता खरी के ?

उ.—तत्त्वस्वरुपे एकज छे. भिन्न भिन्न पात्रने लइने उपदेश होवाथी अने कंइक काळभेद होवाथी सामान्य मनुष्यने भिन्नता लागे खरी; परंतु न्यायथी जोतां ए भिन्नता नथी.

प्र.—एओनो मुख्य उपदेश शुं छे ?

उ.—आत्माने तारो; आत्मानी अनंतशक्तियोनो प्रकाश करो. एने कर्मरुप अनंत दुःखथी मुक्त करो ए.

प्र.—ए माटे तेओए कयां साधनो दर्शाव्यां छे ?

उ.-व्यवहारनयथी सद्देव, सद्धर्म, अने सद्गुरुनुं स्वरुप जाणवुं; सद्देवना गुणग्राम करवा; त्रिविध धर्म आचरवो अने निर्ग्रंथ गुरुथी धर्मनी गम्यता पामवी ते.

प्र-त्रिविध धर्म कयो ?

उ-सम्यग्ज्ञानरुप, सम्यग्दर्शनरुप अने सम्यक्चारित्ररुप.

शिक्षापाठ १०५ विविध प्रश्नो भाग ४.

प्र.-आवुं जैनदर्शन ज्यारे सर्वोत्तम छे, त्यारे सर्व आत्माओ एना बोधने केम मानता नथी?

उ.-कर्मनी बाहुल्यताथी, मिथ्यात्वना जामेला दळियांथी, अने सत्समागमना अभावथी.

प्र.-जैनना मुनियोना मुख्य आचाररुप शुं छे?

उ.-पांच महाव्रत, दशविधि यतिधर्म, सप्तादशविधिसंयम, दशविधि वैयावृत्य, नवविधि ब्रह्मचर्य, द्वादश प्रकारना तप, क्रोधादिक चार प्रकार कषायनो निग्रह. विशेषमां सम्यक्ज्ञान, सम्यक्दर्शन, सम्यक्चारित्रनुं आराधन इत्यादिक अनेक भेद छे.

प्र.-जैनमुनियोना जेवांज संन्यासियोनां पंचयाम छे, अने बौद्धधर्मनां पांच महाशील छे. एटले ए आचारमां तो जैनमुनियो अने संन्यासियो तेमज बौद्धमुनियो सरखा खरा के ?

उ.-नहीं.

प्र.-केम नहीं ?

उ.-एओनां पंचयाम अने पंचमहाशील अपूर्ण छे. महाव्रतना प्रतिभेद जैनमां अति सूक्ष्म छे. पेला बेना स्थूळ छे.

प्र.—सूक्ष्मताने माटे द्रष्टांत आपो जोइए?

उ.—द्रष्टांत देखीतुंज छे. पंचयामियो कंदमूळादिक अभक्ष्य खाय छे, सुखशय्यामां पोढे छे, विविध जातनां वाहनो अने पुष्पनो उपभोग ले छे, केवळ शीतळ जळथी तेओनो व्यवहार छे. रात्रिये भोजन ले छे. एमां थतो असंख्याता जंतुनो विनाश, ब्रह्मचर्यनो भंग ए आदिनी सूक्ष्मता तेओना जाणवामां नथी. तेमज मांसादिक अभक्ष्य अने सुखशीलियां साधनोथी बौद्धमुनियो युक्त छे. जैन मुनियो तो केवळ एथी विरक्तज छे.

शिक्षापाठ १०६ विविध प्रश्नो भाग ५.

प्र.—वेद अने जैन दर्शनने प्रतिपक्षता खरी के?

उ.—जैनने कंइ असमंजस भावे प्रतिपक्षता नथी; परंतु सत्यथी असत्य प्रतिपक्षी गणाय छे, तेम जैनदर्शनथी वेदनो संबंध छे.

प्र.—ए बेमां सत्यरुप तमे कोने कहोछो?

उ.—पवित्र जैनदर्शनने.

प्र—वेददर्शनियो वेदने कहे छे तेनुं केम?

उ.—एतो मतभेद अने जैनना तिरस्कार माटे छे; परंतु न्यायपूर्वक बन्नेनां मूळतत्त्वो आप जोइ जजो.

प्र—आटलुं तो मने लागे छे के महावीरादिक जिनेश्वरनुं कथन न्यायना कांटापर छे; परंतु जगत्कर्त्तानी तेओ ना कहे छे, अने जगत् अनादि अनंत छे एम कहे छे. ते विषे कंइ कंइ शंका थाय छे के आ असंख्यात द्वीपसमुद्रयुक्त जगत् वगर बनाव्ये क्यांथी होय?

उ.–आपने ज्यांसुधी आत्मानी अनंत शक्तिनी लेश पण दिव्य प्रसादी मळी नथी त्यांसुधी एम लागे छे; परंतु तत्त्वज्ञाने एम नहीं लागे. "सम्मतितर्क" आदिग्रंथनो आप अनुभव करशो एटले ए शंका नीकळी जशे.

प्र.–परंतु समर्थ विद्वानो पोतानी मृषा वातने पण द्रष्टांतादिकथी सिद्धांतिक करी दे छे; एथी ए त्रुटी शके नहीं, पण सत्य केम कहेवाय ?

उ.–पण आने कंइ मृषा कथवानुं प्रयोजन नहोतुं, अने पळभर एम मानीये, के एम आपणने शंका थइ के ए कथन मृषा हशे ? तो पछी जगत्कर्त्ताए एवा पुरुषने जन्म पण केम आप्यो ? नाम ‍ळक पुत्रने जन्म आपवा शुं प्रयोजन हतुं ? तेम वळी ए पुरुषो तो सर्वज्ञ हता; जगत्कर्त्ता सिद्ध होत तो एम कहेवाथी तेओने कंइ हानि नहोती.

शिक्षापाठ १०७ जिनेश्वरनी वाणी.

मनहर छंद.

अनंत अनंत भाव भेदथी भरेली भली,
अनंत अनंत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,
सकळ जगत हितकारिणी हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे;
उपमा आप्यानी जेने, तमा राखवी ते व्यर्थ,
आपवाथी निज मति मपाइ में मानी छे,
अहो! राज्यचंद्र बाल, ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी, जाणी तेणे जाणी छे. १

शिक्षापाठ १०८ पूर्णमालिका मंगल.

उपजाति.

तप्योपध्याने रविरुप थाय,
ए साधिने सोम रही सुहाय;
महान ते मंगळ पंक्ति पामे;
आवे पछी ते बुधना प्रणामे. १

निर्ग्रंथ ज्ञाता गुरु सिद्ध दाता,
कां तो स्वयं शुक्र प्रपूर्ण ख्याता;
त्रियोग त्यां केवळ मंद पामे;
स्वरुप सिद्धे विचरी विरामे. २



॥ इति श्रीमद् राज्यचंद्र प्रणीत ॥

मोक्षमाळा पुस्तक बीजुं. ॥

बाळावबोध शिक्षापाठ

समाप्त.